अन्तराशब्दशक्ति

अक्टूबर 2018

मासिक वेब पत्रिका

www.antrashabdshakti.com

रचनाकारों के लिए सुनहरा अवसर

आदरणीय भाषासारथी,
सादर प्रणाम,
क्या आप मौलिक रुप से हिन्दी में कुछ लेखन करते हैं ? यदि करते हैं तो स्वागत है आपके शब्द शिल्प का।
आइए, हिन्दी भाषा के प्रचार हेतु कार्यरत बेहद क्रियाशील संस्था मातृभाषा उन्नयन संस्थान व हिन्दीग्राम का अंग लोकप्रिय अन्तरताना (वेब पोर्टल) मातृभाषा डॉट कॉम से शीघ्रता से जुड़िए 'मातृभाषा' साहित्य के संप्रेषण के लिए उपलब्ध अनूठा मंच है। साहित्य के इस ऑनलाइन मंच में सभी नवोदित व स्थापित लेखकों का स्वागत है। यदि आप कहानी,लेख,लघुकथा,उपन्यास,नाटक, संस्मरण, निबन्ध, व्यंग्य, डायरी, कविता, आत्मकथा, आलोचना, गजल, समालोचना, मुक्तक, नज्म, गीत या अन्य किसी भी विधा का सिर्फ हिन्दी भाषा में मौलिक लेखन करते हैं तो पोर्टल पर प्रकाशन हेतु हमें उपलब्ध करा सकते हैं। हमारा प्रयास एक मंच पर हिन्दी भाषा के श्रेष्ठ लेखन को जनमानस के लिए उपलब्ध कराना है। हिन्दी साहित्य का प्रचार-प्रसार और एक स्थान पर सभी महत्वपूर्ण विषयों पर सामग्री संकलन हमारा मूल उद्देश्य है, आपकी सहमति मिलने पर इस वैचारिक महाकुंभ में आपके मौलिक लेखन को प्रकाशित कर हम गौरवान्वित महसूस करेंगे 'मातृभाषा' में संकलन के लिए आपकी मौलिक हिन्दी रचनाएँ आमंत्रित हैं।
आपका नवीन लेखन इस अणुडाक (ईमेल) matrubhashaa@gmail.com पर भेजने का कष्ट करें।

साथ ही प्रत्येक सप्ताह के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार (आलेख व कविता दोनों विधा में)को प्रति सप्ताह नगद राशि या भेंट से सम्मानित भी किया जाएगा। सप्ताह के श्रेष्ठ रचनाकार का चयन, समिति द्वारा रचना की गुणवत्ता, वर्तनी दोष रहित, ज्यादा से ज्यादा लोगों द्वारा देखी गई होने पर, पटल पर दृश्य संख्या अधिक होने के तथा रचना मातृभाषा.कॉम के अतिरिक्त कहीं और न छपी होगी इन मापदण्डों के आधार पर प्रति सप्ताह किया जाएगा।

जानकारी केवल निम्न बिन्दुओं में ही प्रेषित करें

साहित्यकार के परिचय का प्रारुप

नाम-	प्रकाशन-
साहित्यिक उपनाम-	सम्मान-
जन्मतिथि	ब्लॉग-
वर्तमान पता (शहर, जिला, राज्य)	अन्य उपलब्धियाँ-
शिक्षा-	लेखन का उद्देश्य-
कार्यक्षेत्र-	एक मौलिक रचना
विधा -	ईमेल-
मोबाइल/व्हाट्स ऐप -	छाया चित्र-

प्रथम बार परिचय आवश्यक है, अन्य बार बिना परिचय के केवल रचना मय शीर्षक अणुडाक (मेल) पर प्रेषित करें।

मातृभाषा.कॉम से जुड़े प्रत्येक रचनाकार को मिलेगा भाषा सारथी सम्मान,क्योंकि यदि आप हिन्दीभाषा में सृजन कर रहे है, तो आप निश्चित तौर पर भाषा के गौरव की अभिवृद्धि कर रहे है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क सूत्र

९६६९८९६६९३ ९४२४७६५२५९ ७०६७४५५४५५

www.matrubhashaa.com

मातृभाषा.कॉम

मातृभाषा उन्नयन संस्थान
www.matrubhasha.org

हिन्दीग्राम
www.hindigram.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

साहित्यकार कोश
www.sahityakarkosh.com

प्रधान संपादक
डॉ.प्रीति सुराना *

तकनीकी सज़्पादक
डॉ.अर्पण जैन 'अविचल'

सज़्पादकीय सलाहकार
श्री समकित सुराना
श्री बृजेश शर्मा 'विफल'
श्री कैलाश बिहारी सिंघल
श्री संजय कोचर
सुश्री कीर्ति वर्मा
सुश्री पिंकी परुथी 'अनामिका'
सुश्री अदिति रूसिया

ग्राफिज़्स
मृदुल जोशी
सुश्री मीना कौशल

राजकीय प्रतिनिधी
सुश्री नसरीन अली 'निधी'-
जज़्मू एवं कश्मीर
रिखभचंद रांका- राजस्थान

***-पीआरबी एज़्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी हैं।**

सभी पाठकों, इष्ट मित्रों, बंधुओं को नवरात्रि एवं दशहरा पर्व की

हार्दिक शुभकामनाएँ

अन्तराशब्दशक्ति
मासिक वेब पत्रिका

वर्ष-2 अंक-04 मूल्य-25 रुपए

अक्टूबर-2018

क्रं.	विषय	पृष्ठ क्रमांक
1.	संपादकीय	4
2.	हिन्दी की मुख्य धारा....	5
3.	शक्ति की पूजा, फिर....	7
4.	श्नैश्चरी अमावस्या में दान....	8
5.	धार्मिक शांति कैसे कायम हो....	9
6.	आडार तंत्र...	10
7.	पैरों को दे स्टाइलिश आराम...	11
8.	स्वास्थ्य का रखें ख्याल...	13
9.	लड़कियां अभिशाप नहीं वरदान....	14
10.	डिक्लिरटिंग...	16
11.	पुरुषों के रोग और योग	17
12.	यज्ञ पिता गायत्री माता	18
13.	भाषा के नाम पर लड़ाई	28
14.	ग्यारसी बाई ने...कहानी	19
15.	बदलता मौसम....	22
16.	आंखों के गिर्द काले धब्बे...	23
17.	कामकाजी महिलाओं की चुनौती	24
18.	महिलाओँ की बराबरी सिर्प.....	27

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. प्रीति सुराना द्वारा एस-207, नवीन परिसर, इंदौर प्रेस ज़्लब, एम. जी. रोड इंदौर से प्रकाशित एवं ग्लोबल ग्राफिज़्स ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित। मो.-9009465259

किसी भी कानूनी विवाद का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा। शुल्क- 25 रु.

www.antrashabdshakti.com

संपादकीय

'अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनकर उभरा अन्तरा-शब्दशक्ति'

डॉ. प्रीति सुराना
प्रधान संपादक

लिखते रहे हिसाब पल-पल हासिल के,
शब्दों, कागजों और स्याही से मिल के,
अन्तरा-शब्दशक्ति ने नई राहें जो खोली,
अनुभूतियाँ अभिव्यक्त होने लगी अब दिल से,...।

लगभग ढाई वर्ष पहले अपनी ही तरह कई महिलाओं और पुरुषों से अनुभव साझा करते हुए महसूस हुआ कि बहुत से लोग ऐसे हैं जिन्हें अवसर ही नहीं मिला कि वे उनके भीतर पोषीत शब्दों की शक्ति का उपयोग कर अभिव्यक्ति के माध्यम से खुद को एक पहचान दे सके, क्योंकि खुद भुक्तभोगी थी इसलिए पीड़ा समझ सकती थी।

पहला प्रयास किया 2 फरवरी 2016 को 13 महिलाओं के एक व्हाट्सअप समूह सृजन फुलवारी से जिसने केवल 15 ही दिनों में एक बड़े समूह का रूप लिया और शब्दशक्ति बन गया। समय चलता रहा और अपने स्वभावानुसार परिस्थितियां भी बदलता गया, प्रथम आयोजन हिन्दी पखवाड़े में 25 सितंबर 2016 को भोपाल में शब्दशक्ति सम्मेलन के रूप में 111 शब्दशक्तियों ने हिस्सा लिया।

फिर शुरू हुआ एक नया अध्याय जिसमें सप्ताह के 7 दिनों में विषय या शब्द के माध्यम से न केवल कविताएं बल्कि लघुकथाएँ, कहानियाँ, संस्मरण और आलेख भी लिखवाए गए और लगातार 75 हफ़्तों तक परिचय और सृजक- सृजन- समीक्षा का संचालन किया गया। फेसबुक पर जुड़ते-जुड़ते अब तक 20 हजार से ज्यादा सदस्य हो चुके हैं और साथ ही फेसबुक पेज को 2100 से अधिक सदस्यों ने पसन्द किया है।

1 जुलाई 2017 से अन्तरा-शब्दशक्ति ने वेब की दुनिया मे मासिक वेब पत्रिका के माध्यम से कदम रखा जो अब तक जारी है।

मातृभाषा उन्नयन संस्थान के उद्देश्य को आत्मसात करते हुए हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरव दिलवाने के लिए संकल्पित होकर सतत आगे बढ़ते हुए 3 फरवरी 2018 में द्वितीय वार्षिकोत्सव में सप्ताह के 6 दिनों की गतिविधियों के हासिल 7 साझा संकलनों के रूप में प्रकाशित हुए और वृहद स्तर पर अन्तरा-शब्दशक्ति का पारिवारिक उत्सव इंदौर में मनाया गया। कुछ अटपटे अनुभवों ने जन्म दिया अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन के स्वपन को जिसे साकार रूप दिया 24 मार्च 2018 को।

शुरुआत की वूमन आवाज़ के साझा प्रयास में 58 महिलाओं को बिना किसी शुल्क लिए साझा संग्रह के तौर पर प्रकाशित करके। और उसके बाद 46 सृजक-सृजन-समीक्षा पुस्तिकाओं व ई-पुस्तकों के रूप में प्रकाशित और 27 मई 2018 को उसका विमोचन भोपाल में करके। उसके बाद सिलसिला चलता रहा और सृजन समीक्षा की 16 पेज की लघु पुस्तिकाओं के बाद 6 माह की अवधि में आईएसबीएन सहित 66 पुस्तिकाओं का प्रकाशन और विमोचन वूमन आवाज़ के साझा प्रयास से 4 अगस्त 2018 को किया। हिन्दी पखवाड़े में 29 सितंबर 2018 को भोपाल के कार्यक्रम में मातृभाषा उन्नयन संस्थान के सौजन्य से 8 पुस्तिकाओं सहित कुल 12 पुस्तकों का विमोचन समारोह आयोजित किया गया, इसके अलावा भी कई आयोजन इंदौर, बालाघाट, वारासिवनी में आयोजित किये जाते रहे। और अब तक 150 से अधिक पुस्तकों का विमोचन हो चुका है।

आगामी वार्षिक आयोजन भी जनवरी 2019 में दिल्ली में लगभग 80 किताबों के विमोचन के साथ मनाया जाना लगभग तय है।

शब्द से शक्ति बनते-बनते इतनी कम अवधि में अन्तरा- शब्दशक्ति ने एक विशाल परिवार का रूप लेकर व्हाट्सअप, फेसबुक समूह और पेज से निकल प्रिंट मीडिया, वेबसाइट, प्रकाशन तक अपने पर पसारे।

बहुत खुशी होती है जब कोई रचनाकार अपने अनुभव में ये कहता है कि अन्तरा शब्दशक्ति ने उसे पहचान दी है।

अनुशासित समूह की सबसे बड़ी उपलब्धि ये है कि 150 से अधिक रचनाकारों के समूह में कई रचनाकारों ने शब्दों और विधाओं पर लिखते-लिखते एक साल में 150 से अधिक कविताएँ, लगभग 50 लघुकथाएँ या कहानियाँ, 50 आलेख या संस्मरणों का लक्ष्य तक पूरा किया है।

अनुभूतियों की अभिव्यक्ति को पहचान बनाने में सहायक और उत्प्रेरक बन रहे अन्तरा-शब्दशक्ति परिवार को संबल दे कर नई दिशा दी मातृभाषा उन्नयन संस्थान, हिन्दी ग्राम ने जिसके लिए संस्थापक व राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अर्पण जैन 'अविचल' का हार्दिक आभार। ङहिन्दी साहित्य से जुड़े सभी हिन्दी सेवियों का सदैव अन्तरा- शब्दशक्ति परिवार में स्वागत है।

आइये इस नवरात्रि मिलकर अभिव्यक्ति की इस शक्ति को गतिशील बनाएं हम और आप,...।

हिन्दी की मुख्यधारा से दूर हो रहा आदिवासी विमर्श

डॉ.अर्पण जैन
'अविचल'

सदा सनातन से ही सांस्कृतिक तारतम्यता और विविधता के कारण भारत की संस्कृति की पहचान वैश्विक पटल पर स्थापित है, इसी तारतम्यता में कथा, कहानी, कविता, लोकोक्ति, गान, भजन, या अन्य साधनों द्वारा सांस्कृतिक तत्वों और परम्परा का संचार किया जाता रहा है। इन्हीं परम्पराओं में भारत की वाचिक परंपरा के हस्ताक्षर के रूप में शामिल रहा आदिवासी विमर्श आज हिन्दी के साहित्य जगत से न जाने कहाँ गुम-सा होता जा रहा है। साथ ही हिन्दी की मुख्यधारा में भी आदिवासी समाज का प्रतिनिधित्व कम होता जा रहा है।

हमारे समाज की जागरूकता और नवसृजन का मुख्य कारण हमारे राष्ट्र का समृद्ध साहित्यकोश रहा है। इन्ही समृद्ध साहित्य में बीसवीं सदी के अंत में भारत में जिन सामाजिक आन्दोलनों का सूत्रपात हुआ जैसे दलितों, स्त्रियों, आदिवासियों व जनजातीय समुदायों ने नई एकजुटता के माध्यम से अपने प्रति शोषण का विरोध किया और संपूर्ण समुदाय की मुक्ति हेतु सामूहिक अभियान चलाया यही सब शामिल भी हुए और वंचितों के शोषण के खिलाफ खड़ी हुई मुहिम में सामाजिक-राजनीतिक आंदोलन के अलावा साहित्यिक आंदोलन ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है। नारीवादी साहित्य, मनुवादी साहित्य और दलित साहित्य उसी का प्रतिफल है। परिणामस्वरुप आदिवासी चेतना से भरपूर आदिवासी साहित्य भी साहित्य और आलोचना की दुनिया में अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुका है।

आदिवासी समाज के विस्तार और उनकी परम्पराओं में भारत की वनांचल संस्कृति का रहस्य छुपा हुआ है, उन्ही लोक कलाओं, लोकोक्तियों, लोक गायन ऑन संगीत के साथ आदिवासी समाज की अपनी बोलियों में भारत को जानने और समझने की भरपूर सामग्री समाहित है। वर्तमान में आदिवासी साहित्य हिन्दी के अतिरिक्त 50 से अधिक भाषाओँ में लिखा भी जा रहा है और शोध के विषय के केंद्र में है। दशकों के संघर्ष और दमन के पश्चात् आज आदिवासी साहित्य को जागरूकता और समन्वय की केन्द्रीय परिधि में लाया जा रहा है। आदिवासी समाज व साहित्य पर निरन्तर चर्चाएं भी हो रही है। किंतु आदिवासी समाज की तरह आदिवासी साहित्य का संघर्ष आज भी जारी है। आज भी आदिवासी साहित्य अनेक समस्याओं एवं चुनौतियों से जूझ रहा है। इसका प्रमुख कारण आदिवासी समाज से जीवन से बाहरी समाज का अपरिचय और उपेक्षापूर्ण रवैया है। आदिवासी समाज से संवाद करने का आदिवासी साहित्य महत्वपूर्ण जरिया हो सकता है, बशर्ते उसका सही मूल्यांकन किया जाएं, इस हेतु इसके बुनियादी तत्वों की समझ होना अपरिहार्य है। आदिवासी साहित्य की उचित धारणाएँ एवं मापदण्ड होने आवश्यक है।

आज साहित्य की मुख्यधारा से जिस तरह आदिवासी साहित्य दूर हो रहा है वैसे ही हिन्दी के उत्थान में उनकी भूमिकाएँ भी नजर नहीं आ रही है। जबकि आदिवासी बोलियों का आधार भी हिन्दी भाषा में समाहित है। भारत में हिन्दी विमर्श का एक अध्याय बिना आदिवासी संस्कृति और परिवेश के जुड़े रहे पूरा हो पाना संभव ही नहीं है।

मुख्यधारा से पहले जन्मी साहित्य सहित कला संरक्षिका संस्कृति सदा से ही मौलिक रही है। जंगलों में खदेड़ दिए जाने के बाद भी आदिवासी समाज ने इस परंपरा को अनवरत जारी रखा। ठेठ जनभाषा में होने और सत्ता प्रतिष्ठानों से दूरी की वजह से यह आदिवासी साहित्य भी आदिवासी समाज की ही तरह ही उपेक्षा का शिकार होता चला गया। आज भी सैकड़ों देशज भाषाओं में आदिवासी साहित्य रचा जा रहा है, जिसमें से अधिकांश से हमारा संवाद शेष है।

जल, जंगल, जमीन की मांग करने वाले वनवासी समाज ने हिन्दी की मुख्यधारा से अपने आपको केवल इसलिए भी दूर मानना शुरू किया क्योंकि समाज में ये भ्रम व्याप्त रहा कि हिन्दी भाषा के प्रभाव से आदिवासी बोलियों का अस्तित्व खतरे में आ सकता है। किन्तु हिन्दी की मुख्यधारा के उत्थान और इसके जनभाषा बनने में आदिवासी सहित अन्य बोलियों का ही महत्वपूर्ण योगदान है।

दो दशक पूर्व भारत की केंद्रीय सरकार द्वारा शुरू की गई आर्थिक उदारीकरण की नीति ने बाजारवाद का रास्ता तो खोला, मुक्त व्यापार और मुक्त बाजार के नाम पर मुनाफे और लूट का खेल आदिवासियों के जल, जंगल और जमीन से भी आगे जाकर उनके जीवन को दांव पर लगाकर खेला जा रहा है। आंकड़े गवाह हैं कि पिछले एक दशक में अकेले मध्यप्रदेश राज्य से 5 लाख से अधिक आदिवासी विस्थापित हो चुके हैं। इनमें से अधिकांश लोग इंदौर जैसे नगरों और गुजरात में अहमदाबाद, वड़ोदरा, सूरत में घरेलू नौकर या दिहाड़ी पर काम करते हैं। आदिवासियों के विस्थापन की स्थिति को खंगाला जाए तो विकास के नाम पर अपने पैतृक क्षेत्रों से बेदखल किए गए ये लोग अपनी वाचिक परम्पराओं और लोक संस्कृति का समूचा इतिहास भी विस्थापित करते जा रहे है और अपनी मौलिकता का भी लगे हाथ तर्पण करने लगे है। यह दुखद है कि जब संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 1993 को 'देशज लोगों का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष' के रूप में मनाने का फैसला किया तो भारत सरकार की प्रतिक्रिया थी-'संयुक्त राष्ट्र द्वारा परिभाषित इंडिजिनस लोग भारतीय आदिवासी या अनुसूचित जनजातियां नहीं है, बल्कि भारत के सभी लोग देशज लोग हैं और न यहां के आदिवासी या अनुसूचित जनजाति किसी प्रकार के सामाजिक, राजनीतिक या आर्थिक पक्षपात के शिकार हो रहे हैं। दरअसल पूरा मसला आदिवासियों को आत्मनिर्णय का अधिकार देने का था, जिसकी मांग आदिवासी साहित्य में भी देखी जा सकती है। अपने जल-जंगल-जमीन से बेदखल महानगरों में शोषित-उपेक्षित आदिवासी किस आधार पर इसे अपना देश कहें ? बाजार और सत्ता के गठजोड़ ने आदिवासियों के सामने अस्तित्व की चुनौती खड़ी

कर दी है। जो लोग आदिवासी इलाकों में बच गए, वे सरकार और उग्र राजनीती की दोहरी हिंसा में फंसे हैं। अन्यत्र बसे आदिवासियों की स्थिति बिना जड़ के पेड़ जैसी हो गई है। नदियों, पहाड़ों, जंगलों, आदिवासी पड़ोस के बिना उनकी भाषा और संस्कृति तथा उससे निर्मित होने वाली पहचान ही कहीं खोती जा रही है। आदिवासी अस्मिता और अस्तित्व का इतना गहरा संकट इससे पहले नहीं पैदा हुआ। जब सवाल अस्तित्व का हो तो उसका प्रतिरोध भी स्वाभाविक है। सामाजिक व राजनीतिक प्रतिरोध के अलावा कला और साहित्य द्वारा भी इसका प्रतिरोध किया गया और उसी से समकालीन आदिवासी साहित्य अस्तित्व में आया। परन्तु वर्तमान में जब साहित्य से आदिवासी विचार और विमर्श गौण होने लगा तो यक़ीनन हिन्दी से भी आदिवासी समाज की दूरी नजर आने लगी। जबकि आदिवासी समाज और आदिवासी बोलियों का स्वादिष्ट तत्व हिन्दी भाषा में शामिल है।

आदिवासी दर्शन का भी गौण होना चिंता जनक है। आदिवासी साहित्य को समझने के लिए आदिवासियों की वाचिक परंपरा को समझना होगा, जो अत्यधिक समृद्ध है। यूँ तो स्वयं आदिवासी जीवन और समाज किसी प्रकार के शास्त्र या सिद्धांतों का बंधन नहीं मानता, परंतु आदिवासी साहित्य के बारें में भ्रमित तथ्यों एवं प्रतिमानों के समाधान हेतु कुछ बुनियादी तत्वों पर चर्चा करना भी जरूरी है। आदिवासी साहित्य के पाठ और समझ को नए सिरे से देखने एवं समझाने के लिए इसकी अंतर्वस्तु एवं स्वरूप की समझ होनी आवश्यक है।

आदिवासी बोली से ही हिन्दी ने लोकोक्ति को धारण किया है। हिन्दी साहित्य के उत्थान में आदिवासी संस्कृति और बोलियों के साथ-साथ आदिवासी समुदाय का भी महत्व है। हिन्दी के कई महनीय कवियों ने अपनी कविता के माध्यम से वनवासियों की पीढ़ा को गाया है, उनके दर्द को शहरी साहित्य में भी स्थान दिया है। हिन्दी के जनभाषा और राष्ट्रभाषा बनने के पीछे आदिवासी विमर्श का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है। सरकारों को आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में शिक्षा के सुधार और अनिवार्य शिक्षा में हिन्दी को शामिल करने की दिशा में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। साथ ही हिन्दी का तेज उसकी बोलियाँ है इस बात का विशेष ख्याल रखते हुए बोलियों को हिन्दी से अलग न करते हुए बोलियों के संरक्षण हेतु भी आवश्यक कदम उठाने चाहिए। आदिवासी विमर्श से हिन्दी युग की स्थापना का एक रास्ता दिखाई देता है, जिसे हिन्दी के प्रचारकों और चिंतकों को भी नवाचार से अवगत करवाएगा तो हिन्दी के साहित्यकारों को भी लेखन की नई दिशा देगा।

सीख देते बापू

स्वयं पर प्रयोग

कई बार ऐसा भी होता है कि हम खुद तो गलतियां करते रहते हैं और दूसरों को उपदेश देते रहते हैं कि ऐसा न करो, वैसा न करो। लेकिन गांधीजी, जो कुछ भी दूसरों को करने के लिए कहते थे, पहले वह काम स्वयं करते थे। गांधीजी दूसरी बार दक्षिण अफ्रीका प्रवास पर थे। उस समय डरबन में प्लेग फैलने का डर था। इससे बचने के लिए घरों की साफ-सफाई करना बहुत जरूरी हो गया था। उस समय अफ्रीका में माना जाता था कि भारतीय लोग सफाई पसंद नहीं होते हैं। गांधीजी ने इसे गलत साबित करने के लिए भारतीय लोगों को अपना घर तथा गुसलखाने को साफ रखने की सलाह दी। गांधीजी ने केवल दूसरों को ही यह उपदेश नहीं दिया, बल्कि खुद भी घर-घर जाकर सफाई करने लगे।

पुस्तक का प्रभाव

एक बार दक्षिण अफ्रीका में क्रिटिक पत्रिका के संपादक मि. पोलक ने गांधीजी को रस्किन की पुस्तक अंटु-दिस-लास्ट पढ़ने को दी। गांधीजी बताते हैं कि इस पुस्तक ने उनके जीवन में रचनात्मक परिवर्तन किए। वास्तव में इस पुस्तक का सार था सबकी भलाई में ही हमारी भलाई छिपी है। हम सभी जानते हैं कि उन्होंने देश-सेवा में ही अपनी भलाई ढूंढी। यदि आपको भी समय मिलता है तो अच्छे लेखकों की पुस्तकें जरूर पढ़ें। इससे न केवल आपका ज्ञान बढ़ेगा, बल्कि आप भी अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन देख सकेंगे।

अहिंसात्मक मुकाबला

बच्चों, आपने बिहार के चम्पारन जिले में अंग्रेजों के खिलाफ किसानों के विरोध के बारे में पढ़ा होगा। दरअसल, किसान भूमि बंजर हो जाने के डर से नील की खेती नहीं करना चाहते थे। इसलिए गांधीजी चम्पारन गए और उन्होंने अपना विरोध भी विनयपूर्वक जताया। अंत में गांधीजी किसानों की मांग मनवाने में सफल साबित हुए। यदि आपको भी किसी खास दोस्त या अन्य किसी व्यक्ति की कुछ बातें अच्छी नहीं लगती हैं, तो आप उनसे लड़ाई करने के बजाय, उनके सामने तर्कपूर्ण ढंग से अपनी बात रखें।

नाटक का प्रभाव

बच्चों, कई बार ऐसा भी होता है कि हम कोई फिल्म या सीरियल देखते हैं तो उसमें कही गई अच्छी बातों या संदेश का हमारे जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। ठीक ऐसा ही कुछ गांधीजी के साथ भी हुआ था। उन दिनों गांधीजी हाईस्कूल में पढ़ते थे। एक बार उन्हें पितृभक्त श्रवण तथा राजा हरिश्चंद्र नाटक देखने का मौका मिला। कहते हैं कि इन दोनों नाटकों का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। गांधीजी ने इन नाटकों को देखकर ही तत्काल मानव सेवा में अपना जीवन अर्पित करने तथा झूठ न बोलने का संकल्प ले लिया। बच्चों, यदि आप भी उनकी तरह महान बनना चाहते हैं तो अपने मम्मी-पापा का खूब आदर करें और उनकी हर बात मानें। साथ ही, अपनी गलतियां छुपाने के लिए झूठ न बोलने की प्रतिज्ञा आज से ही ले लें।

'हिन्दी का मान'

प्रीति सुराना

पाठशाला के पुस्तकालय की मेज पर दो किताबें आजूबाजू रखी रखी बोर हो रही थी।

एक थी हिन्दी वर्णमाला, दूसरी थी अंग्रेजी वर्णमाला।

हिन्दी की किताब से चुप रहा नहीं गया तो उसने अंग्रेजी की किताब से बातचीत का सिलसिला शुरू किया।

नमस्ते मित्र कैसी हो?

अंग्रेजी वर्णमाला की किताब ने इतराते हुए जवाब दिया 'फाइन, थैंक्स' यू??

हिन्दी अचंभित थी समझ तो आ रहा था कि अंग्रेजी क्या कहा पर 4 शब्दों में सवाल जवाब और आभार तीनों ?

हिन्दी की किताब ने खुद को कमतर आंकते हुए धीरे से कहा। मैं ठीक हूँ बस अपनी बारी का इंतज़ार कर रही हूँ कि कब कोई शिक्षक आए और किसी कक्षा में मुझे पढ़ाए। उकता रही थी तो सोचा तुमसे बात कर लूँ।

सच तुम कितनी पतली हो।

कम शब्दों में सबकुछ समेटे हुए हो ।

5 स्वर और 21 व्यंजन में तुम्हारी पूरी दुनिया है और सौभाग्यशाली हो कि पूरी दुनिया पर राज करती हो। कैसे कर लेती हो इतना?

अब अंग्रेजी की किताब थोड़ी सहज हुई और इतराना छोड़कर अबकी बार हिन्दी में बोली बहन तुम खुद को कम मत समझो सच तो ये है तुम संस्कृत और संस्कृति की बेटी हो। तुम में तो भाव, अर्थ, विन्यास और विकास के साथ साथ हर बोली और भाषा को खुद में समाहित करने की क्षमता है। दरअसल मेरे एक भी अक्षर तुम्हारे सहयोग की बिना उच्चारित भी नहीं हो सकते। ए से लेकर जेड तक सभी अक्षरों को बोल कर देखो, तुम्हें समझ आ जाएगा कि तुम्हारा अंश मात्र हूँ मैं।

मैं छोटी हूँ, व्याकरण सीमित है और कई जगह मेरे एक ही शब्द में काम चल जाता है, इसलिए मनुष्य ने अपनी सहूलियत के लिए मुझे इस्तेमाल किया और राजनीति ने हथियार बना लिया जिससे मेरा विस्तार रुक गया बस प्रचार ही हुआ। जबकि तुम्हारे एक एक शब्द के कितने ही पर्यायवाची है, तुम रोचक हो।

सब से बड़ी बात तुमने अनेक बोलियों और भाषाओं को जन्म दिया, अनेक बोलियों और भाषाओं को खुद में समाहित किया। तभी तो सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति भारत माता की तरह ही तुम्हारा भी सम्मान करती है। अंग्रेजी तो केवल काम करने की सहूलियत के लिए इस्तेमाल होती है।

बहन हम दोनों ही भाषाएँ हैं पर तुम वृहद और सहृदय हो तुममें सागर सी विशालता है। मैं मात्र नदी हूँ मेरा उद्गम और संगम भी मुझे ठीक से मालूम नहीं। मेरा मौलिक निवास भी निश्चित नहीं। यूँ तो अंतरराष्ट्रीय कहलाती हूँ पर मेरा कोई नियत आवास नहीं। मैं केवल व्यापार के लिए उपयोगी बनकर रखगे जबकि तुम अपने व्यवहार के लिए सम्माननीय हो। केवल व्यापार और व्यवहार नहीं अपितु विश्वगुरु बनने की हर योग्यता तुममे है और सबसे बड़ी बात जिस संस्कृति ने तुम्हें रचा वहाँ की मिट्टी में रची बसी हो तुमपर हर भारतीय अभिमान करता है।

कभी कभी तो ईर्ष्या होती है तुमसे की तुम भाषा होकर भी माँ हो और मैं सिर्फ और सिर्फ भाषा।

हिन्दी की किताब अपने आँसू नहीं रोक पा रही थी। अंग्रेजी की किताब के प्रति प्रेम और सम्मान दोनो ही बढ़ गए।

दूसरी तरफ ये भी विचार कौंधा की मुझ पर अभिमान कर रहा मेरा ही भारत मुझे राष्ट्रभाषा न बना सका और मेरी बहन अंग्रेजी भाषा मुझे इतना सम्मान दे रही।

तभी पुस्तकालय में शिक्षकों का प्रवेश हुआ।

एक ने कहा 'अंग्रेजी की किताब रहने दो , वो मि. वर्मा ही पढ़ाएँ। मुझे तो हिन्दी पढ़ाने में ही मजा आता है, किसी भी कक्षा में बिना किताब के भी सहजता से पढ़ा सकता हूँ क्योंकि वो मेरी मातृभाषा है।

दूसरे ने कहा सही कहते हो भाई अपनी भाषा में सब सहज है और इस उम्र में किताब से सीखकर पढना पढ़ाना मेरे भी बस का काम नहीं।

पहले ने कहा ठीक है मि. वर्मा के आने रॉक अंग्रेजी की कक्षा स्थगित ही रखते हैं और हिन्दी की कक्षाएं सुविधानुसार सभी कक्षाओं में अन्य शिक्षकों की सहायता से जारी रखते है।

ये कहकर अंग्रेजी की किताब को छोड़कर शिक्षक हिन्दी की किताब लेकर जाने लगे।

हिन्दी और अंग्रेजी की किताबें एक दूसरे को उदास होकर देखने लगी मानों मौका मिलता तो अभी गले मिलकर रो पड़ती।

अंग्रेजी की किताब इसलिए रोना चाहती थी कि सब से सिर्फ काम के लिए पढ़ते हैं। और हिन्दी की किताब अपनी मूर्खता पर कि कुछ अज्ञानियों के कारण वह अपने ही महत्व को कम आँक रही थी, आज अंग्रेजी ने मुझे मेरी अहमियत का एहसास न कराया होता तो मैं कुंठित होकर ही मर जाती।

विदेशों में अंग्रेज़ी

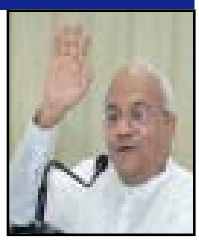

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

मेरे पासपोर्ट पर भारत एक मात्र ऐसा देश है, जिसका छापा उसकी अपनी ज़बान में नहीं है। मैंने क़रीब आधा दर्जन हवाई कंपनियों से विभिन्न देशों की यात्रा की लेकिन उन सब में केवल अपने देश की हवाई कंपनी, एयर इंडिया की विमान परिचारिकाएँ ही एक मात्र ऐसी विमान परिचारिकाएँ थीं जो अपने देशवासियों के साथ परदेसी भाषा में बात करती थीं। यदि इस प्रकार की घटनाओं से किसी देश के नागरिकों का सिर ऊँचा होता हो तो सचमुच भारतीय लोग अपना सिर आसमान तक ऊँचा उठा सकते हैं।

हमारे देश में यह आम धारणा है कि विदेशों में अंग्रेज़ी ही चलती है, अंग्रेज़ी के बिना हम विदेशों से संपर्क नहीं रख सकते, अंग्रेज़ी के जरिए ही विदेशी मुल्कों ने विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में उनन्ति की है। इस तरह की दकियानूसी और पिछड़ेपन की बातों पर लंबी बहस चलाई जा सकती है लेकिन यहाँ मैं केवल उन छोटे-मोटे अनुभवों का वर्णन करूँगा जो पूरब और पश्चिम के देशों में भाषा को लेकर मुझे हुए।

मैं एशियाई देशों में अफ़ग़ानिस्तान, ईरान और तुर्की गया, यूरोपीय देशों में रूस, चेकोस्लोवेकिया, इटली, स्विटजरलैंड, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, जर्मनी तथा ब्रिटेन गया तथा यात्रा का अधिकांश भाग अमेरिका और कनाडा में बिताया। इन देशों में से एक भी ऐसा देश नहीं था जिसकी सरकार का काम-काज उस देश की जनता की ज़बान में नहीं होता हो।

अफ़ग़ानिस्तान जैसा देश, जहाँ राजशाही थी और जहाँ राज-परिवार के अधिकांश सदस्यों की शिक्षा पेरिस या लंदन में हुई है, वहाँ भी शासन का काम या तो फारसी (दरी) या पश्तो में होता है। मैंने अफ़ग़ानिस्तान के लगभग सभी प्रांतों की यात्रा की और सभी दूर शासकीय दफ़्तरों में जाने का अवसर मिला, कहीं भी किसी भी दफ़्तर में अंग्रेज़ी का इस्तेमाल होते हुए नहीं देखा। आप चाहे विदेश मंत्रालय में चले जाएँ या गृह मंत्रालय या पुलिस चौकी या किसी राज्यपाल के दफ़्तर में, आप पाएँगे कि बड़े से बड़ा अधिकारी अपनी देश-भाषा का प्रयोग करता है। अफ़ग़ानिस्तान में मैं विदेशी था लेकिन अफ़ग़ान विदेश मंत्रालय ने राज्यपालों के नाम मेरे लिए जो पत्र दिए वे दरी में थे, अंग्रेज़ी में नहीं।

इसी प्रकार सोवियत रूस में 'इंस्तीतूते नरोदोफ आजी के निदेशक ने मस्क्वा के विभिन्न पुस्तकालयों के नाम मुझे जो पत्र दिए, वे रूसी भाषा में थे। इस संस्था के निदेशक प्राचार्य गफूरोव जो कि रूस के श्रेष्ठतम विद्वानों में से एक थे, अंग्रेज़ी नहीं जानते। उनके अलावा अंतर्राष्ट्रीय मामलों के ऐसे अनेकों रूसी विद्वानों से भेंट हुई जो अंग्रेज़ी नहीं जानते। जो अंग्रेज़ी जानते हैं, वे भी अपनी रचनाएँ रूसी भाषा में ही लिखते है और फिर उनका अनुवाद होता है। अंग्रेज़ी या फ्रांसीसी उनके लिए आकलन की भाषा है, सूचना देनेवाला एक माध्यम है, उनकी अभिव्यक्ति को कुंठित करने वाला गलाघोंटू उपकरण नहीं है। मस्क्वा में सैकड़ों भारतीय विद्यार्थी विज्ञान और इंजीनियरिंग का उच्च अध्ययन कर रहे हैं। उन्हें सारी शिक्षा रूसी भाषा के माध्यम से ही दी जाती है। मस्क्वा में एक-बार हम लोग विज्ञान और तकनीक की प्रदर्शनी देखने गए। वहाँ मालूम पड़ा कि जिस वैज्ञानिक ने अंतरिक्ष यान आदि के आविष्कार किए हैं, उसने अपनी रचनाएँ रूसी भाषा में लिखी है।

इसी प्रकार जर्मनी और फ्रांस के विश्वविद्यालयों में ऊँची पढ़ाई उनकी अपनी भाषाओं में होती है। विश्वविद्यालयों के कई महत्वपूर्ण प्राचार्य अंग्रेज़ी नहीं बोल सकते थे। ऑस्ट्रिया में मैं वियना के एक विश्वविद्यालय में दर्शन के कुछ अध्यापकों से मिलना चाहता था। मेरे साथ कोई दुभाषिया नहीं था। कोई आधा घंटा परेशानी होने के बाद एक आदमी ऐसा मिला जो मेरी बात का जर्मन भाषा में तर्जुमा कर सकता था। लंदन में लंदन स्कूल ऑफ इकॉनामिक्स की ओर से एक अंतर्राष्ट्रीय परिसंवाद हुआ। उसमें यूरोप के विभिन्न देशों से अनेक विद्वान आए थे। या तो हिंदुस्तानी विद्वान अंग्रेज़ी बोलते थे या हमारे पुराने स्वामी अंग्रेज़ी बोलते थे। यूरोप के विद्वान या तो ज़्यादातर चुप बैठे रहते थे या टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में बोलते थे। जब इटली के गांधी श्री दानियेल दोल्वी ने अपना भाषण इतालवी जुबान में किया तो मेरी भी हिम्मत बढ़ी। मैंने अपनी बात हिंदी में कही जिसका तर्जुमा श्री निर्मल वर्मा ने किया। तत्पश्चात जो अन्य यूरोपीय लोग वहाँ चुप बैठे थे, वे भी अपनी-अपनी भाषाओं में बोलने लगे। और किसी न किसी ने उनके भाषणों का भी तर्जुमा कर दिया। वहाँ लगभग आधा दर्जन भारतीय थे और एकाध सज्जन को छोड़कर सभी लोग त्रुटिपूर्ण और भद्दी अंग्रेज़ी बोल रहे थे लेकिन अपनी ज़बान का ठीक इस्तेमाल करने की हिम्मत किसी की भी नहीं हो रही थी।

चेकोस्लोवेकिया में वहाँ के प्रसिद्ध जन-नेता और संसद के अध्यक्ष डॉ. स्मरकोवस्की से जब मैं मिलने गया तो उनके विदेश मंत्रालय ने एक ऐसा दुभाषिया भेजा, जो अंग्रेज़ी से चेक में अनुवाद करता था। मैंने कहा, 'मैं भारतीय हूँ, मेरे लिए अंग्रेज़ी वाला दुभाषिया क्यों भेजा? उन्होंने कहा, 'आपके देश से आने वाले विद्वान, नेता और कूटनीतिज्ञ अंग्रेज़ी का ही प्रयोग करते हैं।' यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि डॉ. स्मरकोवस्की जैसे राष्ट्र नेता यूरोपीय होने के बावजूद भी अंग्रेज़ी का प्रयोग नहीं करते। इसी प्रकार अफ़ग़ानिस्तान के भूतपूर्व प्रधानमंत्री सरदार दाऊद, जो कि अपने देश के इतिहास में सबसे बड़े शासकों में से एक माने जाते हैं, अंग्रेज़ी में बात नहीं कर सकते थे। उनके साथ मेरी बातचीत दरी में ही हुई।

'हिन्दी को खेमेबाजी से उबरना होगा'

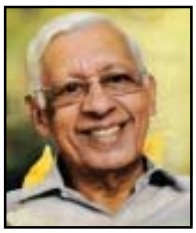

मॉरीशस के प्रख्यात साहित्यकार श्री अभिमन्यु अनत से जवाहर कर्णावट की बातचीत

मॉरीशस विश्व के उन चुनिंदा देशों में से एक है, जहाँ भारतीय भाषाओं और संस्कृति का प्रवाह आज भी गतिमान है. मॉरीशस की भूमि पर हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं का प्रवेश सन् 1810 में हो चुका था, जब फ्रांसीसियों के खिलाफ मॉरीशस पर किए गए आक्रमण में, ब्रिटिश सेना में लगभग 10 हजार भारतीय सिपाही यहाँ पहुँचे थे. यहाँ हिन्दी का सही स्वरूप 1830से प्रारंभ हुआ जब दास प्रथा का अंत हो जाने पर गनने के खेतों में कार्य करने हेतु हजारों मजदूर भारत से यहाँ पहुँचे थे. ये लोग अपनी झोलियों में भविष्य के सपनों के साथ रामायण, महाभारत, हनुमान चालीसा और आल्हा जैसी पुस्तकें भी साथ ले जाते रहे. सन् 1900 के आसपास देश की लगभग साढ़े 3 लाख की आबादी में करीब ढ़ाई लाख भारतीय थे जिनकी आपस की बोली भोजपुरी थी. वैसे कुछ बस्तियां ऐसी भी थीं जहाँ मराठी, तमिल और तेलुगु बोलने वाले लोग भी थे पर एक-दूसरे से मिलने पर हिन्दी इनकी सम्पर्क भाषा होती थी. भारतीय की संख्या इतनी विशाल होने पर भी दस प्रतिशत बच्चों का ही स्कूल में प्रवेश हो पाता था क्योंकि अपना सांस्कृतिक साम्राज्य तथा भाषा विशेष का वर्चस्व बनाए रखने के लिए हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को सरकारी स्तर पर पढ़ाई के योग्य नहीं समझा गया. फलस्वरूप मॉरीशस में हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं के पठन-पाठन का संघर्ष जारी रहा. महात्मा गांधी की प्रेरणा से डॉ. मणिलाल द्वारा देश का पहला हिन्दी पत्र 'हिन्दुस्तानी' सन् 1910 में प्रारंभ हुआ. इस जागृति अभियान के साथ ही विद्यालयों में भारतीय भाषाओं की पढ़ाई की व्यवस्था प्रारंभ हुई. पूरे देश में आर्यसमाज, विष्णुदयाल आंदोलन तथा हिंदू महासभा और हिंदी प्रचारिणी सभा के सहयोग से गाँव-गाँव में हिन्दी की निःशुल्क पढ़ाई जोर पकड़ती गई. हजारों अध्यापक स्वेच्छा से इस आन्दोलन में जुड़ गए और सारे मॉरीशस में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की बयार चल पड़ी. मॉरीशस में हिंदी को जीवित रखने में इन लेखकों और साहित्यकारों की भी महती भूमिका रही है जिन्होंने अपनी लेखनी से हिन्दी को घर-घर तक प्रवाहमान रखा है. इन्हीं में से एक हैं श्री अभिमन्यू अनत जिन्हें मॉरीशस का प्रेमचंद कहा जाता है. उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक तथा कविता आदि विधाओं पर 75 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं. वे भारत में भी लोकप्रिय हैं. उनकी कृतियों का फ्रेंच में भी अनुवाद हो चुका है.

आज मॉरीशस की सरकारी कामकाज की भाषा भले ही अंग्रेजी हो किंतु सार्वजनिक व्यवहार में अंग्रेजी का बोलबाला बिल्कुल नहीं है. फ्रेंच और क्रेओल ने मॉरीशस के जन-जीवन पर अपनी पकड़ इतनी मजबूत कर ली है कि मॉरीशस में अब हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाएँ भी बहुत कम सुनने को मिलती है. मॉरीशस में में हिन्दी और भारतीय भाषाओं की स्थिति पर चर्चा करने के लिए जब श्री अभिमन्यू अनत से सम्पर्क किया तो इसके लिए वे सहर्ष तैयार हो गए. प्रस्तुत है मॉरीशस में श्री अनत के निवास पर हुई इसी बातचीत के कुछ अंश :

मॉरीशस को अंग्रेजों से स्वतंत्र हुए तीन दशक हो गए, स्वतंत्रता से पूर्व और पश्चात मॉरीशस में हिन्दी पठन-पाठन की क्या स्थिति है?

मॉरीशस में हिन्दी की यात्रा साहस, यातना और बलिदान की गाथा रही है. हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के दमन के लिए पूँजीपतियों ने कुछ भी बाकी नहीं छोड़ा था. दुनिया के बहुत कम देश ऐसे होंगे जहाँ एक भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए इतना भुगतना पड़ा हो. मॉरीशस सभी हिन्दी प्रेमी देशों में ऐसा अकेला देश है जहाँ भोजपुरी बोली तो जाती रही, लेकिन हिन्दी लोगों की अस्मिता, शक्ति और संगठन की भाषा भी रही है.

स्वतंत्रता के पश्चात देश की साम्राज्यवादी नीति के कारण यहाँ के हिन्दी जगत में एक निराशा-सी छाई हुई थे. सरकारी स्तर पर हो रही हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की परीक्षा में जब भी समान अधिकार की माँग की गई, उसे ठुकराया जाता रहा. बच्चों की प्रारंभिक पढ़ाई की अंतिम परीक्षा में हिन्दी और अन्य भाषाओं के अंकों को शामिल नहीं किया जाता था. देश के नामी कॉलेजों में केवल गोरे, अधगोरे और चीनियों के बच्चे ही प्रवेश पाते रहे. भारतीय वंशजों के वही चंद बच्चे उस योग्य हो पाते थे जो या तो धर्म परिवर्तन कर चुके थे या जिनके पास कॉन्वेंट स्कूल का व्यय उठाने की आर्थिक क्षमता थी. इस प्रथा का विरोध स्व. डॉ. शिवसागर रामगुलाम के समय में उनके शिक्षामंत्री जगतसिंह ने जमकर किया. परीक्षा में मान्यता प्राप्ति के लिए संघर्ष चौदह वर्षों तक लगातार चला. तब कहीं जाकर सभी बच्चों को समान अधिकार प्राप्त हुए. आज मॉरीशस के विद्यालयों और महाविद्यालयों में लगभग 20 हजार विद्यार्थी हिन्दी का अध्ययन कर रहे हैं.

औपचारिक शिक्षा में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन से हटकर वर्तमान में मॉरीशस का हिन्दी लेखन किस दिशा में बढ़ रहा है ?

मॉरीशस में साहित्य को समृद्ध करने में हिन्दी लेखकों ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई है . साथ ही साथ उस साहित्य से भारत और अन्य देशों में मॉरीशस के स्वर को बुलंद किया है. अँग्रेजी, फ्रेंच और क्रेओल में मिलाकर भी यहां उतने उपन्यास, कविता संग्रह, नाटक, कहानी संग्रह तथा अन्य साहित्यिक विधाओं पर पुस्तकें नहीं लिखी नहीं जा सकी जितनी हिन्दी में लिखी गई हैं। मॉरीशस के हिन्दी लेखक भारत

की डेढ़ सौ पत्र-पत्रिकाओं में लिखते रहें हैं. अन्य देशों तक भी उनकी रचनाएँ पहुँचती रही हैं. मॉरीशस में भी हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन का सिलसिला जारी है.

मॉरीशस में दो विश्व हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन हो चुका है. हिन्दी की अंतर्राष्ट्रीयता में मॉरीशस की क्या भूमिका हो सकती है ?

हिन्दी साहित्य और हिन्दी भाषा को अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्रदान करने में मॉरीशस भारत से आगे रहा है. विश्व कहानियों के तहत फ्रांस की प्रतिष्ठित पत्रिका 'एरोप' में मॉरीशस की हिन्दी कहानी ने अखिल हिन्दी कहानी का प्रतिनिधित्व किया. कनाडा के कनेडियन इंस्टीट्यूट में मॉरीशस के हिन्दी कवि को ही हिन्दी कविता का पाठ करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. जर्मनी, रूस, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड तथा और भी कई स्थानों पर मॉरीशस के द्वारा हिन्दी साहित्य की झलक वहाँ के लोगों को मिलती रहती है. कैम्ब्रिज और ऑक्सफोर्ड से होने वाली हिन्दी परीक्षाओं के लिए मॉरीशस के दो उपन्यासों को इंग्लैंड के विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में रखा गया है. दिल्ली विश्वविद्यालय ने भी एक उपन्यास चुना है.

मॉरीशस में हिन्दी की समृद्धि हेतु आप भारत से क्या उम्मीदें रखते हैं ?

हिन्दी को आगे बढ़ाने के लिए भारत से अपेक्षित समर्थन व सहयोग नहीं मिल रहा है. मॉरीशस के उन तमाम गाँवों में जहाँ हिन्दी का वातावरण अपनी पराकाष्ठा पर था, फ्रांसीसी सरकार के सक्रियता के कारण वातावरण बदल रहा है. फ्रेंच पुस्तकों, पत्रिकाओं, और साहित्यिक गतिविधियों की बाढ़ में 150 साल से अधिक की सँजोई धरोहर हाथों से फिसलती-सी लग रही है. कोई भी भाषा और संस्कृति प्रेमी फ्रांस सरकार से भाषा और संस्कृति प्रेम और उत्साहपूर्ण पहल की दाद दिए बिना नहीं रह सकता. काश ! भारतीय संस्कृति और भाषा के लिए इतना समर्पण और साहस देखने को मिलता.

हमारे बच्चे भारतीय चित्रकथाओं को बड़ी ही रुचि के साथ पढ़ते हैं किंतु उन्हें अमर चित्र कथा नहीं मिल पाती जबकि पाश्चात्य देशों के (खासकर फ्रेंच) कॉमिक्स पहुँचते रहते हैं. भारत से अधिकाधिक हिन्दी पुस्तकें यहाँ भेजी जानी चाहिए, किंतु ऐसा नहीं हो रहा है. भारत सरकार के प्रकाशन विभाग की पत्रिकाएँ भारतीय दूतावास में धूल खाती रहती हैं, किंतु उनके वितरण की समुचित व्यवस्था नहीं है.

इन सारी स्थितियों के बावजूद आप भारतीय हिन्दी लेखन को किस रूप में देखते हैं ?

-भारत में हिन्दी लेखन सशक्त है। समाज के सत्य को उजागर करने वाली प्रेमचंद और निराला की परंपरा आज भी आगे बाढ़ रही है किंतु हिन्दी जगत में नकारने की प्रवृति और खेमेबाजी जितनी भारत में देखने को मिलती है, उतनी अन्यत्र किसी देश में नहीं. यह सब बंद होना चाहिए. इस आपसी टकराव के कारण हम हिन्दी में विश्व स्तरीय रचना नहीं दे पा रहे हैं

वैश्विक हिंदी सम्मेलन, मुंबई

संवेदनहीन

प्रीति सुराना

'मॉम आज हिन्दी में स्पेशल टॉपिक पर लेक्चर कॉम्पिटिशन है। किसी अच्छे से टॉपिक पर कुछ लिख कर दो ना। इस बार मुझे ये कॉम्पिटिशन जीतना है।'

'ठीक है, निभन्या कांड पर लिख दूँ।'

'नो नो ईट्स टू ओल्ड।' कुछ नया मैटर चाहिए जिसमें लोगों को इंटरेस्ट आए। अच्छा इम्प्रेशन भी पड़ना चाहिए।

भाई अभी अभी जो किसानों की हत्या के बाद का बड़ा सा ड्रामा चल रहा है रोज हर न्यूज़ चैनल्स पर दिखा रहा। उसपर स्पीच दो। 'करेंट अफ़ेयर्स पर ज्यादा मार्क्स मिलते हैं।'

ओके 'दिव्या सही कह रही हो।'

'मॉम मैं जिम होकर आता हूँ तब तक आपकी मातृभाषा में किसानों के मैटर पर इमोशनल सा भाषण लिख दो।' ये कह कर सौरभ हंसता हुआ बाहर चला गया।

सुधा ने एक नज़र बेटी की तरफ देखा स्कूल के इसी कार्यक्रम में जाने के लिए स्लीवलेस टॉप ढूंढ रही थी और मन ही मन सोचा हमारे दिए संस्कार क्या इतने मूल्यहीन है,... जो नई पीढ़ी संवेदनहीन होती जा रही है।

फिर फटापट नाश्ते की तैयारी करने लगी और शुक्र मनाया सौरभ के पापा का सुबह की सैर से लौटे नही हैं। ङहिन्दी मेरा ही नहीं उनका भी अभिमान हैङ। अपने बच्चों की बातों से आज उन्हें खुद से, संस्कारो से दूर होते महसूस किया, संवेदनहीन पीढ़ी का नज़ारा दहला देने वाला है।

विश्व परिदृशय पर हिन्दी

नगर की सबसे बड़ी साहित्यिक संस्था ने ङहिन्दी मेरा अभिमानङ बिषय पर कार्यशाला आयोजित की । देश विदेश के अनेकों हिन्दी प्रेमी अहिन्दीभाषी विद्वानों को कार्यशाला में आमंत्रित किया गया ।

अधिकांश स्थानीय एंव देशी साहित्यकारों का मत था विदेशी लेखको को हिन्दी का महत्व अंग्रेज़ी में समझाने पर ज्यादा असरकारी रहेगा ।

निश्चित दिन दिनांक को भव्यकार्यक्रम सम्पनन हुआ ।

दूर कही गाना बज रहा था 'कालू राम का फट गया ढोल बीच बजरिया डब्बा गोल.....'

नवीन जैन अकेला

हिंदी मेरा अभिमान

डा. भारती वर्मा बौड़ाई

(संस्मरण)

आज जब पीछे मुड़ कर देखती हूँ और सोचती हूँ कि हिंदी कब और कैसे मेरे जीवन में इतनी घुलमिल गई तो इसका पूरा-पूरा शत-प्रतिशत श्रेय माँ और पापा को जाता है और किस तरह जाता है इसके लिए मुझे अपने बचपन में लौटना होगा।

मेरे पापा बाबूराम वर्मा हिंदी के कट्टर प्रेमी थे। एक माँ के रूप में वे हिंदी से प्यार करते थे। काम करते-करते वे बच्चन जी के लिखे गीत गुनगुनाते रहते थे। आज मुझसे बोल बादल, आज मुझसे दूर दुनिया, मधुशाला, मधुबाला गाते। सुनते-सुनते मुझे भी कई गीत, रुबाइयाँ याद हो गई थीं। बाद में शायद यही मेरी पी एच डी करने के समय बच्चन साहित्य पर शोध करने का कारण भी बनी होगी।

तो हिंदी से मन के तार ऐसे जुड़े कि पराग, चंदामामा, बालभारती, चंपक मिलने की प्रतीक्षा रहने लगी। साप्ताहिक हिंदुस्तान, धमर्युग और उसमें भी डब्बू जी वाला कोना सबसे पहले देखना... बड़ा आनंद आता। लेखकों, कवियों के प्रति सम्मान की भावना भी उत्पनन होने लगी। आठवीं कक्षा में थी, तब विद्यालय पत्रिका में मेरी पहली छोटी सी कहानी छपी थी। उस समय जिस आनंद की अनुभूति हुई थी, आज भी जब उसके बारे में सोचती हूँ तो उस आनंद की सिहरन आज भी जैसे अनुभव होती है वैसी ही।

पापा की अलमारी से ढूँढ-ढूँढ कर पुस्तकें , सरस्वती, कहानी, विशाल भारत निकाल कर पढ़ना एक आदत बन गई थी । शिवानी, मालती जोशी. उषा प्रियंवदा, मनन्नू भंडारी, शशिप्रभा शास्त्री, रांगेय राघव आदि को पढ़ने का अवसर मिला। माँ से विवाहों, पर्व-त्योहारों के अवसर पर लोकगीत सुने तो यह विधा भी मन के निकट रही।

हिंदी की पुस्तकें, पत्रिकाएँ पढ़ने का जुनून कुछ इस तरह घर में सबको था कि जब घर में सब होते तो कोई न कोई पुस्तक-पत्रिका हाथ में लिए पढ़ने में लगे होते। यह दृश्य भी देखने लायक हुआ करता था। पापा तो माइक्रो के बाद बचे अपने समय का भरपूर उपयोग पढ़ने-लिखने में किया करते थे।

घर में पूरा वातावरण हिंदीमय था। माँ पर अवश्य कभी अपनी आस-पड़ोस की सखियों की देखा-देखी कभी अँग्रेजी दिखावे की दबी सी भावना आ जाती, पर टिक नहीं पाती थी।

जब मेरे छोटे भाई का मुंडन समारोह होना था और उसके निमंत्रण पत्र चलवाने की बात आई तो माँ ने कहा यहाँ सभी अँग्रेजी में छपवाते हैं तो हम भी छपवा लें, हिंदी में छपे निमंत्रण पत्र बाँटेंगे तो देखना कोई आयेगा भी नहीं। पर पापा कहाँ मानने वाले ? बोले.. कोई आये ना आये, निमंत्रण पत्र तो हिंदी में ही छपेंगे और बटेंगे। ऐसा ही हुआ। मैं पापा के साथ निमंत्रण पत्र बाँटने भी गई थी और सब लोग आये थे। उस समय कई दिनों तक इसकी चर्चा होती रही रही थी और कई लोगों ने इसका अनुकरण भी किया था। इस बात ने मेरे मन पर बहुत प्रभाव डाला था।

मेरे पापा देहरादून के वन अनुसंधान संस्थान (एफ. आर. आई) में हिंदी अनुवादक के पद पर कार्यरत थे। वानिकी से संबंधित अँग्रेजी से हिंदी में अनुवाद किया करते थे। उनकी अँग्रेजी भी बहुत अच्छी थी। पर वे बातचीत हिंदी में ही करते थे। आस-पड़ोस के बच्चों के माता-पिता अँग्रेजी झाड़ते रहते थे। तो मैं कभी सोचती कि मेरे पापा क्यों ऐसा नहीं करते और एक दिन मैंने उनसे पूछ ही लिया कि आप कभी लोगों से अँग्रेजी में क्यों बातचीत नहीं करते ? उसका जो उत्तर मुझे मिला था उससे मेरे मन में पापा के प्रति सम्मान और भी अधिक हो गया था। उन्होंने मुझे कहा था... जो हिंदी बोल-समझ सकते हैं उनसे हिंदी में ही बात करनी चाहिए, पर जो हिंदी नहीं बोल-समझ सकते वहाँ अँग्रेजी बोलनी मजबूरी है तो बोलनी चाहिए। मैं ऐसा ही करता हूँ।आज ऐसा सोचने वाले कितने हैं?

उनसे हिंदी में अनुवाद करवाने के लिए बहुत लोग आते थे और उसके लिए वह बहुत ही काम पैसे लिया करते थे। कोई-कोई स्वयं पैसे पूछ कर काम करवाता और पैसे देने का नाम न लेता। मैं कहती... आपने अपना समय लगा कर काम किया और उसने पैसे भी नहीं नहीं दिए तो हमारा क्या लाभ हुआ? उलटा नुकसान ही हुआ। तो वह कहते... नुकसान तो हो ही नहीं सकता।मैं पूछती कैसे... तो वह बताते... मेरा किया अनुवाद जब वह व्यक्ति छपवायेगा तो उसे बहुत सारे लोग पढ़ेंगे, तो यह मेरी हिंदी का प्रचार-प्रसार ही हुआ, तो इसमें नुकसान कहाँ? लाभ ही लाभ है। पैसा तो केवल मुझ तक पहुँचता है, पर मेरे किये अनुवाद से हिंदी बहुत लोगों तक पहुँचती है। ऐसी थी अपनी हिंदी माँ के प्रति उनकी सोच.... जिसने मेरे अंदर भी हिंदी प्रेम इतना विकसित किया कि बी.ए. करते समय मैं संस्कृत में एम.ए. करना चाहती थी, पर बी.ए. करने के बाद मैंने एम.ए. हिंदी में प्रवेश लिया था।

मेरे पिता ने कभी भी उपहार में मुझे पैसे-कपड़े नहीं दिये। वे हमेशा यही कहा करते थे कि मेरी पुस्तकों का संग्रह ही तुम्हारे लिए मेरा उपहार है, जिसका उपयोग केवल तुम ही मेरे साथ भी और मेरे चले जाने के बाद भी, करोगी। आज वे ही मेरी अमूल्य निधि हैं।

ऐसे ही हिंदीमय वातावरण में पलते-बढ़ते-पढ़ते मेरी कल्पनाओं ने भी अपने पंख पसारने आरंभ कर दिये थे और मेरी कॉपी छोटी-छोटी कविता, कहानी और लेखों से भरने लगी थी।

अपने पापा से मिली हिंदी प्रेम और साहित्य की विरासत से मुझमें भी छोटे-छोटे विचारों को मूर्त करने के लिए निणन्य लेने -कहने की क्षमता आने लगी।

मैंने अरुणाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग में हिंदी अध्यापिका (टी.जी. टी.) के रूप में चौबीस वर्ष तक कार्य किया। वहाँ सिल्ले उच्च माध्यमिक विद्यालय में विद्यालय पत्रिका निकलती थी जिसमें अँग्रेजी

और स्थानीय बोली की रोमन में लिखी रचनायें ही ली जाती थीं। मैंने उसमें हिंदी विभाग भी रखवाया और विद्यार्थिन्यों को प्रोत्साहित करके छोटी छोटी कवितायें, कहानियाँ लिखवाई, उन्हें ठीक करके, हिंदी विभाग की संपादिका बन, उन्हें प्रकाशित भी करवाया। इसी तरह सिमोंग माध्यमिक विद्यालय में रहते हुए विद्यालय पत्रिका निकालने का निणय्र किया। बहुतों ने हतोत्साहित भी किया, पर उसको निकालने का पूरा दायित्व अपने ऊपर लेकर बच्चों से और उत्साहित करने के लिए शिक्षकों से भी हिंदी, अँग्रेजी और स्थानीय बोली... तीनों की रचनाएँ लिखवा कर एकत्रित की। अपने पापा की सहायता से देहरादून में विद्यालय पत्रिका को छपवाया और उस समय के मुख्यमंत्री श्री गेगोंग अपांग से उसका विमोचन भी करवाया था। तब इसकी वहाँ बहुत चर्चा होती रही थी कई दिनों तक।

मेरी बेटी का विवाह हुआ तो उसका निमंत्रण पत्र भी हिंदी में छपा। मैंने उसमें भी अपने मन के कई प्रयोग किये। अपनी लिखी कविता भी उसमें रखी।

तो जिस तरह मेरे पापा ने अपने हिंदी प्रेम से अपनी हिंदी माँ के लिए जीवन की अंतिम साँस तक कार्य करते हुए मेरी जड़ों को सींचा और एक फलदार वृक्ष बनाया उसी तरह मैं भी अपने बच्चों को उसी हिंदी प्रेम में बढ़ते हुए देखने के लिए संस्कारित करने में लगी हूँ। बेटे के पच्चीसवें वर्ष में प्रवेश करने पर उसके लिए लिखी कविताओं का संग्रह ' उपहार ' उसे भेंट किया, जो अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है और जन्मदिन पर मैं उसे पुस्तक दे सकूँ... इसके लिए प्रीति सुराना ने अपने और कामों की व्यस्तता के बीच से समय निकाल कर मुझे पुस्तक एक दिन पहले उपलब्ध करवा दी थी। बेटी के जन्मदिन पर भी अब आगे मेरा यही उपहार होने वाला है।

मेरे पापा का हिंदी प्रेम का मुझमें अंकुरित हुआ बीज अब धीरे-धीरे मेरे बच्चों में भी पंप रहा है। नाना की इस विरासत पर उन्हें भी उतना ही गार्ब है जितना मुझे है।

हिंदी..पापा का, मेरा और मेरे बच्चों का ही अभिमान नहीं, हम सबका, देश का, राष्ट्र का अभिमान है।

अफसोस के इन पलों में

डॉ.प्रभा ठाकुर की कविता...

दिल जलाने से क्या होगा गम सुनाने से क्या होगा...
ज़िन्दगी मुस्कुराएगी प्यार के गीत गाये जा...!
ने उसे गज़ब का सम्बल दिया...

जो ऊर्जा का संचार हुवा कि 300 रुपये की नोकरी करने वाला कैलाश आज दस दस हज़ार के चार सहयोगियों के साथ व्यापार में सफल होकर प्रख्यात हुआ...

अब नई तकनीक ने व्हाट्सएप की दुनिया ने तो कैलाश को कई अवसर प्रदान कर दिये...

एक समूह बनाया... ङ'काव्यप्रेमियों की महफ़िल'

समूहों में काव्यप्रेमियों में अपनी निस्वार्थ हिन्दी साहित्य सेवा में होने के फल स्वरूप...

सौभाग्य से अंतरा शब्दशक्ति से जुड़ गया...

अंतरा में स्वरचित रचना ही भेज सकते थे...अब जुड़ तो गये पर सिर्फ पढ़ो, कुछ स्वयं की लिखी हो तो लिखो वरना चुप बैठो...

अंतरा की संस्थापक संचालिका श्रद्धेय बहन प्रीति जी सुराना को मैनें अपनी पीड़ा बताई तो बहन बोली कि भाई चार पंक्तियां लिखो पर स्वयं की लिखो...

डॉ. प्रीति जी सुराना की प्रेरणा से कुछ कुछ लिखने का प्रयास किया...

मातृभाषा उनन्यन संस्थान के अध्यक्ष डॉ.अर्पण जी जैन ने कैलाश सिंघल को अपना राष्ट्रीय सचिव बना दिया...

अंतरा शब्दशक्ति सम्मान और राष्ट्र गौरव अवार्ड प्राप्त कैलाश अब कैलाश बिहारी सिंघल बन गया जो

सिर्फ और सिर्फ हिन्दी माँ का आशीष है...!

-कैलाश बिहारी सिंघल..

सोशल मीडिया पर कहाँ है
मातृभाषा उन्नयन संस्थान

मातृभाषा उनन्यन संस्थान को हमेशा से हिन्दी के प्रचार हेतु तकनीकी के प्रति सजग संगठन के रुप में जाना जाता रहा है। ज़ाहिर है कि संस्थान ने इंटरनेट और सोशल मीडिया पर अपनी उपस्थिति को चिन्हित भी किया है। संगठन का हिन्दी प्रचार हेतु अपना सूचना प्रौद्योगिकी प्रकल्प है यानी एक ऐसी इकाई जिसका काम ही है जनमानस में हिन्दी का प्रचार प्रसार करना और उसे राष्ट्रभाषा बनाने हेतु समर्थन प्राप्त करना।

फ़ेसबुक पर संगठन का हिन्दी ग्राम पनन है जिस पर इस समय (ख़बर लिखे जाने तक) 3 हज़ार से अधिक लोगों द्वारा पसंद किया गया है। ट्विटर पर संगठन सक्रिय है और फॉलोअर्स की संख्या 1 हज़ार से ऊपर है।

फ़ेसबुक पर संगठन न केवल विभिनन-मुद्दों पर लोगों की राय आमंत्रित करता है बल्कि संगठन और हिन्दी से जुड़ी जानकारी भी देता है। हिन्दी को रोजगार मूलक भाषा बनाने हेतु हिन्दी ग्राम सजग है। हिन्दी भाषा से सम्बंधित तथ्यों, प्रशनें और विभिनन-महापुरुषों के जन्मदिवस, पुण्यतिथि व निधन आदि की सूचना भी प्रेषित करता है। इसके अतिरिक्त मातृभाषा उनन्यन संस्थान की एक इकाई मातृभाषा.कॉम ऐसी भी है जहाँ संस्थान द्वारा हिन्दी के रचनाकारों को मंच भी उपलब्ध करवाया जाता है जिसके माध्यम से नवोदित और स्थापित रचनाकारों के लेखन को पढ़ा जा सकता है। साथ ही संस्थान की इकाई के तौर पर अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन भी है जो हिन्दी के रचनाकारों की पुस्तकों का प्रकाशन करता है। साहित्यकारों की जानकारी को सहेजने के उद्देश्य से संस्था की एक इकाई 'साहित्यकारकोश' भी सक्रीय है।

ये कैसा अभिमान?

हरिहरदत्त शुक्ल ,धार

हमारे क्षेत्र का बडा शहर , स्वच्छता अभियान मे प्रथम आने पर गर्व से ओतप्रोत । शहर की लम्बी-चौडी दीवारों पर चित्रों के साथ कथाकथित सुवाच्य लिखकर जिम्मेदार लोगों ने सन्तुष्टि की लम्बी सांस ली ही थी कि 14सितम्बर आ गया और ङहिन्दी हमारा अभिमानङ है यह सिद्ध करने के लिऐ सरकार ने विभाग के खाते मे पैसा भी डाल दिया है तभी से बडे बाबू परेशान है , बडे -बडे पोस्टर लिखवाकर लगवाना है ।

हर कहीं लगवा नहीं सकते क्यों कि शहर को साफ भी रखना है अतः निश्चित हुआ कि पोस्टर आम रास्तों से हटकर लगवाये जांय ।

हिन्दी ज्ञान का दुर्भाग्य है कि बाथरुम , टायलेट, मिस , मिसेज़ , सर , क्लीन , टीचर्स आदि.. आदि शब्दो को हमने ना जाने क्यों और न जाने कब से हिन्दी के ही मान लिए है इसलिए इन विशिष्ट हिन्दी के साथ कई तरह के पोस्टर बनाये गये , समय से पहले लगवा भी दिये गये ।

बडे बाबू बहुत प्रसन्न थे क्योंकि आवन्टित पैसा खर्च भी हो गया था और बच्चों सहित मेला घूमने की व्यवस्था भी हो गई थी ।

अब एक ही चिन्ता उन्हे खाये जा रही थी कि 14 सितम्बर को एक मंचीय कार्यक्रम रखकर प्रबुद्धजनों को आमन्त्रित कर उदबोधन व व्याख्यान द्वारा यह सिद्ध करना था कि कि ङहिन्दी मेरे लिए अभिमानङ है ।

अपनी समस्या जब पतनी को बताई तो पहले तो वह हंसी फिर सहजता से पूंछा 'क्यों जी , हिन्दी तो हमारी जन्मजात भाषा है, फिर अपमान या अभिमान जैसी बात क्यों कर रहे हो'।

बडे बाबू खुनन गये बोले 'इसीलिऐ तुम औरत हो , समझी'।

'अरे अभिमान की बात न होती तो सरकार वैसे ही हमारे कार्यालय को तीन लाख देती ' ।

'दो लाख तो हमने खर्च कर दिये है अब यह बताओ कि एक लाख कैसे खर्च करें , बता सकती हो तो बताओ वर्ना दिमाग मत खाओ , जाओ यहां से ' ।

बडे बाबू की पतिन कई बिसीयां चला चुकी थी , हार मानने वाली तो थी नहीं तपाक से बोली ' अरे , रामायण मे लिखा है ' ङपंडित सोई जो गाल बजावाङ।' और कान मे कुछ कहा ।

फिर क्या था बडे बाबू की तो बांछे खिलगई , केलेन्डर के अनुसार तारीख आ गई , योजना के कनुसार मंच सजाया जा चुका था ,आज बडे बाबू धीती-कुर्ते मे थे तिलक लगा रखा था , उनकी पतनै स्वागत द्वार पर आने वालों को चंदन लगा कर 'जय श्रीकृष्ण 'कहना नहीं भूल रही थी ।

पतनै के पियर पक्ष के दूर के दो रिस्तेदारों को आमंत्रित वक्ता के रूप मे बुलाया जा चुका था ।मंच की प्राथमिक औपचारिकताऐं पूरी होने बाद दोनो आमन्त्रित गाँव के गवई लेकिन वाकपटु कथावाचकों ने अपनी -अपनी बारी मे अतुकांत कविताओं जैसा व्याख्यान दिया ।

समझ मे आना न आना की कोई शर्त तो थी नहीं , कभी बाबू तो कभी बबुआईन तालियों से शुरूवात करती तो कुछ और भी संगत के रूप मे बज जाती ।

अन्ततः कार्यक्रम समाप्त हुआ ,अथितियों को सेवा शुल्क काट कर लिफाफा दे दिया गया और मंच से ही रेलवेस्टेशन पहुचा दिया गया ,अति व्यस्थता का बहाना था क्योंकि यही करार था ।

सो उनके जाने के बाद स्वल्पाहार के नाम पर गिद्ध भोजन हुआ और कार्यक्रम की ईतिश्री ।

प्रतिवेदन भेजा गया ,राशि खर्च के व्यवरे सहित ।

कुछ दिनो बाद एक प्रशस्तिपत्र आया लिखा था 'आप जैसे हिन्दी के पुरोधाओं की सजगता के कारण ही हिन्दी सर्वव्यापी भाषा है , हमे आप पर और हिन्दी पर गर्व है '

बडे बाबू ने उस पत्र से तीन बार पतनै को न्यौछावर की और उसे मढ़वा कर आफिस मे लगा दिया । निचे लिखवा भी दिया हिन्दी मेरा अभिमान।

देखो हँस न देना

पूछताछ ऑफिस

-यात्री (रेलवे स्टेशन की टिकट खिड़की पर), 'क्यों बाबूजी, यहां पूछताछ ऑफिस नजर नहीं आ रहा है, जरा बताएंगे कहां है?' टिकट बाबू ने सिर खुजाते हुए कहा, 'एक काम कीजिए, पूछताछ के ऑफिस पर जाकर पूछ लीजिए।'

कांच का घर

-अध्यापक ने लड़कों को एक वाक्य पूरा करने को दिया। वाक्य था- जिनके घर कांच के होते हैं, वेकृकृ एक लड़के ने वाक्य को इस प्रकार पूरा किया- वे बत्ती बंद करके कपड़े बदलते हैं।

मूर्ख

-एक बार दो मूर्ख गाड़ी में यात्रा कर रहे थे। रात होने वाली थी। पहला मूर्ख ने कहा, 'क्यों भाई, ये पेड़ इतनी तेजी से पीछे क्यों भागे जा रहे हैं?' दूसरे मूर्ख ने कहा, 'भाई रात होने वाली है, अपने घर जा रहे हैं।'

-ग्राहक ने दूधिया से पूछाः 'तुम गाय का दूध बेचते हो? दूधिया ने कहा, 'नहीं बाबूजी'। ग्राहक ने फिर पूछा, 'तो भैंस का? दूधिया ने जवाब दिया, 'नहीं बाबूजी।' ग्राहक ने कहा, 'तो किसका दूध बेचते हो?' दूधिया बोला, 'जी लाला करोड़ीमल का।'

हिन्दी मेरा अभिमान

बहुत दिनों के बाद रिया भारत आई थी ।रिया ने भारत आते ही सबसे पहले रागिनी को फ़ोन लगाया और कहा-

जय श्री कृष्णा रागिनी कैसी हो ? मैं भारत आ गई हूँ ,तुम सभी से मिलना चाहती हूँ । बताओ कब फुर्सत में हो तुम सब किसी रेस्टोरेंट में मिलते हैं फिर ।

रागिनी चुपचाप रिया की बातें सुन रही थी रिया ने उसे कुछ बोलने का मौक़ा ही नहीं दिया था । सोच रही थी इतने लम्बे अरसे से रिया विदेश में रहती है फिर भी इतनी शुद्ध हिंदी में बोल रही है बिल्कुल नहीं बदली ।

जब रिया ने कहा अरे बोलो भी .....कब मिलना है कुछ तो बोलो

तब जैसे रागिनी की तंद्रा टूटी हाँ हाँ .....बोलो तो आज ही !

हाँ ! तो फिर हम सब आज ही मिलते हैं ।

इतना कह फ़ोन कट गया ।

रागिनी ने सभी को फ़ोन लगाकर शाम चार बजे पास के ही रेस्टोरेंट में बुला लिया। सभी पुराने मित्रों से मिलकर रिया बहुत ख़ुश थी सालों बाद जो मिली थी । रिया का स्वभाव बिल्कुल नहीं बदला था वो अपने मित्रों से वैसे ही मिली जैसे पहले करती थी वही ख़ुशमिज़ाजी , वही अल्हड़पन , मज़ाक़ करने का अन्दाज़ सब कुछ वैसा ही था ।

नमिता ने कहा मज़ा आ गया यार तुझसे मिलकर हम तो न जाने क्या क्या सोचते थे तेरे बारे में ।

मैं कुछ बोलूँ ! यार रिया जबसे तुझसे बात की एक बात समझ नहीं आई यार ये बता तू तो विदेश में रहती है पर तेरा रहन सहन भाषा बिल्कुल नहीं बदला । तेरे बच्चे भी हिंदी बोलते हैं ! .....

रागिनी की बात बीच में ही काटते हुए रिया ने कहा ....मैं विदेश में रहती हूँ ,रागिनी पर मैं अपने देश अपने संस्कारों को नहीं भूली हूँ ।आज भी मैं अपने देश की मिट्टी से जुड़ी हुई हूँ और ङहिंदी मेरी मात्रभाषा है हिंदी मेरा अभिमान हैङ।

सभी स्तब्ध हो रिया की बातें सुन रहे थे और थोड़ी ही देर में सारा हॉल तालियों से गूँजायमान हो गया ।

अदिति रूसिया
वारासिवनी

हिन्दी कविता

मम्मी स्कूल की बुक छप रही है क़ोई कविता लिख दो,
मैने पूछा कब तक चाहिए बेटा बोला कल !
मै गुस्से से बोली,,,,, किस विषय पर चाहिए,,
बोला,,,,,,,,,,कुछ भी लिखना हिन्दी मै नही ,,,,,

मै उसको अपलक देखते रह गयीं ।पर कुछ वजह तो बताओ, बोला इन्गलिश मे रहती है, तो मिस अच्छे से पढती है,और इमप्रेशन टॉप का पडता है।

मै सोचती रही इगलिश मीडियम मे डालकर गल्ती की आज ये अपनी मात्र भाषा से दूर होते जा रहे है।

हम लोग बचपन मे किराये की साइकिल चलाकर कॉमिक्स लाते थे ।सब अदल बदल कर पढते ,कहानियां सुनते थे।

आज के बच्चे कार्टूनों मोबाइल गेम से ही फुर्सत नही पाते,समय कितनी जल्दी करवट ले रहा हे ।ये अपने बच्चों को क्या सँस्कार देंगे ।

बेटा बोला क्या सोचने लगीं,,,,,,,,,,,नही तो आप हिन्दी मे लिख दीजिये मै दीदी से ट्रान्सलेट करवा लूँगा,,,,,,

मै सोचती रही हिन्दी की इतनी उपेक्षा क्यों है।शिक्षकों की भी कहीं गल्तियां है जो बच्चों को मात्र भाषा के लिये प्रेरित नही करते उपेक्षित करते हैं।

मैने कहा कि हिन्दी मे लिखूँगी और यही ले जाओगे ,,,,,,,,,,,,दीदी नही लिखेगी,,,,

मैने कविता हिन्दी मे लिख कर नीचे नोट लिखा-
'हिन्दी मात्र भाषा है, इसका अपमान न करें'
शिक्षिका को अपनी गलती का एहसास हुआ।
कविता मे प्रथम स्थान प्राप्त हुआ और मुझे स्कूल मे अलग से बुलाकर बधाई दी गयी ।

अर्चना कटारे
शहडोल

हिंदी मेरा अभिमान

बचपन से ही एक ही भाषा बोलनी आती है मुझे केवल हिंदी।

महाराष्ट्र में जन्म हुआ दसवीं तक मराठी पढी, अंग्रेजी पढी पर बोल नहीं पाई।

इसे मान कहुं,सम्मान कहुं या अभिमान मेरे लिए सभी कुछ हिंदी है।

कहानी कविता उपन्यास लेख निबन्ध सबमें बहुत से पुरस्कार मिले। अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है हिन्दी। हर शब्द के कितने ही पर्यायवाची हमें हिंदी में मिलते है।

अमेरिका, लंदन और दुबई में हर जगह हमें न केवल हिन्दी के जानकार लोग मिले। एक अमेरिकी महिला ने हनुमान चालीसा हिंदी में सुनाई।

मुझे मेरी भाषा पर नाज है। हिंदी बोलना मेरी विवशता नहीं वरन मेरी शान है।

दक्षिण भारत में भी सभी लोगों ने मुझसे हिंदी में बात की।

हम निरन्तर हिंदी में काम करें तो जरूर राष्ट्र भाषा के सम्मान से नवाजी जायेगी हिंदी।

जय माँ भारती।

डा. राजलक्ष्मी शिवहरे

मेरे तीन बच्चे हैं 2 बेटे और 1 बेटी।

हम संयुक्त परिवार में रहते थे और हमारे पति 3 भाई हैं, और पति के दोनों बड़े भाइयों के 4-4 बच्चे। सभी हिंदी माध्यम से ही पढाई कर रहे थे वो भी सरकारी स्कूल में, तब मेरी शादी हुई ही थी। मैं भी हिन्दी माध्यम से ही पढी थी परंतु मेरे भाई के सभी बच्चों को अंग्रेजी में दाखिल कराया गया था, पर जब मेरे बच्चे हुए और वे स्कूल जाने लायक हुए तो उनका दाखिला हिन्दी माध्यम में ही लेकिन सरस्वती शिशु मंदिर में हुआ, उस समय यही मात्र एक स्कूल भारत में संस्कार और अच्छी शिक्षा के लिए जाना जाता था। उस समय दाखिले के वक्त मैं अपने पति से बोली मुझे अंग्रेजी माध्यम से अपने बच्चों को पढ़ाना है तो पति और उनके साथ साथ किसी ने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया, पर मैं मन ही मन में कुढती थी कि मुझे अपने बच्चों को हिन्दी में नहीं पढ़ाना था। यदा-कदा पति से शिकायत भी करती रहती थी। कुछ समय बाद सरस्वती स्कूल में भी हर साल फीस में बढ़ोतरी होने लगी। घर में पढ़ने वाले बच्चे अधिक थी सभी भाइयों के बच्चे थे और अन्य खर्चों के साथ पढ़ाई के भी नित नए खर्च बढ़ते जाते थे तो तय किया गया कि सभी बच्चों को सरकारी स्कूलों में दाखिल कराया जाएगा और करा भी दिया। उस समय भी मैने 2 दिनों तक खाना भी नहीं खाया कि एक तो अंग्रेजी माध्यम में नहीं पढ़ा रहे हैं और अब सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले हैं तो मैं बहुत गुस्सा थी। मैंने पति से बहुत कहा पर घर में सबसे छोटे होने के कारण वह अपनी राय नहीं देते थे और बड़े का लिहाज और सभी समान रूप से एक ही परिवार के साथ रहने के कारण बच्चों को भी अपना पराया नहीं मानते थे तो पति बोले कि स्कूल से कोई फर्क नहीं पड़ता है और मैं भी उसी स्कूल में पढ़ा हूँ और मेरे सभी भाई भी और अगर बच्चे पढ़ने वाले होते हैं तो स्कूल या हिन्दी अंग्रेजी माध्यम से कोई फर्क नहीं पड़ता इसलिए अगर बच्चों में हुनर होगा और उन्हें कोई नहीं रोक सकता है वे हर हाल में अपना मुकाम हासिल कर सकते हैं। और सच में हुआ भी यही मेरे 2नों बेटे इंजीनियर हैं और बैंगलोर में अच्छी कंपनियों में कार्यरत हैं। और अब जब हमारी अपनी पहचान हमारी हिन्दी खोती जा रही है तो लगता है कि सचमुच हम ही कहीं न कहीं इसके जिम्मेदार हैं और अपने इस अभिमान यानि कि हमारे अपने

''हिन्दुस्तान और अपनी मातृभाषा - हिन्दी हमारा अभिमान ''जो कि हमारी असली पहचान है। समझने की आवश्यकता है और हमारे बच्चों को भी समझाने की।

किरण मोर कटनी म.प्र.

देखो भई! क्या ऑर्डर आया है इस बार! स्कूल में हिंदी डे सेलिब्रेट किया जायेगा।

बड़ी मुसीबत हो गई ये तो। कहते है सरकार से आया है यह डे मनाने का ऑर्डर। ऊपर से यह और लिखा है प्रिन्सिपल ने.... हिंदी मैडम से हेल्प लीजिये।

मैं तो उससे कुछ पूछने वाली नहीं। इतना लंबा बतायेगी कि बोर ही कर डालेगी... कहते हुए मिसेज़ डालमिया इठला कर बोली।

तब तक मिसेज़ सिंह बोली....करना क्या है इसमें जो हम हिंदी वाली से हेल्प लें!

अरे! अपनी-अपनी क्लास के दो-चार बच्चों को कुछ सलोगंस याद करवा दो... लाइक.... हिंदी माई मदर, हिंदी माई लाइफ, हिंदी माई प्राउड सो सो... बाकी वो हिंदी वाली है तो करवाने के लिए।

और हाँ.... तुम एक-पोयम इंग्लिश में लिख कर लर्न करवा देना।

डन! चलो, तैयारी करवा देते हैं। परसों तो हिंदी डे सेलिब्रेट होना ही है.... कहते हुए सबकी सब तैयारी करवाने अपनी-अपनी क्लास में चली गई।

डा. भारती वर्मा बौड़ाई

ओह माँ यह आपका फ़ोन भी ना?नाक भों सिकोडता बेटा खीझता हुआ बोला।यहाँ कुछ भी टाइप करो तो हिंदी में। माँ सुनो इसे

इंग्लिश टाइपिंग में करो।बड़ी दिक्कत होती हैं।मैंने प्रशनत्मक दृष्टि से पर मुस्कुराकर फ़ोन उसके हाथ से ले लिया।क्यों तुम्हारा स्मार्ट फ़ोन कहाँ हैं।जो करना हैं उससे करो।सुविधा तो तुम्हारें फ़ोन में भी हैं ना?

ताज्जुब हो रहा था की नई पीढ़ी जब से डिजीटल हुई हैं तब से ज्यादा ही बिखरने लगी हैं।मोबाइल में शॉर्ट फॉर्म्स में लिखना उन्हें ज्यादा भाता हैं।हिंदी में यह सुविधा नही ,सिस्टर को सीसीं दूपि कौं द, ब्ज्ल् और न जाने क्या क्या।हिंदी में अगर हम यह लिखे तो बात का बतंगड़ बन जाए। हाय री यह आधुनिकता। सच में अफ़सोस होता हैं। की आज की युवा पीढ़ी हिंदी में बिलकुल भी लिखना नही चाहती। कसूर उनका भी नही आज कल ऑनलाइन ज़माने में हिंदी भाषा का प्रयोग कम ही होता हैं।

क्षहिंदी मेरा अभिमान।यह तो मै कह सकती हूँ गर्व से क्योंकि मेरे हस्ताक्षर भी हिंदी में ही हैं और प्रोफाइल भी।

मातृभाषा मराठी होने के बावज़ूद मै हिंदी बेहतर लिख लेती हूँ और कोशिश भी करती हूँ।

और अपने दोनों बच्चों से भी हिंदी लिखने को कहती हूँ।

पर लापरवाही से दोनों कहते है माँ बस दसवीं तक पढ़ ली बड़ी मुश्किल से पीछा छूटा हैं अब मत कहना।अफ़सोस और विचलित हो जाती हूँ।की काश यह समझ पाए मातृभाषा का सम्मान।

कहते भी हैं आप हो न जब हमे हिंदी में कुछ लिखना होगा आप से कह देंगे आप लिख कर दे दीजियेगा।

मन ही मन सोचती हूँ और जब मै नही रहूँगी तब?

आधे हिंदी आधे अंग्रेजी सिखने वाले बच्चों की भाषा क्या होगी यही सोच मन घबरा जाता हैं। मेरी डायरी का पहला पनन देख बच्चे कहते हैं माँ हम तो हिंदी नही ढंग से सिख सके और ना ही सिख पाएँगे पर हाँ आपका हिंदी की तरफ़ लगाव देख हम गर्व से यह कह सकते हैं की हिंदी हमारा भी अभिमान हैं। सच कहूँ तब दिल गर्व से भर जाता हैं की चलो कुछ संवेदना अभी भी बाकी हैं बच्चों में।फिर वह मातृभाषा हो या मुझे momm की जगह माँ कहना।।

-सुरेखा अग्रवाल

अपने ही घर में उपेक्षित हिन्दी

बीना शर्मा 'झंकार'

शादी के बाद अपने पति की नौकरी के कारण जगह जगह जाती रही लिहाजा बच्चों को भी आना पड़ा।।

नितांत हिन्दी भाषी परिवार एवं वातावरण में मेरा और मेरे बच्चों का जन्म एवं लालन पालन हुआ जिसका मुझे ही नहीं मेरे बच्चों को भी कोई गिला नहीं ।।

बात उन दिनों की है जब मैं फ़रीदाबाद ?दिल्ली?के डी. ए. वी.स्कूल में हिन्दी और संस्कृत की व शिक्षिका थी।।जहाँ की शिक्षा पद्धति, अध्यापक, अध्यापिकाएँ एवं व्यवस्था सभी श्रेष्ठ थे आज भी माने जाते हैं।।

मेरे भी बच्चे ?क्रमशःकक्षा चार(4) और कक्षा प्रथम(1)?में अध्ययनरत थे किन्तु प्राइमरी विभाग में जहाँ मेरे बच्चे पढ़ रहे थे वहाँ मेरा कोई दखल नहीं था।।

मेरी बेटी ने घर आकर कई बार कहाँ माँ हमारी अंग्रेजी और अन्य विषय की टीचर बहुत डाँटती हैं हमें ----

मैंने पूछा --किस कारण

बेटी --माँ टीचर कहती हैं कि तुम लोग हिन्दी में बात चीत क्यों करते हो इतना भी नहीं जानते ये इंगलिश मीडियम स्कूल है ।।

मैंने पूछा ----और हिन्दी ,संस्कृत और धर्म शिक्षा की अध्यापिकाएँ ..??

बेटी ---न माँ वो नहीं डाँटते

उल्टा वे कहते हैं आप सभी हिन्दी में वार्तालाप किया करें आपस में ,हिन्दी हमारी मातृ एवं प्राचीनतम् श्रैष्ठ भाषा है।।

बेटी--अब आप ही बताओ माँ कौन सही है ।।अब हमारी टीचर ने कहा है जो इंलिश में बातचीत और सबाल नहीं करेगा उस पर फ़ाइन लगेगा ।।

मैं कुछ न कह सकी उल्टा सुनकर चुप हो गयी किन्तु आहत मन से सोचने पर मज़बूर भी --------

क्यों..??

क्यों कि--- मैं ख़ुद हिन्दी की अध्यापिका होने के साथ- साथ एक कक्षा की प्रमुख कक्षा अध्यापिका ?क्ला टीचर भी थी?अतः अपने सभी विद्याथिर्यों को हिन्दी में बात-चीत करने,, वाद विवाद आदि प्रतियोगिता में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित किया करती जिसे मेरी कक्षा के लगभग सभी बच्चे मानते ही नहीं थे इस कारण कई प्रतियोगिताओं में विजयी भी रहते थे।।

किन्तु अनकही सी एक पीड़ा एक टीस अंतस में आज भी है ।।ङ

आज जो शिकायत मेरी बेटी ने की वही मेरे कई विद्यार्थी मुझसे कई-2बार कर चुके थे किन्तु मैं अपने तकी से उन्हें मना लिया अरती थी।।

एक दिन बात हद से ज्यादा बढ़ गयी जब एक गणित की अध्यापिका ने मेरे सैक्शन के एक बच्चे को बार-बार मना किये जाने के बाद भी हिन्दी में सबाल पूछे जाने के कारण इतना पीटा की उसके होंठों से लहू बहने के साथ -23से कई जगह चोट भी आई उसके माता पिता स्कूल आये बात प्रधानाचार्य तक भी पहुँची किन्तु भारतवर्ष की पैदाइश वो अध्यापिका इतनी ढ़ीठ थी कि न उसे अपनी गलती का पक्षतावा था न ही हिन्दी का अपमान करने का।। प्रधानाचार्य जी ने भी हिन्दी को बढ़ावा देने जैसा आश्वाशन न देकर बीच का रास्ता निकाला कि बच्चे आप उनकी कक्षा में अंग्रेजी ही बोला करो।।

जब विद्यालय के नाम और प्रतिष्ठा की बात आती अन्य विद्यालयों से प्रतिस्पर्धा का प्रशन उठता उस समय हिन्दी की अध्यापिकाओं को विशेष निर्देश दिये जाते कि आप इस तरह विद्याथिर्यों को तैयार करें कि हमारे ही विद्यालय के छात्र विजयी रहकर यहाँ का नाम रोशन करें ।।

श्रृषि मुनियों के जिस देश में प्राचीन गुरुकुल की श्रैष्ठ एवं उच्च स्तरीय संस्कृत हिन्दी की परिपाटी का प्रचलन था वहाँ।।ङ

आज-------वाह री दोहरी मानसिकता है कि अपने ही घर में यूँ उपेक्षित है हिन्दी आज भी।।

हिंदी क्यों नहीं बन सकती भारत की राष्ट्रभाषा?

भारत के 29 में से 20 राज्यों में हिंदी बोलने वाले बहुत कम हैं. बाकी जिन राज्यों को हम हिंदी भाषी मान लेते हैं उनमें भी जनजातीय और क्षेत्रीय भाषाएं बोलने वाले बहुतायत हैं.

हिंदी क्यों नहीं बन सकती भारत की राष्ट्रभाषा? भारत के 29 में से 20 राज्यों में हिंदी बोलने वाले बहुत कम हैं. बाकी जिन राज्यों को हम हिंदी भाषी मान लेते हैं उनमें भी जनजातीय और क्षेत्रीय भाषाएं बोलने वाले बहुतायत हैं.

आजादी के बाद हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के समर्थक महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू भी थे. इन्होंने एक या दो भाषाओं को पूरे देश की भाषा बनाने की मुहिम चला रखी थी. जबकि हिंदी विरोधी गुट इसका विरोध कर रहा था और अंग्रेजी को ही राज्य की भाषा बनाए रखने के पक्ष में था. 1949 में भारत की संवैधानिक समिति एक समझौते पर पहुंची. इसे मुंशी-आयंगर समझौता कहा जाता है. इसके बाद जिस भाषा को राजभाषा के तौर पर स्वीकृति मिली वह हिंदी (देवनागरी लिपि में) थी.

संविधान में भारत की केवल दो ऑफिशियल भाषाओं का जिक्र था. इसमें किसी 'राष्ट्रीय भाषा' का जिक्र भी नहीं था. इनमें से ऑफिशियल भाषा के तौर पर अंग्रेजी का प्रयोग अगले पंद्रह सालों में कम करने का लक्ष्य था. ये पंद्रह साल संविधान लागू होने की तारीख (26 जनवरी, 1950) से अगले 15 साल यानी 26 जनवरी, 1965 को खत्म होने वाले थे.

संविधान लागू होने के 15 साल बाद भी हिंदी को लेकर हुआ था बहुत बवाल

हिंदी समर्थक राजनेता जिसमें बालकृष्ण शर्मा और पुरुषोत्तम दास टंडन शामिल थे. उन्होंने अंग्रेजी को अपनाए जाने का विरोध किया. इस कदम को साम्राज्यवाद का अवशेष बताया. और साथ ही केवल हिंदी को भारत की राष्ट्रीय भाषा बनाए जाने के लिए विरोध प्रदर्शन किए. उन्होंने इसके लिए कई प्रस्ताव रखे लेकिन कोई भी प्रयास सफल नहीं हो सका क्योंकि हिंदी अभी भी दक्षिण और पूर्वी भारत के राज्यों के लिए अनजान भाषा ही थी. 1965 में जब हिंदी को सभी जगहों पर आवश्यक बना दिया गया तो तमिलनाडु में हिंसक आंदोलन हुए.

जिसके बाद कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने तय किया कि संविधान के लागू हो जाने के 15 साल बाद भी अगर हिंदी को हर जगह लागू किए जाने पर अगर भारत के सारे राज्य राजी नहीं हैं तो हिंदी को भारत की एकमात्र ऑफिशियल भाषा नहीं बनाया जा सकता है. शायद ऐसा हो जाता तो भारत की यह एकमात्र ऑफिशियल भाषा, राष्ट्रभाषा कही जा सकती थी.

इसके बाद सरकार ने राजभाषा अधिनियम, 1963 लागू किया. इसे 1967 में संशोधित किया गया. जिसके जरिए भारत ने एक द्विभाषीय पद्धति को अपना लिया. ये दोनों भाषाएं पहले वाली ही थीं, अंग्रेजी और हिंदी.

बढ़ चुकी थी क्षेत्रीय भाषाओं के पहचान पाने की चिंता

1971 के बाद, भारत की भाषाई पॉलिसी का सारा ध्यान क्षेत्रीय भाषाओं को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में जोड़ने पर रहा. जिसका मतलब था कि ये भाषाएं भी ऑफिशियल लैंग्वेज कमीशन में जगह पाएंगी और उस स्टेट की भाषा के तौर पर इस्तेमाल की जाएंगी. यह कदम बहुभाषाई जनता का भाषा को लेकर गुस्सा कम करने के लिए उठाया गया था. आजादी के वक्त इसमें 14 भाषाएं थीं, जो 2007 तक बढ़कर 22 हो गई थीं.

वर्तमान सरकार ने भी जगाई थी आशा

वर्तमान ॐ सरकार ने भी इस दिशा में बहुत सी आशाएं जगाई थीं. 2014 में, सरकार ने आते ही अपने अधिकारियों और मंत्रियों को सोशल मीडिया पर सरकारी पत्रों में हिंदी का प्रयोग करने का आदेश दिया था. स्वयं प्रधानमंत्री मोदी भी अंग्रेजी में सहज होते हुए भी अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी हिंदी में बोलते दिख जाते हैं. हालांकि फिर भी हिंदी के राष्ट्रभाषा बनने की संभावना बहुत कम ही है.

दरअसल जितना बताया जाता है उतने लोग भी नहीं बोलते हिंदी

25 जनवरी, 2010 को दिए एक फैसले में गुजरात हाई कोर्ट ने अपने एक फैसले में कहा था, भारत की बड़ी जनसंख्या हिंदी को राष्ट्रीय भाषा मानती है. ऐसा कोई भी नियम रिकॉर्ड में नहीं है. न ही कोई ऐसा आदेश पारित किया गया है जो हिंदी के देश की राष्ट्रीय भाषा होने की घोषणा करता हो.

अक्सर कहा जाता है कि करीब 125 करोड़ की जनसंख्या वाले भारत में 50 फीसदी से ज्यादा लोग हिंदी बोलते हैं. साथ ही गैर हिंदी भाषी जनसंख्या में भी करीब 20 फीसदी लोग हिंदी समझते हैं. इसलिए हिंदी भारत की आम भाषा है. लेकिन कई भाषाविदों का कहना है कि हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ के लोगों को हिंदी भाषियों में गिन लिया जाता है, वे लोग हिंदी भाषी नहीं हैं. और उनमें से बहुत से लोगों की भाषा जनजातीय या क्षेत्रीय है. ऐसे में इन्हें हिंदीभाषी के तौर पर गिन लेना सही नहीं है.

देश के 29 में से 20 राज्य हैं गैर हिंदी-भाषी

इसके अलावा भारत के दक्षिण में केरल, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक. पश्चिम में गोवा, महाराष्ट्र और गुजरात. भारत के उत्तर-पश्चिम में पंजाब और जम्मू-कश्मीर. पूर्व में ओडिशा और पश्चिम बंगाल. उत्तरपूर्व में सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, त्रिपुरा, नगालैंड, मणिपुर, मेघालय और असम. ये इस देश के 29 में से 20 राज्य हैं जिनमें हिंदीभाषी बहुत कम हैं. ऐसे में हिंदी राष्ट्रभाषा हो ही नहीं सकती.

इसके अलावा भारत में ही हिंदी से कहीं पुरानी भाषाएं तमिल, कनन्ड़, तेलुगू, मलयालम, मराठी, गुजराती, सिंधी, कश्मीरी, ओडि़या, बांग्ला, नेपाली और असमिया हैं. ऐसे में एक नई भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा दे देना सही नहीं होगा.

हिन्दी माँ का आशीष बना मेरा सौभाग्य

कैलाश बिहारी सिंघल

एक गरीब लड़का जिसे ग्यारहवीं कक्षा की परीक्षा में दो विषय में पूरक मिली थी, पूरक परीक्षा केंद्र जिला या संभाग स्थल पर ही हुआ करते थे, गरीब होने के कारण वह पूरक परीक्षा देने के लिये नही जा सका और स्कूल की पढ़ाई छोड़कर एक सेठ के यहां 100 रुपये महीने की नोकरी करने लगा, उस लड़के की हिन्दी की लिखावट बहुत सुंदर स्पस्ट और शुद्ध थी, सेठ ने उसकी प्रतिभा देखकर पदोनन्ति कर मुनीम (लेखापाल) बनाते हुवे उसकी तनख्वाह 125 रुपया महीना कर दी, लड़का बड़ा खुश हुआ...और ज्यादा मेहनत से वह बही खाते लिखने लगा...!

इसी दौरान नगर में कवि सम्मेलन का आयोजन हुवा...

जिसमें उस समय की हिन्दी काव्य जगत की हस्तियों में प्रसिद्ध कवयित्री डॉ. प्रभा ठाकुर, श्रद्धेय माया गोविंद, डॉ. हरिओम पँवार आदि कविगणों ने काव्य पाठ किया...!

डॉ. प्रभा ठाकुर की एक कविता ने उस लड़के को इतना साहस दिया कि वह सकारात्मकता के साथ नई सोच नई ताकत को धारण कर कुछ नया कीर्तिमान रचने का मन बनाकर अपने दायित्वों को निभाते हुए सामाजिक मंचों पर उन हिन्दी कविताओं को सुनाने लगा जिनमें भाव की प्रधानता थी...

उसकी समाज के उच्चवर्गीय लोगों की निगाह में जगह बनने लगी,

एक सज्जन पुरुष ने उस लड़के की प्रतिभा को पहचाना...वो जिनका नाम श्री रमेश गर्ग था, लायन्स क्लब के सचिव थे, उस जमाने में कम्प्यूटर नही था, सभी पत्र आदि हस्त लिखित ही भेजना पड़ता था, श्री रमेश गर्ग ने उस लड़के को बुलाकर कहा कि तुम यदि मुझे रात्रि का खाली समय देकर मेरे पत्र लिख दिया करो, लड़के ने हां कर दी..और नित्य प्रति उनके कार्यालय में जाने लगा, और उस वर्ष श्री गर्ग को पत्राचार के कारण लायन्स डिस्ट्रिक्ट में सर्वश्रेष्ठ सचिव का अवार्ड मिला...

जब श्री गर्ग लायन्स क्लब के अध्यक्ष बने तब उन्होंने उस लड़के को लायन्स क्लब का सदस्य बनने को प्रेरित किया, लेकिन क्लब की फीस 500 रुपया प्रति वर्ष होने के कारण उसने मना कर दिया, अतएव फीस गर्ग जी ने भरकर उसे अपना लायन सचिव मनोनीत कर दिया...

लायन्स और समाज के कार्यक्रमों में उस लड़के की साहित्यिक हिन्दी कविताएं गूंजने लगी, सबने पसंद की, उस लड़के की ईमानदारी के सभी कायल हो गए क्यों कि वह कविता सुनाने से पहले उस कविता के मूल रचनाकार का नाम जरूर लेता था..

दूर दूर तक होने वाली बैठकों में उसे आमन्त्रित किया जाता था..

1978 में उसकी शादी हो गई..उसकी तनख्वाह भी बढ़कर 300 रुपये हो गई, लायन्स क्लब में बैंक अधिकारी भी थे, उन्होंने अच्छे अक्षर और माइक पर अच्छे संचालन को देखते हुए उसे अस्थाई तौर पर बैंक का कमीशन एजेंट बना दिया और बोला तुम हायर सेकंडरी कर लो, तो बैंक की स्थायी नोकरी मिल सकती है, उसने निजी तौर पर परीक्षा दी, प्रथम स्थान से पास हुआ, जब बैंक की स्थायी नोकरी के लिये आवेदन किया तब तक उम्र 26 पार हो चुकी होने से आवेदन निरस्त हो गया...

अफसोस के इन पलों में डॉ.प्रभा ठाकुर की कविता...

ङदिल जलाने से क्या होगा गम सुनाने से क्या होगा...ङ

ङज़िन्दगी मुस्कुराएगी प्यार के गीत गाये जा...!ङ

ने उसे गज़ब का सम्बल दिया...

जो ऊर्जा का संचार हुवा कि 300 रुपये की नोकरी करने वाला कैलाश आज दस दस हज़ार के चार सहयोगियों के साथ व्यापार में सफल होकर प्रख्यात हुआ...

अब नई तकनीक ने व्हाट्सएप की दुनिया ने तो कैलाश को कई अवसर प्रदान कर दिये...

एक समूह बनाया... ङ'काव्यप्रेमियों की महफ़िल'ङ

समूहों में काव्यप्रेमियों में अपनी निस्वार्थ हिन्दी साहित्य सेवा में होने के फल स्वरूप...

ङसौभाग्य से अंतरा शब्दशक्ति से जुड़ गया...ङ

अंतरा में स्वरचित रचना ही भेज सकते थे...अब जुड़ तो गये पर सिर्फ पढ़ो, कुछ स्वयं की लिखी हो तो लिखो वरना चुप बैठो...

अंतरा की संस्थापक संचालिका श्रद्धेय बहन प्रीति जी सुराना को मैनें अपनी पीड़ा बताई तो बहन बोली कि भाई चार पंक्तियां लिखो पर स्वयं की लिखो...

डॉ. प्रीति जी सुराना की प्रेरणा से कुछ कुछ लिखने का प्रयास किया...

मातृभाषा उन्नयन संस्थान के अध्यक्ष डॉ.अर्पण जी जैन ने कैलाश सिंघल को अपना राष्ट्रीय सचिव बना दिया...

अंतरा शब्दशक्ति सम्मान और राष्ट्र गौरव अवार्ड प्राप्त कैलाश अब कैलाश बिहारी सिंघल बन गया जो

सिर्फ और सिर्फ हिन्दी माँ का आशीष है...!

एक गरीब लड़का जिसे ग्यारहवीं कक्षा की परीक्षा में दो विषय में

पूरक मिली थी, पूरक परीक्षा केंद्र जिला या संभाग स्थल पर ही हुआ करते थे, गरीब होने के कारण वह पूरक परीक्षा देने के लिये नही जा सका और स्कूल की पढ़ाई छोड़कर एक सेठ के यहां 100 रुपये महीने की नोकरी करने लगा, उस लड़के की हिन्दी की लिखावट बहुत सुंदर स्पस्ट और शुद्ध थी, सेठ ने उसकी प्रतिभा देखकर पदोनन्ति कर मुनीम (लेखापाल) बनाते हुवे उसकी तनख्वाह 125 रुपया महीना कर दी, लड़का बड़ा खुश हुआ...और ज्यादा मेहनत से वह बही खाते लिखने लगा...!

इसी दौरान नगर में कवि सम्मेलन का आयोजन हुवा...

जिसमें उस समय की हिन्दी काव्य जगत की हस्तियों में प्रसिद्ध कवयित्री डॉ. प्रभा ठाकुर, श्रद्धेय माया गोविंद, डॉ. हरिओम पँवार आदि कविगणों ने काव्य पाठ किया...!

डॉ. प्रभा ठाकुर की एक कविता ने उस लड़के को इतना साहस दिया कि वह सकारात्मकता के साथ नई सोच नई ताकत को धारण कर कुछ नया कीर्तिमान रचने का मन बनाकर अपने दायित्वों को निभाते हुए सामाजिक मंचों पर उन हिन्दी कविताओं को सुनाने लगा जिनमें भाव की प्रधानता थी...

उसकी समाज के उच्चवर्गीय लोगों की निगाह में जगह बनने लगी,

एक सज्जन पुरुष ने उस लड़के की प्रतिभा को पहचाना...वो जिनका नाम श्री रमेश गर्ग था, लायन्स क्लब के सचिव थे, उस जमाने में कम्प्यूटर नही था, सभी पत्र आदि हस्त लिखित ही भेजना पड़ता था, श्री रमेश गर्ग ने उस लड़के को बुलाकर कहा कि तुम यदि मुझे रात्रि का खाली समय देकर मेरे पत्र लिख दिया करो, लड़के ने हां कर दी..और नित्य प्रति उनके कार्यालय में जाने लगा, और उस वर्ष श्री गर्ग को पत्राचार के कारण लायन्स डिस्ट्रिक्ट में सर्वश्रेष्ठ सचिव का अवार्ड मिला...

जब श्री गर्ग लायन्स क्लब के अध्यक्ष बने तब उन्होंने उस लड़के को लायन्स क्लब का सदस्य बनने को प्रेरित किया, लेकिन क्लब की फीस 500 रुपया प्रति वर्ष होने के कारण उसने मना कर दिया, अतएव फीस गर्ग जी ने भरकर उसे अपना लायन सचिव मनोनीत कर दिया...

लायन्स और समाज के कार्यक्रमों में उस लड़के की साहित्यिक हिन्दी कविताएं गूंजने लगी, सबने पसंद की, उस लड़के की ईमानदारी के सभी कायल हो गए क्यों कि वह कविता सुनाने से पहले उस कविता के मूल रचनाकार का नाम जरूर लेता था..

दूर दूर तक होने वाली बैठकों में उसे आमन्त्रित किया जाता था..

1978 में उसकी शादी हो गई..उसकी तनख्वाह भी बढ़कर 300 रुपये हो गई, लायन्स क्लब में बैंक अधिकारी भी थे, उन्होंने अच्छे अक्षर और माइक पर अच्छे संचालन को देखते हुए उसे अस्थाई तौर पर बैंक का कमीशन एजेंट बना दिया और बोला तुम हायर सेकंडरी कर लो, तो बैंक की स्थायी नोकरी मिल सकती है, उसने निजी तौर पर परीक्षा दी, प्रथम स्थान से पास हुआ, जब बैंक की स्थायी नोकरी के लिये आवेदन किया तब तक उम्र 26 पार हो चुकी होने से आवेदन निरस्त हो गया...

बच्चों 'हिन्दी दिवस' आने वाला है , बताओ इसे एक यादगार दिन बनाने के लिये क्या किया जाए।

रविः मैम वैलेंटाइन डे जैसे हिन्दी डे पर गुलाब और केक लाते हैं।

हेमंत : हिन्दी डे नहीं हिन्दी दिवस

रविः what ever एक ही बात है।

हेमंतः नहीं दोस्त एक बात नहीं।ये कोई वैलेंटाइन डे, मदर्स डे, फादर्स डे नहीं ये हिन्दी दिवस की बात हो रही है।

रविः अच्छा अब तुम हमें बताओगे की क्या सही है क्या गलत। अपनी दकियानूसी सोच अपने पास रखो। बाबा आदम के ज़माने के प्राणी।

हेंमत : चुप रहने में ही भलाई है, भैंस के आगे बीन बजाने से क्या फायदा।

रविः how dare u call me भैंस

अध्यापकः दोनों का बचाव करते हुए डांटते हुए बोलीं आप दोनों चुप हो जाएं।

हिन्दी दिवस कोई औपचारिक दिवस, त्योहार या मौज मस्ती नहीं। ये एक चेतना है जिस से आपको हिन्दी भाषा के प्रति रुझान हो, उस से लगाव और आप उसकी अहमियत को समझ सकें। जैसे किसी भी व्यक्ति के लिये उसकी माँ की अहमियत ,उसकी पहचान , उसका साथ बेहद जरूरी है उसी तरह हर इंसान को अपनी मातृभाषा हिन्दी से भी उतना ही प्रेम होना चाहिए। आप किसी भी प्रांत, सभ्यता, जाति के हों हिन्दी हमारी पहचान है जो आधुनिकरण के चलते लुप्त हो रही है।

इसी लिये हिन्दी दिवस एक दिव्य ज्योति है जिस का प्रकाश जन जन तक फैलाना है।

सभी बच्चे शांत , सुनन ,एकटक अपनी अध्यपिका को देख सुन रहे थे और सोच रहे थे सिर्फ एक ही दिन , या हफ्ता भर, महीना भर ही क्यों 'हिन्दी दिवस' , जब हम दिल से इस भाषा को अपना लें तो अलग से एक दिवस मनाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी।

अध्यपिका भी मन ही मन खुश थीं की उनका संदेश सही मायनों में बच्चों के दिलों तक पहुंच गया था।

-मीनाक्षी सुकुमारन

हिंदी का राष्ट्रभाषा के रूप में विकास

हिंदी भारतीय गणराज की राजकीय और मध्य भारतीय- आर्य भाषा है। सन 2001 की जनगणना के अनुसार, लगभग 25.79 करोड़ भारतीय हिंदी का उपयोग मातृभाषा के रूप में करते हैं, जबकि लगभग 42.20 करोड़ लोग इसकी 50 से अधिक बोलियों में से एक इस्तेमाल करते हैं। सन 1998 के पूर्व, मातृभाषियों की संख्या की दृष्टि से विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं के जो आँकड़े मिलते थे, उनमें हिन्दी को तीसरा स्थान दिया जाता था।

राष्ट्रभाषा क्या है

राष्ट्रभाषा का शाब्दिक अर्थ है–समस्त राष्ट्र में प्रयुक्त भाषा अर्थात् आमजन की भाषा (जनभाषा)। जो भाषा समस्त राष्ट्र में जन-जन के विचार-विनिमय का माध्यम हो, वह राष्ट्रभाषा कहलाती है।

राष्ट्रभाषा राष्ट्रीय एकता एवं अंतर्राष्ट्रीय संवाद सम्पर्क की आवश्यकता की उपज होती है। वैसे तो सभी भाषाएँ राष्ट्रभाषाएँ होती हैं, किन्तु राष्ट्र की जनता जब स्थानीय एवं तत्कालिक हितों व पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर अपने राष्ट्र की कई भाषाओं में से किसी एक भाषा को चुनकर उसे राष्ट्रीय अस्मिता का एक आवश्यक उपादान समझने लगती है तो वही राष्ट्रभाषा है।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्रभाषा की आवश्यकता होती है। भारत के सन्दर्भ में इस आवश्यकता की पूर्ति हिंदी ने की। यही कारण है कि हिंदी स्वतंत्रता संग्राम के दौरानड1.राष्ट्रभाषा बनी।

राष्ट्रभाषा शब्द कोई संवैधानिक शब्द नहीं है, बल्कि यह प्रयोगात्मक, व्यावहारिक व जनमान्यता प्राप्त शब्द है।

राष्ट्रभाषा सामाजिक, सांस्कृतिक स्तर पर देश को जोड़ने का काम करती है अर्थात् राष्ट्रभाषा की प्राथमिक शर्त देश में विभिन्न समुदायों के बीच भावनात्मक एकता स्थापित करना है।

राष्ट्रभाषा का प्रयोग क्षेत्र विस्तृत और देशव्यापी होता है। राष्ट्रभाषा सारे देश की सम्पर्क-भाषा होती है। इसका व्यापक जनाधार होता है।

राष्ट्रभाषा हमेशा स्वभाषा ही हो सकती है क्योंकि उसी के साथ जनता का भावनात्मक लगाव होता है।

राष्ट्रभाषा का स्वरूप लचीला होता है और इसे जनता के अनुरूप किसी रूप में ढाला जा सकता है।

अंग्रेज़ों का योगदान

राष्ट्रभाषा सारे देश की सम्पर्क भाषा होती है। हिंदी दीर्घकाल से सारे देश में जन-जन के पारस्परिक सम्पर्क की भाषा रही है। यह केवल उत्तरी भारत की नहीं, बल्कि दक्षिण भारत के आचार्यों वल्लभाचार्य, रामानुज, रामानंद आदि ने भी इसी भाषा के माध्यम से अपने मतों का प्रचार किया था। अहिंदी भाषी राज्यों के भक्त-संत कवियों (जैसे–असम के शंकरदेव, महाराष्ट्र के ज्ञानेश्वर व नामदेव, गुजरात के नरसी मेहता, बंगाल के चैतन्य आदि) ने इसी भाषा को अपने धर्म और साहित्य का माध्यम बनाया था।

यही कारण था कि जनता और सरकार के बीच संवाद स्थापना के क्रम में फ़ारसी या अंग्रेज़ी के माध्यम से दिक्कतें पेश आईं तो कम्पनी सरकार ने फ़ोर्ट विलियम कॉलेज में हिन्दुस्तानी विभाग खोलकर अधिकारियों को हिंदी सिखाने की व्यवस्था की। यहाँ से हिंदी पढ़े हुए अधिकारियों ने भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में उसका प्रत्यक्ष लाभ देकर मुक्त कंठ से हिंदी को सराहा।

सी. टी. मेटकाफ़ ने 1806 ई. में अपने शिक्षा गुरु जॉन गिलक्राइस्ट को लिखा– 'भारत के जिस भाग में भी मुझे काम करना पड़ा है, कलकत्ता से लेकर लाहौर तक, कुमाऊँ के पहाड़ों से लेकर नर्मदा नदी तक मैंने उस भाषा का आम व्यवहार देखा है, जिसकी शिक्षा आपने मुझे दी है। मैं कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक या जावा से सिंधु तक इस विश्वास से यात्रा करने की हिम्मत कर सकता हूँ कि मुझे हर जगह ऐसे लोग मिल जाएँगे जो हिन्दुस्तानी बोल लेते होंगे।'

टॉमस रोबक ने 1807 ई. में लिखा– 'जैसे इंग्लैण्ड जाने वाले को लैटिन सेक्सन या फ्रेंच के बदले अंग्रेज़ी सीखनी चाहिए, वैसे ही भारत आने वाले को अरबी-फ़ारसी या संस्कृत के बदले हिन्दुस्तानी सीखनी चाहिए।'

विलियम केरी ने 1816 ई. में लिखा– 'हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है।'

एच. टी. कोलब्रुक ने लिखा– 'जिस भाषा का व्यवहार भारत के प्रत्येक प्रान्त के लोग करते हैं, जो पढ़े-लिखे तथा अनपढ़ दोनों की साधारण बोलचाल की भाषा है, जिसको प्रत्येक गाँव में थोड़े बहुत लोग अवश्य ही समझ लेते हैं, उसी का यथार्थ नाम हिंदी है।'

जार्ज ग्रियर्सन ने हिंदी को 'आम बोलचाल की महाभाषा' कहा है।

इन विद्वानों के मंतव्यों से स्पष्ट है कि हिंदी की व्यावहारिक उपयोगिता, देशव्यापी प्रसार एवं प्रयोगगत लचीलेपन के कारण अंग्रेज़ों ने हिंदी को अपनाया। उस समय हिंदी और उर्दू को एक ही भाषा माना जाता था। अंग्रेज़ों ने हिंदी को प्रयोग में लाकर हिंदी की महती संभावनाओं की ओर राष्ट्रीय नेताओं एवं साहित्यकारों का ध्यान खींचा।

धर्म/समाज सुधारकों का योगदान

धर्म/समाज सुधार की प्रायः सभी संस्थाओं ने हिंदी के महत्त्व को भाँपा और हिंदी की हिमायत की।

ब्रह्म समाज (1828 ई.) के संस्थापक राजा राममोहन राय ने कहा, इस समग्र देश की एकता के लिए हिंदी अनिवार्य है। ब्रह्मसमाजी केशव चंद्र सेन ने 1875 ई. में एक लेख लिखा, भारतीय एकता कैसे हो, 'जिसमें उन्होंने लिखा– उपाय है सारे भारत में एक ही भाषा का व्यवहार। अभी जितनी भाषाएँ भारत में प्रचलित हैं, उनमें हिंदी भाषा

लगभग सभी जगह प्रचलित है। यह हिंदी अगर भारतवर्ष की एकमात्र भाषा बन जाए तो यह काम सहज ही और शीघ्र ही सम्पन्न हो सकता है। एक अन्य ब्रह्मसमाजी नवीन चंद्र राय ने पंजाब में हिंदी के विकास के लिए स्तुत्य योगदान दिया।

आर्य समाज (1875 ई.) के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती गुजराती भाषी थे एवं गुजराती व संस्कृत के अच्छे जानकार थे। हिंदी का उन्हें सिर्फ़ कामचलाऊ ज्ञान था, पर अपनी बात अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने के लिए तथा देश की एकता को मज़बूत करने के लिए उन्होंने अपना सारा धार्मिक साहित्य हिंदी में ही लिखा। उनका कहना था कि हिंदी के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। वे इस 'आर्यभाषा' को सर्वात्मना देशोनन्ति का मुख्य आधार मानते थे। उन्होंने हिंदी के प्रयोग को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया। वे कहते थे, 'मेरी आँखें उस दिन को देखना चाहती हैं, जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक सब भारतीय एक भाषा समझने और बोलने लग जाएँगे।

अरविन्द दर्शन के प्रणेता अरविन्द घोष की सलाह थी कि 'लोग अपनी-अपनी मातृभाषा की रक्षा करते हुए सामान्य भाषा के रूप में हिंदी को ग्रहण करें।'

थियोसोफ़िकल सोसाइटी (1875 ई.) की संचालिका एनी बेसेंट ने कहा था, 'भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न भागों में जो अनेक देशी भाषाएँ बोली जाती हैं, उनमें एक भाषा ऐसी है जिसमें शेष सब भाषाओं की अपेक्षा एक भारी विशेषता है, वह यह कि उसका प्रचार सबसे अधिक है। वह भाषा हिंदी है। हिंदी जानने वाला आदमी सम्पूर्ण भारतवर्ष में यात्रा कर सकता है और उसे हर जगह हिंदी बोलने वाले मिल सकते हैं। भारत के सभी स्कूलों में हिंदी की शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए।'

उपर्युक्त धार्मिक/सामाजिक संस्थाओं के अतिरिक्त प्रार्थना समाज[2], सनातन धर्म सभा[3], रामकृष्ण मिशन[4] आदि ने हिंदी के प्रचार में योग दिया।

इससे लगता है कि धर्म/समाज सुधारकों की यह सोच बन चुकी थी कि राष्ट्रीय स्तर पर संवाद स्थापित करने के लिए हिंदी आवश्यक है। वे जानते थे कि हिंदी बहुसंख्यक जन की भाषा है, एक प्रान्त के लोग दूसरे प्रान्त के लोगों से सिर्फ़ इस भाषा में ही विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। भावी राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को बढ़ाने का कार्य इन्हीं धर्म/समाज सुधारकों ने किया।

कांग्रेस के नेताओं का योगदान

1885 ई. में कांग्रेस की स्थापना हुई। जैसे-जैसे कांग्रेस का राष्ट्रीय आंदोलन ज़ोर पकड़ता गया, वैसे-वैसे राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय झण्डा एवं राष्ट्रभाषा के प्रति आग्रह बढ़ता ही गया।

1917 ई. में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कहा, 'यद्यपि मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।' तिलक ने भारतवासियों से आग्रह किया कि वे हिंदी सीखें।

महात्मा गाँधी राष्ट्र के लिए राष्ट्रभाषा को नितांत आवश्यक मानते थे। उनका कहना था, 'राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।' गाँधीजी हिंदी के प्रश्न को स्वराज का प्रश्न मानते थे– 'हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है।' उन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में सामने रखकर भाषा-समस्या पर गम्भीरता से विचार किया। 1917 ई. में भड़ौच में आयोजित गुजरात शिक्षा परिषद के अधिवेशन में सभापति पद से भाषण देते हुए गाँधीजी ने कहा,

राष्ट्रभाषा के लिए 5 लक्षण या शर्तें होनी चाहिए–

अमलदारों के लिए वह भाषा सरल होनी चाहिए।

यह ज़रूरी है कि भारतवर्ष के बहुत से लोग उस भाषा को बोलते हों।

उस भाषा के द्वारा भारतवर्ष का अपनी धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार होना चाहिए।

राष्ट्र के लिए वह भाषा आसान होनी चाहिए।

उस भाषा का विचार करते समय किसी क्षणिक या अल्पस्थायी स्थिति पर ज़ोर नहीं देना चाहिए।'

वर्ष 1918 ई. में हिंदी साहित्य सम्मेलन के इन्दौर अधिवेशन में सभापति पद से भाषण देते हुए गाँधी जी ने राष्ट्रभाषा हिंदी का समर्थन किया, 'मेरा यह मत है कि हिंदी ही हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा हो सकती है और होनी चाहिए।' इसी अधिवेशन में यह प्रस्ताव पारित किया गया कि प्रतिवर्ष 6 दक्षिण भारतीय युवक हिंदी सीखने के लिए प्रयाग भेजें जाएँ और 6 उत्तर भारतीय युवक को दक्षिण भाषाएँ सीखने तथा हिंदी का प्रसार करने के लिए दक्षिण भारत में भेजा जाए। इन्दौर सम्मेलन के बाद उन्होंने हिंदी के कार्य को राष्ट्रीय व्रत बना दिया। दक्षिण में प्रथम हिंदी प्रचारक के रूप में गाँधीजी ने अपने सबसे छोटे पुत्र देवदास गाँधी को दक्षिण में चेनन्ई भेजा। गाँधीजी की प्रेरणा से मद्रास (1927 ई.) एवं वर्धा (1936 ई.) में राष्ट्रभाषा प्रचार सभाएँ स्थापित की गईं।

वर्ष 1925 ई. में कांग्रेस के कानपुर अधिवेशन में गाँधीजी की प्रेरणा से यह प्रस्ताव पारित हुआ कि 'कांग्रेस का, कांग्रेस की महासमिति का और कार्यकारिणी समिति का काम-काज आमतौर पर हिंदी में चलाया जाएगा।' इस प्रस्ताव में हिंदी-आंदोलन को बड़ा बल मिला।

वर्ष 1927 ई. में गाँधीजी ने लिखा, 'वास्तव में ये अंग्रेज़ी में बोलने वाले नेता हैं, जो आम जनता में हमारा काम जल्दी आगे बढ़ने नहीं देते। वे हिंदी सीखने से इंकार करते हैं, जबकि हिंदी द्रविड़ प्रदेश में भी तीन महीने के अन्दर सीखी जा सकती है।

वर्ष 1927 ई. में सी. राजगोपालाचारी ने दक्षिण वालों को हिंदी सीखने की सलाह दी और कहा, 'हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी।'

वर्ष 1928 ई. में प्रस्तुत नेहरू रिपोर्ट में भाषा सम्बन्धी सिफ़ारिश में कहा गया था, 'देवनागरी अथवा फ़ारसी में लिखी जाने वाली हिन्दुस्तानी भारत की राष्ट्रभाषा होगी, परन्तु कुछ समय के लिए अंग्रेज़ी का उपयोग ज़ारी रहेगा।' सिवाय 'देवनागरी या फ़ारसी' की जगह 'देवनागरी' तथा 'हिन्दुस्तानी' की जगह 'हिंदी' रख देने के अंततः स्वतंत्र भारत के संविधान में इसी मत को अपना लिया गया।

वर्ष 1929 ई. में सुभाषचंद्र बोस ने कहा, 'प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती। अपनी प्रान्तीय भाषाओं की भरपूर

उन्नति कीजिए, उसमें कोई बाधा नहीं डालना चाहता और न हम किसी की बाधा को सहन ही कर सकते हैं। पर सारे प्रान्तों की सार्वजनिक भाषा का पद हिंदी या हिन्दुस्तानी को ही मिला है।'

वर्ष 1931 ई. में गाँधीजी ने लिखा, 'यदि स्वराज्य अंगेज़ी-पढ़े भारतवासियों का है और केवल उनके लिए है तो सम्पर्क भाषा अवश्य अंग्रेज़ी होगी। यदि वह करोड़ों भूखे लोगों, करोड़ों निरक्षर लोगों, निरक्षर स्त्रियों, सताए हुए अछूतों के लिए है तो सम्पर्क भाषा केवल हिंदी हो सकती है।' गाँधीजी जनता की बात जनता की भाषा में करने के पक्षधर थे।

वर्ष 1936 ई. में गाँधीजी ने कहा, 'अगर हिन्दुस्तान को सचमुच आगे बढ़ना है तो चाहे कोई माने या न माने राष्ट्रभाषा तो हिंदी ही बन सकती है, क्योंकि जो स्थान हिंदी को प्राप्त है, वह किसी और भाषा को नहीं मिल सकता है।'

वर्ष 1937 ई. में देश के कुछ राज्यों में कांग्रेस मंत्रिमंडल गठित हुआ। इन राज्यों में हिंदी की पढ़ाई को प्रोत्साहित करने का संकल्प लिया गया।

जैसे-जैसे स्वतंत्रता संग्राम तीव्रतम होता गया वैसे-वैसे हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का आंदोलन ज़ोर पकड़ता गया। 20वीं सदी के चौथे दशक तक हिंदी राष्ट्रभाषा के रूप में आम सहमति प्राप्त कर चुकी थी। वर्ष 1942 से 1945 का समय ऐसा था जब देश में स्वतंत्रता की लहर सबसे अधिक तीव्र थी, तब राष्ट्रभाषा से ओत-प्रोत जितनी रचनाएँ हिंदी में लिखी गईं उतनी शायद किसी और भाषा में इतने व्यापक रूप से कभी नहीं लिखी गई। राष्ट्रभाषा प्रचार के साथ राष्ट्रीयता के प्रबल हो जाने पर अंग्रेज़ों को भारत छोड़ना पड़ा।

भारत की एक चौथाई जनता भूखी और कुपोषित

प्रत्येक तीसरा भारतीय दरिद्र, मंत्रियों पर सैंकड़ों करोड़

इंडियन स्टेट हंगर इंडेक्स 2008 की रिपोर्ट, भारत की एक ऐसी तस्वीर पेश करती है, जिसे सहज स्वीकार कर पाना किसी के लिए भी आसान नहीं है। देश के 17 बड़े राज्यों को केन्द्र में रखते हुए यह स्टेट हंगर इंडेक्स तैयार किया गया है। इस रिपोर्ट के मुताबिक, सबसे भयावह स्थिति मध्यप्रदेश की है। जबकि पंजाब सबसे अच्छी हालत में है। 17 में से 12 राज्यों की हालत अत्यंत चिंताजनक बताई गई है। रिपोर्ट के मुताबिक, उन राज्यों में भी भूख और कुपोषण ज्यादा है, जहां आर्थिक विकास ठीक-ठाक हो रहा है।

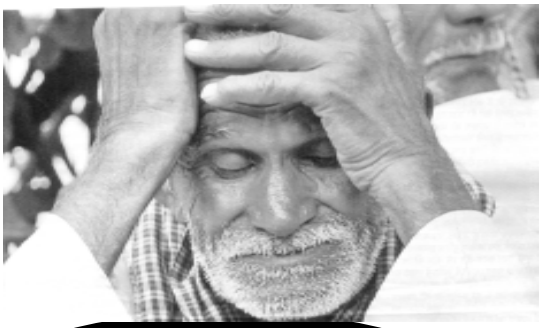

मध्यप्रदेश में हालात सबसे भयावह

हो सकता है कि बहुत से लोगों, खासकर हमारी सरकार को इस रिपोर्ट पर संदेह हो, क्योंकि इसे कुछ अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने मिलकर बनाया है, लेकिन तेंदुलकर कमेटी की रिपोर्ट के बारे में आप क्या कहेंगे? सुरेश तेंदुलकर प्रधानमंत्री के आर्थिक सलाहकार भी हैं। अपनी रिपोर्ट में उन्होंने कहा है कि देश में गरीबों की आबादी में दस फीसदी का इजाफा हुआ है। रिपोर्ट के मुताबिक 37 फीसदी भारतीय गरीब हैं।

खासकर भारतीय गांवों में गरीबी और अधिक बढ़ी है। यह लगभग 42 फीसदी है। कुल मिलाकर हर तीसरा भारतीय दरिद्र है।

यह कहानी भारत के आम लोगों और भारतीय गांवों की है। उन लोगों की, जो भूखे पेट सोने को मजबूर हैं। उन बच्चों की, जो कुपोषित हैं, जो पांच साल की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते काल के गाल में समा जाते हैं। हालांकि आंकड़ों के सहारे चलने वाली भारतीय सरकार भूख से होने वाली किसी भी मौत से इंकार करती रही है। आगे भी करती रहेगी, लेकिन सरकारी आंकड़ों से इतर भी एक सच है। ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2009 के आंकड़ों के मुताबिक विश्व में भूखे और कुपोषित लोगों के सूचकांक में भारत 65वें नंबर पर है। यानी भारत में सूखे और कुपोषित लोगों की संख्या पाकिस्तान, नेपाल, सूडान, पेरू, मालावी और मंगोलिया जैसे देशों से भी ज्यादा है। 23.9 फीसदी भूखी और कुपोषित जनता के साथ भारत चौरासी देशों की इस ग्लोबल हंगर सूची में 65वें स्थान पर है।

इसके अलावा पांच वर्ष से कम उम्र के अंडरवेट (उम्र के हिसाब से कम वजन) बच्चों की सूची में भारत बांग्लादेश, पूर्वी तिमोर और यमन के साथ-साथ खड़ा है। इन चार देशों में अंडरवेट बच्चों की संख्या चालीस फीसदी है। नाइजीरिया जैसे देश के मुकाबले भारत की प्रति व्यक्ति जीडीपी ज्यादा जरूर है, लेकिन भारत में नाइजीरिया के मुकाबले ज्यादा भूखे और कुपोषित लोग भी हैं। इस रिपोर्ट को अंतरराष्ट्रीय खाद्यान्न नीति एवं अनुसंधान संस्थान और कंसर्न वर्ल्डवाइड ने मिलकर तैयार किया है।

आश्चर्यजनक, लेकिन सच है कि यह भयावह तस्वीर उस देश की है, जहां के कुछ मंत्री और नौकरशाह मिलकर एक साल में करोड़ों का बोतलबंद पानी, चाय और कॉफी गटक जाते हैं।

जहां मंत्रियों की गाड़ियों और यात्राओं पर सालाना सैंकड़ों करोड़ रुपए खर्च हो जाते हैं। जहां भारी-भरकम योजनाओं के नाम पर जनता से टैक्स के रूप में मिले पैसों की बंदरबांट हो जाती है। जहां गोदामों में लाखों टन अनाज चूहे साफ कर देते हैं या वह सड़ जाता है, लेकिन लोगों को खाने के लिए नहीं मिल पाता।

हिन्दी जनभाषा की ओर अग्रसर- अहद प्रकाश

12 किताबों का विमोचन व हिंदी पर परिचर्चा सम्पन्न

भोपाल। भारत में हिन्दी का स्थान न केवल राष्ट्रभाषा बल्कि जनभाषा है, उक्त बात हिन्दी पखवाड़े के अंतर्गत अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन द्वारा मातृभाषा उनन्यन संस्थान के सौजन्य से प्रकाशित हिन्दी के विविध क्षेत्रों पर आधारित आठ पुस्तिकाओं एवं चार अन्य रचनाकारों की व्यक्तिगत कृतियों के विमोचन का कार्यक्रम जो शनिवार को हिन्दी भवन के महादेवी वर्मा कक्ष में हुआ, उसमें बतौर मुख्य अतिथि शामिल रहे वरिष्ठ साहित्यकार व समीक्षक अहद प्रकाश जी जिन्होंने उपरोक्त बात कही।

सरस्वती पूजन के साथ आरंभ हुए आयोजन कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार एवं अक्षरा पत्रिका की संपादक सुनीता खत्री जी द्वारा की गई। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ ग़ज़लकार अशोक मिज़ाज जी, सागर एवं वरिष्ठ साहित्यकार पो. जहीर कुरैशी जी रहे।

आयोजन में मातृभाषा उनन्यन संस्थान के सौजन्य से निःशुल्क प्रकाशित पुस्तकें डॉ. अर्पण जैन 'अविचल' इंदौर (म.प्र.) द्वारा लिखित हिन्दी 'आखिर क्यों' और 'हिन्दी ग्राम' के साथ डॉ प्रीति सुराना, वारासिवनी (म.प्र.) की 'विचार क्रांति' और 'गद्य लेखन का महत्व' के अतिरिक्त 'हिन्दी और तुष्टिकरण' - शुभ्रा झा, दरभंगा (बिहार), 'हिन्दी और सिनेमा' - सीमा शिवहरे 'सुमन', भोपाल (म.प्र.), 'हिंदी और गाँधीदर्शन' - डॉ राजलक्ष्मी शिवहरे, जबलपुर (म.प्र.), 'राष्ट्रभाषा और समाज' - जयति जैन 'नूतन, भोपाल (म.प्र.) एवं

इसके अतिरिक्त रामचंद्र किल्लेदार,ग्वालियर (म.प्र.) की 'खुली आँखों के सपने', डॉ वासिफ काजी इंदौर (म.प्र.) की 'अदीब', डॉ. उपासना पाण्डेय भिवाड़ी (राज.) की 'प्रेमानन्द राधेश्याम' और डॉ. प्रीति सुराना की ही 'काश!कभी सोचा होता,..' पुस्तकें भी विमोचित हुई।

परिचर्चा में आमंत्रित वक्ताओं ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के मार्ग पर चर्चा की एवं वर्तमान समय की मांग को सम्मिलित किया।

हिन्दी के प्रचार प्रसार और के साथ संस्था हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने हेतु प्रतिबद्ध है व देशभर में हस्ताक्षर बदलो अभियान का संचालन कर रही है। इसी संदर्भ में यह परिचर्चा सार्थक रही, जिसमें भोपाल के साहित्यकार सहित जनमानस ने हिस्सा लिया। उक्त जानकारी संस्थान के संवाद सेतु रोहित त्रिवेदी ने दी।

अब कैसे होगा दशहरा

-गरिमा सिंह

खड़े मिल गए चौराहे पर
आज मुझे श्री राम
बोले अब मैं लौट चला
वापस फिर सुरधाम।।
यहाँ जरूरत नहीं किसी को
अब पुरुषोत्तम श्री राम की
सवीच्च न्यायालय करे फैसला
पहले मेरे जन्म स्थान की।।
नाम पर मेरे रोज यहाँ न
जाने कितने परिवर्तन होते
रोज नए वादे होते और
बड़े - बड़े अनसन होते।।
कोई मंदिर बनवाता है
और कोई उसे गिरता है
कोई करे सन्देह जन्म पर
साक्ष्य कोई मंगवाता है।।
कोई कहता है रुको तनिक
अभी आदेश तो आ जाने दो
कोर्ट से अपने रामलला का
जन्मप्रमाण पत्र बन जाने दो।।
साबित करने दो दुनियाँ में
उनकी कौशल्या ही माई है
पिता श्री दशरथ और लक्ष्मण
संग भरत शत्रुघ्न भाई है।।
अयोध्या है जन्म भूमि और
चौदह वर्ष वनवास किया
साबित करने दो पहले की
इन्होंने ही लंका को साफ किया।।
तब जाकर कहीं मुक्ति मिलेगी
और तम्बू ये हट पायेगा
रामलला का मंदिर फिर से
शायद ही बन पाएगा ।।
कारसेवकों के मौतों का
कैसे कोई खण्डन होगा
कैसे बनेगा मंदिर प्रभु का
और पूजा रघुनन्दन का होगा।।
यही बात अब रामलला भी
सोच रहे हैं न्यायालय में खड़े -
खड़े
कहीं बाबरी बन न जाये
हम तम्बू में ही पड़े रहे।।
जब कीमत अब रही नही
वेदों और पुराणों की
न्यायालय अब न्याय करेगा
रामलला के आने की ।।
ये आडम्बर सहन नहीं है
मुझपर राजनीति अब बन्द करो
सहन नही होता अपमान
अब कोई उचित प्रबंध करो।।
रोज,रोज श्री राम के नारे
बड़े खोखले लगते है।।
राजनीतिक आश्वासन सारे
मुझे दोगले लगते हैं।।
इससे बेहतर होगा कि मै
सुरधाम निकल जाऊं
अब किस-किस को मैं अपने
होने का प्रमाण पत्र दिखलाऊँ।।
मै ही हूँ श्री राम ये कैसे
मै सबको समझाऊँगा
काटे मैंने दस शीश रावण के
साक्ष्य कहां से लाऊंगा।।
चारो तरफ अपराध का फैला
घनघोर अंधियारा है
अब कोर्ट ही करे सुनिश्चित
मैंने ही रावण को मारा है।।
सारे तथ्य जब साफ करोगे
तभी न्याय हो पायेगा
वरना सिर्फ वादों और भाषण से
मन्दिर ना बन पाएगा।।
न्यायालय में केश चलाकर
समय नही बर्बाद करो
हुआ बहुत अब देर निर्माण में
जल्दी से इंसाफ करो ।।
अगर नही बन पाया मंदिर
अब हिंदू आतंक मचा देंगे
राम नाम का मतलब सारी
दुनियाँ को समझा देंगे।।
अगर मनाना है दशहरा तो
आवाज उठाना होगा
रामलाल का मंदिर अब
जल्दी ही बनवाना होगा।।
वरना अगर अब देर हुई तो
कुछ फिर ना कर पाओगे
अबकी बार गर सत्ता बदली
जीवन भर पछताओगे ।।

रावण की पुकार

-संजय जैन

रावण कहता है एक बात मेरी सुन लो /
क्यों वर्षी से मुझे यू जलाये जा रहे हो /
फिर भी तुम मुझे जला नहीं प् रहे हो /
हर वर्ष जलाते जलाते थक जाओगे /
और एक दिन खुद ही जल जाओगे / १/
मैंने सीता को हरा, हरि के लिए /
राक्षक कुल की मुक्ति के लिए /
मैंने प्रभु दर्शन कराये राक्षक जाती को /
तुम तो मानव होकर भी नहीं कर पाए / २/
आज रावण से राम डरते है /
क्योकि आज लक्ष्मण ही सीता को हरते है /
आज घर घर में छुपे हुए है रावण /
आग कितने रावणो को तुम लगाओगे / ३/
सीता को हरना मेरा तो एक बहाना था /
मुझको राम हाथो से मुक्ति पाना था /
में तो मरकर भी राम को पा गया /
तुम तो जीकर भी राम को न पा रहे हो / ४/

मुसाफिर

-डॉ आशा गुप्ता'श्रेया'

जिंदगी आ बैठ मेरी पहलु में
करे कुछ बातें और मुलाक़ातें
हम मुसाफिर इस राह के
कदम कदम संग रहे चलते
पाने को ख़ुशी शांति ये जनम
गोता राही समन्दर में लगाते
सब यहाँ है ढूंढते हीरे मोती
जाने क्या-क्या पाते खोते
तू मचलती उन जजबातों में
औ दिल रातों में है सुलगाते
ख्वाब अनेक दिल व् आँखों में
मुसफिर हूँ यारा राह ना रूके
इश्क जो तुझसे ख्यालातों में
उम्मीद लोग जोड़ते तोड़ते नाते
अनेक जलवे जबतक प्राण दम
रस्म दुनिया की हैं जाते निभाते
कर्म करते चलते रहूँ ये जनम
राज सबके दिल प्रियतम करते
औ कर समर्पण प्रभु चरणों में
जब प्राण शरीर औ मैं हो जाते
यात्रा चुलबुली पीड़ा हँसे हम
हम मुसाफिर बस चलते हैं जाते

दशहरा २०१८

आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को दशहरा मनाया जाता है। सम्पूर्ण भारत में यह त्यौहार उत्साह और धार्मिक निष्ठा के साथ मनाया जाता है। विष्णु जी के अवतार के द्वारा अधर्मी रावण को मारे जाने की घटना को याद करते हुए हर साल यह त्यौहार (अेर्प्पे) मनाया जाता है।

इस वर्ष दशहरा 19 अक्टूबर 2018 को मनाया जाएगा। इस विजयदशमी विजय मुहूर्त दोपहर 01 बजकर 58 मिनट से लेकर 02 बजकर 43 मिनट तक का है। इस दौरान अपराजिता पूजा करना शुभ माना जाता है। मान्यता है कि विजय मुहूर्त के दौरान शुरु किए गए कार्य का फल सदैव शुभ होता है।

दशहरे का धार्मिक महत्व

मान्यता है कि इस दिन श्री राम जी ने रावण को मारकर असत्य पर सत्य की जीत प्राप्त की थी, तभी से यह दिन विजयदशमी या दशहरे के रूप में प्रसिद्ध हो गया। दशहरे के दिन जगह-जगह रावण-कुंभकर्ण और मेघनाथ के पुतले जलाए जाते हैं।

देवी भागवत के अनुसार इस दिन मां दुर्गा ने महिषासुर नामक राक्षस को परास्त कर देवताओं को मुक्ति दिलाई थी इसलिए दशमी के दिन जगह-जगह देवी दुर्गा की मूतिन्यों की विशेष पूजा की जाती है।

पुराणों और शास्त्रों में दशहरे से जुड़ी कई अन्य कथाओं का वर्णन भी मिलता है। लेकिन सबका सार यही है कि यह त्यौहार असत्य पर सत्य की जीत का प्रतीक है।

यह भी मान्यता है की नवरात्री के 9 दिनों को तीन गुणों से वर्गीकृत किया जाता हैः तामस राजस और सत्त्व। पहले तीन दिन तामस से जुड़े है जिसमे उग्र प्रकार की देवियाँ जैसे काली और दुर्गा आती है। अगले तीन दिन देवी लक्ष्मी से सम्बंधित है। और आखरी के तीन दिन देवी सरस्वती से सम्बंधित है जो सत्त्व की परिचायक है। नवरात्री खत्म होने के बाद दसवे दिन को विजयादशमी आती है। इसका अर्थ यह है की मनुष्य ने नवरात्री की तीन गुणों पर विजय प्राप्त कर ली है। क्यूंकि मनुष्य ने इन तीनो गुणों को समझा लेकिन किसी भी गुण के सामने समर्पण नहीं किया इसीलिए दसवे दिन को विजय का दिन या विजयादशमी कहा जाता है। इससे यह साबित होता है की हमारे जीवन की महतवपूर्ण मामलों पर श्रध्दा और कृतज्ञता से ध्यान देने से हम सफलता और जीत हासिल कर सकते है।

दशहरा पूजा विधि

दशहरे के दिन कई जगह अस्त्र पूजन किया जाता है। वैदिक हिन्दू रीति के अनुसार इस दिन श्रीराम के साथ ही लक्ष्मण जी, भरत जी और शत्रुघ्न जी का पूजन करना चाहिए।

इस दिन सुबह घर के आंगन में गोबर के चार पिण्ड मण्डलाकार (गोल बर्तन जैसे) बनाएं। इन्हें श्री राम समेत उनके अनुजों की छवि मानना चाहिए। गोबर से बने हुए चार बर्तनों में भीगा हुआ धान और चांदी रखकर उसे वस्त्र से ढक दें। फिर उनकी गंध, पुष्प और द्रव्य आदि से पूजा करनी चाहिए। पूजा के पश्चात ब्राह्मणों को भोजन कराकर स्वयं भोजन करना चाहिए। ऐसा करने से मनुष्य वर्ष भर सुखी रहता है।

महात्मा जी

-शशांक मिश्र

गांव में बहती नदी किनारे
एक महात्मा जी रहते थे
सभी को कर्म अपना करना है
प्रवचन में प्रतिदिन कहते थे
दूर-दूर से श्रोता थे आते
सुन-सुन उपदेश वापस जाते
धन्य कर रहे थे धरा को
जो शरीर को साधन बतलाते
प्रातः काल भ्रमण को जाते
नदी सनन कर वापस आते
एक दिन वे घूमने गए
नदी सनन को उतर गए
देखा केकड़ा पानी में डूब रहा
मानों महात्मा का मन ऊब रहा
तुरन्त निकालने की ठान लिया
केकड़ा ने उंगली में काट लिया
बार-बार वह पानी में गिरता
मन महात्मा का न फिरता
उन्होंने थी बचाने की ठानी
केंकड़ा की काटने में सानी
तभी वहां एक चरवाहा आया
देख दृश्य यह वह चकराया
बोला- महात्मा क्या करते हो
काट रहा पर जीवन धरते हो
अपनी उंगली भी देखो जरा
समझाओ कुछ ये परम्परा
यह तो दुष्ट बड़ा है लगता
उपकारों पर न ध्यान जरा
चरवाहे की बातें सुनकर
महात्मा हल्के से मुस्कराये
बोले - बेटा है कर्म बड़ा
जो अपना-अपना सभी निभाये
मैं तो अपना कर्म यहां पर
इसको बचाने का करता हूं
इसका भी है कर्म काटना
जिसको यह पूरा करता है
महात्मा जी के वचन सुने
चरवाहे के बात समझ में आई
बच्चों कर्म है अपना करना
चाहे हो दुश्मन या भाई ।

सोच समझ मतदान

-बाबू लाल शर्मा

जागरूक होकर करो,मतदाता मतदान।
राजधर्म निर्वाह को, करिये ये शुभदान।।
सब कामों को छोड़कर,करना है यह काम।
एक दिवस मतदान का,बाकी दिन आराम।।
सही करो मतदान तो, हो उत्तम सरकार।
मन का प्रत्याशी चुनो,मत दे कर हर बार।।
डरो नहीं, झिझको नहीं, रहे प्रशासन संग।
अच्छा प्रत्याशी चुनो, लोकतंत्र के अंग।।
अब आलस को त्यागिए,चलो बूथ परआज।
निभन्य हो मतदान कर, लोकतंत्र के काज।।
मन से जो मतदान हो ,हो अच्छी सरकार।
कर चुनाव सरकार का,सुख से जीवन सार।।
पहचान पत्र साथ ले, जाना देने वोट।
आना नहीं है लोभ में,भय दारू या नोट।।
ई. वी. एम. मशीन से , करना है मतदान।
यह अपना अधिकार है,इसको सब ले जान।।
सब को प्रेरित कर चलो,करना है मतदान।
मत के बल सरकार है, लोकतंत्र की शान।।
निष्पक्षी मतदान से, हो चुनाव हर बार।
अच्छे नेता जीतकर, बने भली सरकार।।
लोकतंत्र की रीढ़ हो, मतदाता भगवान।
तुमसे ही सधते सदा,सब जन के अरमान।।
अच्छे लोगों को चुनो ,बने भली सरकार।
सबका साथ विकास हो,नव विचार संचार।।
सर्व मुख्य अधिकार है, लोकतंत्र मतदान।
इसका सद उपयोग हो,रहो मती अनजान।।
बी.एल.ओ. से बात कर ,नाम सूचना जान।
साथ रखो पहचान भी,फिर करना मतदान।।
झूँठे झाँसों से बचो, अंतर्मन की मान।
जाति पंथ को भूलकर,करना है मतदान।।
सभी प्रलोभन त्याग के,रख मन का ईमान।
अच्छे से अच्छा चुनें, मन से कर मतदान।।
नागरिकों के काम हो,ऐसी हो सरकार।

सबक सुने नुमाइंदा ,मतदाता मनुहार।।
मूल तत्व मतदान है,लोकतंत्र की शान।
निर्माता सरकार के ,मतदाता हैं जान।।
वर्ष अठारह आयु हो,लिख सूची मे नाम।
मतदाता बन नागरिक, वोट देय आराम।।
बहु बेटी सब साथ में , मतदाता अधिकार।
सोच समझ मतदान कर,सपने हों साकार।।
मत का सत उपयोग हो ,लोकतंत्र कें माँहि।
हो विकास नित ही नये,देश चमन हो जाँहि।।
मत की शक्ति अनूप है, करो वोट भरपूर।
जाति पाँति लालच बला,इनसे रहकर दूर।।
संसद और विधायिका,हैं सब मत के जोर।
जागरूक मतदान हो, सत प्रेरण पुरजोर।।
जनता के सेवक चुनो,कर्मठ और निष्काम।
मतदाता भगवान हैं, जब चुनाव हों आम।।
बहकावें में दे दिया, तुमने गर जो वोट।
वर्षों तक पछताओगे, पड़े हकों पर चोट।।
दल दलदल में मत पड़ो,व्यक्ति चुनो महान।
लोकतंत्र मजबूत हो, हम भी लगें सुजान।।
मत की ताकत है बड़ी,समझ लेय मन माय।
एक वोट से हार हो , उनसे पूछो जाय।।
ईंट एक से एक जुड़,बने महल आकार।
एक एक मत से बने ,प्रजातंत्र सरकार।।
भावुकता में मत करो ,कभी यार मतदान।
बिना विचारे फैसला ,होती खुद की हान।।
उंगली पर स्याही लगे, यही वोट पहचान।
वरना मुँह कालिख लगे,खोटे ग्रहे समान।।
सावचेत होजा सखे, औरों को दे सीख।
मत देना अधिकार है,वोट नहीं है भीख।।
दल के बंधन में पड़े, अनचाहे हो लोग।
अपना मत न दीजिये, कर नोटा संजोग।।
बड़े छोट नेता बने,मतदाता की आस।
बुरे कभी न वोट दें,बने गले की फाँस।।

वादे करे लुभावने,फिर पाछे नहि आय।
उनको वोट न दीजिए,भेजो धूल चटाय।।
वोट हमारा कीमती,सोच समझ कर देय।
दौर चुनावी है यहाँ, भल नेता चुन लेय।।
ठीक परख मतदान कर,अंतर्मन समुझाय।
एक बार की चूक से, पाँच साल पछताय।।
मत अयोग्य को दें नहीं, चाहे हो वह खास।
वोट देय हम योग्य को,सब जन करते आस।।
समझे क्यों जागीर वे, जनमत के मत भूल।
उनको मत देना नहीं, जिनके नहीं उसूल।।
एक वोट शमशीर है, करे जीत और हार।
इसीलिए मतदान कर, एक वोट सरकार।।
मतदाता पहचान को, लेय कार्ड बनवाय।
निभन्य हो निणन्य करें, वोट देन को जाय।।
वर्ष अठारह होत ही,बी.एल.ओ पहि जाय।
मतदाता सूची बने, तुरतहि नाम लिखाय।।
अपना मत निणन्य करे, सत्य बात यह मान।
यही समझ के कीजिए,सोच समझ मतदान।
लोकतंत्र मे ही मिला, यह अनुपम उपहार।
अपने मत से हम चुनें, अपनी ही सरकार।।
भारत के हम नागरिक,मत अपना अनमोल।
संसद और विधायिका, चुनिए आँखे खोल।।
ई.वी.एम. को देखिए, चिन्ह चुनावी देख।
अंतर्मन से वोट दें , तर्जनि अंगुलि टेक।।
सबको यह समझाइए, देना वोट विवेक।
लोकतंत्र कायम रहे, चुनिए मानस नेक।।
बड़े बुजुर्गन साथ ले, चलना अपने बूथ।
मत का हक छोड़ें नहीं, चाहे भीड़ अकूथ।।
नर नारी दोनो चलें, पंक्ति भिनन्न बनाय।
बारी बारी वोट दो, सबको यह समझाय।।
सबसे बड़ा जनतंत्र है, भारत देश महान।
मतदाता उसके बनें, यही हमारी शान।।
जन प्रतिनिधि सारे चुने,अपने मत से आप।
फिर कैसा डर आपको, कैसा पश्चाताप।।
सगा सनेही मीत जन, सबको यह समझाय।
अपना हक मतदान है,विरथा कभी न जाय।।

जख्मी समाज

-यशपाल निर्मल

यह महफिलें
यह रौनकें
सब छोड़ो साथियो
और
तनिक मस्तिसक पर
ज़ोर डाल कर
सोचो
यहाँ कोई लेखक
कागद
कलम
दाल
रोटी
के जुगाड़ में
जिम्मेदारियों
के बोझ तले दब कर
कर देता है कतल
अपने भीतर बैठे
रचनाकार का।
जहाँ
आतंकवादियों से
जूझते हुए
हो जाता है
रोज़ाना
शहीद
किसी का
रिश्ता नाता
हाड मास।
दिन चढ़ते ही
रोटी कपड़ों के
जुगाड़ में
जुट जाने वाले
बच्चे
हो जाते हैं बूढ़े
उम्र से पहले।
ढलते सूरज को देख
जहाँ कोई
मेरे जैसा
उदास
एकांत
डंसती
रात
निकाल देता है
आंखें खुली रख कर।
जहँ भूख से
बिलकते बच्चे
तरसते रहते हैं
रोटी के टुकड़ों के लिए।
बूढ़ा बाप
इस आस में बैठे
कि उसका ग़रीब बेटा
करेगा नौकरी
और
चुकाएगा कर्जा
काट देता है उम्र।
बिस्तर पर पड़ी
बीमार माँ
अपना इलाज
न करवा कर
दवाई के लिए रखे पैसे
दे देती है
बच्चों की किताबों के लिए।
जहाँ
सारा समाज जख्मी हो
बहु बेटियों की इज़्ज़त
से
खेला जा रह हो दिन
दिहाड़े
खुले आम
सरे आम
और
मानवता का लहु
बहाया जा रहा हो
जहाँ
पानी की तरह
अपने स्वर्थों के लिए
उस महौल में
तुम
महफिलें सजाते हो??

चिन्तामय

-सुनिता रावत

आज चिन्तामय हृदय है, प्राण मेरे थक गये हैं,
बाट तेरी जोहते ये नैन भी तो थक गये हैं,
निबल आकुल हृदय में नैराश्य एक समा गया है,
वेदना का क्षितिज मेरा आँसुओं से छा गया है!!
आज स्मृतियों की नदी से शब्द तेरे पी रही हूँ,
प्यास मिटने की असम्भव आस पर ही जी रही हूँ,
पा न सकने पर तुझे संसार सूना हो गया है,
विरह के आघात से प्रिय! प्यार दूना हो गया है!!
जब नहीं अनुभूति मिलती लोग दर्शन चाहते हैं,
उदधि बदले बूँद पा कर विधि-विधान सराहते हैं,
किन्तु दर्शन की कमी न बन गयी अनुभूति मुझ को,
यह तृषित चिर-वंचना की मिली दिव्य-विभूति मुझ को!!
दीखती है, प्राप्ति का कंगाल बन कर मैं रहूँगी,
स्मित-विहत मुख से सदा गाथा भविष्यत् की कहूँगी,
जगत् सोचेगा कि इस ने विरह जाना नहीं है,
विष-लता का विकच काला फूल पहचाना नहीं है!!
जब कि उस के तिक्त फल को आज लौ मैं खा रही हूँ,
जब कि तिल-मिल भस्म अपने को किये मैं जा रही हूँ,
किन्तु मुझ को समय उस का दुःख करने का नहीं है,
भक्त तेरे को यहाँ अवकाश मरने का नहीं है,
भक्त का कोई समय रह जाय भी आराधना से!!
व्यस्त वह उसमें रहे आराधना की साधना से,
यदि सफल है दिवस वह जिस में भरा है प्यार तेरा,
रैन भी सूनी न होगी अंक ले अभिसार तेरा,
किन्तु कोरे तर्क से कब भक्त का उर भर सका है!!
मेघ का घनघोर गर्जन कब तृषा को हर सका है,
बिखर जाते गान हैं सब व्यर्थ स्वर-सन्धान मेरे,
छटपटाते बीतते हैं दीर्घ साँझ-विहीन मेरे,
आज छू दे मन्त्र से, ओ दूर के मेहमान मेरे,
आज चिन्तामय हृदय है थक गये हैं प्राण मे!!

एक हिन्दुस्तानी

- 'आशुतोष'

मैं हिन्दी हूँ
हिन्दुस्तान हूँ
मैं सबकी आवाज हूँ
उत्तर ,दक्षिण ,पूरब, पश्चिम
की शरहद नहीं
मैं कण- कण की पहचान हूँ
मैं हिन्दी हूँ
हिन्दुस्तान हूँ।
है इतिहास निराली अपनी
जो कभी न मिटने वाली
क्षेत्रवाद की बेडि़यो में
मै न जकड़ने वाली
राष्ट्र का प्रतीक हूँ
कहानियों कविताओ से
सब का मुरीद हूँ
मैं हिन्दी हूँ
हिन्दुस्तान हूँ।
मैं ही संस्कार हूँ
मैं सभ्यता की पहचान हूँ
लाख कोशिश की है
भुलाने की मुझको
फिर भी अपने स्थान पर
विराजमान हूँ
मैं हिन्दी हूँ
हिन्दूस्तान हूँ।
कोई जाति मजहब नहीं
राष्ट्र के मस्तक पर
राष्ट्रभाषा की चमक विखेर रहा
भटके हुए मुसाफिरों को
कहानी उपदेशों से
राह दिखाता हूँ
सम्हल कर शूरवीरो में
नाम दर्ज कर जाता हूँ
मैं हिन्दी हूँ
हिन्दुस्तान हूँ।
कितने आये और चले गये
सब मुझ पर आँख तरेर गये
सहनशक्ति की खान
हिन्दुस्तान की शान
फिर भी न मुझको अभिमान है
मैं हिन्द की पहचान हूँ
मैं हिन्दी हूँ
हिन्दुस्तान हूँ।
एक बार जो मुझको भाता
मैं उससे लिपट जाता
मुझमें डूबकर वो
मेरा हो जाता
ना अचम्भा ना निकम्मा
सबके लिए मैं बना रहूँगा खंभा
मैं विरासत की धरोहर हूँ
मैं हिन्दी हूँ
हिन्दुस्तान हूँ।

जगदंबे-जगजननी

-पूनम (कतरियार)

जगदंबे-जगजननी
जगत की महारानी
किये सोलहवों सिंगार
भव्य रूप है तुम्हार
माथे टीका है सजा
सिंदुर से मांग है भरा
गले में हंसुंली सोहे
झूमका मन को मोहे
कर में कंगन की चमक
कटि-किंकिणी की दमक
बोले रुनझुन पायलियां
बाजे बिछुआ पैजनियां
गुड़हल-सी लाल- चूनरी
सबके हृदय बस रही
धर कर त्रिशूल-कटार
करती असुरों का संहार
पूरी करने हमारी आस
भवानी आईं हमारे द्वार
अपराजिता-हरसिंगार
नीम के पत्तों की बहार
नाचो झूम -झूमकर
पुकारो गान गाकर
ताशे की छाये झंकार
ढोल बजाओ बारंबार
जगत के कोने-कोने में
अम्बे का सज गया दरबार
मां, अब दे दो आशीर्वाद
करूं मैं तेरी जय -जयकार!!

'मेरी बिटिया'

-श्रीमती साधना छिरोल्या

इतनी खुशियाँ बरसे रिमझिम,
आँगन तेरा भर जाये,
चाँद-सितारे झूम के नाचे,
आँगन तेरा भर जाये।।
क्या चंपा, क्या जूही,बेला,
रात की रानी छा जाये,
गुलमोहर भी झूम के नाचे,
आँगन तेरा भर जाये।।
क्या टेसू,क्या पीली सरसों,
आम की बौरें छा जायें,
रंग,गुलाल की फुहार बरसे,
आँगन तेरा भर जाये।।
हम सब करते यही प्रार्थना,
ईश्वर की कृपा बनी रहे,
ऋद्धि-सिद्धि भी झूम के नाचे,
आँगन तेरा भर जाये।।

शक्ति की पूजा, फिर नारी की अवहेलना क्यों?

- कीर्ति प्रदीप वर्मा

भारत देश एक ऐसा देश है जहां पत्थर भी पूजा जाता है फिर शक्ति यानी जगत जननी माँ जिनकी पूजा अर्चना समस्त जगत करता है। शक्ति की आराधना पुरुष वर्ग अत्यधिक करते देखे गए हैं जहां छोटी कन्याओं को देवी के रूप में पूजा जाता है, भोजन कराया जाता है और सुहागन को महागौरी के रूप में पूजा जाता है परंतु क्या सच में नारी को वह सम्मान मिल पाता है जो जगत जननी को मिलता है?

पुरुष प्रधान समाज में पुरातन काल से ही नारी को दोयम दर्जा दिया गया है हमारे सभी धार्मिक ग्रंथ पुरुषों द्वारा लिखे गए हैं,कोई एक भी ग्रंथ मुझे याद नहीं आता कि नारी शक्ति द्वारा लिखा गया हो।

चारों युगों में सिर्फ भगवान भोलेनाथ ही एक अपवाद है जिन्होंने सदैव शक्ति को उसके सामर्थ्य का एहसास कराया ।स्वयं जगकर्ता और जगहर्ता होते हुए भी माता गौरा को समस्त देवों की शक्तियों से युक्त कर दानवों के संहार के लिए प्रेरित किया त्रेता में तो नारी को ही सदैव अगि-परीक्षा देनी पड़ी।

जहां तक कलयुग में प्रत्येक क्षेत्र में आधी आबादी सदैव दोयम दर्जे पर ही रही है, नहीं तो आरक्षण की आवश्यकता ही क्यों होती?

चाहे राजनीति हो फिल्म उद्योग हो या उद्योग जगत हो सभी जगह महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा बहुत पीछे हैं बड़े बड़े उद्योगों में मात्र 27इ महिला है जो बड़े-बड़े पदों पर हैं और तो और साहित्य जगत में ही कवि सम्मेलनों में दस कवियों के बीच मात्र एक या दो कवयित्रियां होती हैं ।

अगर कोई महिला साहित्यकार बगैर किसी की सहायता के आगे बढ़ती है तो यह पुरुष प्रधान समाज से को हजम नहीं होती ।

आप और हम सभी बुद्धिजीवी शिक्षित समाज के सदस्य हैं जहाँ नारी को उचित सम्मान दिया जाता है,और हम यह समझने लगते है कि नारी पुरुषों के बराबर है,परंतु भारत की सत्तर प्रतिशत महिलाएं आज भी अवहेलना की शिकार हैं। अनेक उच्चशिक्षित परिवारों में देखा गया है की महिलाओं को अपनी राय देने या बिना पुरुषों की बैसाखी के चलने का अधिकार नहीं है।

माना कि नारी और पुरुष दोनों समाज रूपी रथ के दो पहिए हैं परंतु महिलाओं के साथ आए दिन हो रहे व्यभिचार ,अपहरण बलात्कार,घरेलू हिंसा आदि की घटनाएं आम बात है ।जहां महिलाएं सशक्त होने का दावा करती हैं वहीं दिल्ली की गुरमेहर जैसी युवतियों को खुलकर अपनी बात कहने के जुर्म में दबा दिया जाता है ।

एक और 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते तत्र रमंते देवता का नारा दिया जाता है 'और दूसरी ओर निभ-या जैसे कांड आए दिन होते हैं यहां तक की बेटी के जन्म को भी स्वीकार नहीं किया जाता,बल्कि अपनी कोख में पल रही संतान को जन्म देना है या नही यह भी उसकी इच्छा पर निर्भर नही।

आम परिवारों में बेटों को अधिक महत्व दिया जाता है जबकि उच्च शिक्षित बहू को भी बेटे के बराबरी का सम्मान नहीं मिल पाता।

जिसके लिए नारी भी कहीं न कहीं दोषी है।

तो फिर शक्ति की पूजा आराधना का ढकोसला क्यों किया जाता है?

इंतजार है उस समय का जब नारी को पैर के जूती न समझ गले का हार समझा जाएगा।

धार्मिक शांति कैसे कार्यात्मा हो

धर्म युद्ध, गरीबी और कष्टों को बढ़ावा देते हैं। उन्हें नीहित स्वार्थों द्वारा आपके शोषण के लिए मदद मिलती है। वे झूठों पर आधारित थोथी नैतिकता के द्वारा आप पर नियंत्रण रखते हैं। यदि कोई संगठित धर्म न हो तो क्या होगा? मैं सभी धर्मों के खिलाफ हूं, सिर्फ ईसाइयत के ही नहीं। मैं परमात्मा के खिलाफ हूं क्योंकि मैं सभी तरह की कल्पनाओं के खिलाफ हूं। मैं नरक के खिलाफ हूं और स्वर्ग के खिलाफ हूं क्योंकि मैं मानवता में खंडित मानसिकता पैदा नहीं करना चाहता। मैं नहीं चाहता कि मानवता नरक के भय और स्वर्ग के लोभ में जिए। मैं नहीं चाहता कि लोगों के पास किसी तरह की विश्वासप्रणाली हो। ईसाई हो या हिंदू या बौद्ध, कोई भी, इसे कोई फर्क नहीं पड़ता।

मानवता को नरक के भय और स्वर्ग के लोभ में नहीं जीना चाहिए। मैं किसी एक धर्म के खिलाफ नहीं हूं। बल्कि उस कल्पना के खिलाफ हूं जो मानवता को आगे बढ़ने से रोकती है। मेरे लिए कोई भी संगठित धर्म और ईसाइयत दुनिया में सर्वाधिक संगठित धर्म है। मनुष्य जाति के लिए खतरनाक है। उनकी निजता, उनकी स्वतंत्रता उनका गौरव नष्ट हो जाता है। मैं सभी धर्मों के खिलाफ हूं, क्योंकि वे मानवता का शोषण करते रहे हैं, और वे ठीक वही हैं जो कार्ल मार्क्स कहता है, लोगों के लिए अफीम का नशा है। वे गरीबों को सांत्वना देते हैं कि, तुम्हारी गरीबी अग्नि परीक्षा है।

जीसस के वचन सुनो, धन्यभागी हैं जो गरीब हैं, वे पृथ्वी की विरासत पाएं। यदि गरीब धन्यभागी हैं तब गरीबी को हटाने की कोई जरूरत नहीं है। सच तो यह है कि लोगों को और गरीब बनाओ ताकि वे और अधिक सौभाग्यशाली हो सकें और परमात्मा के राज्य के वारिस हो सकें। गरीबी फैलाओ। जानवरों जैसी नस्ल बनाओ। जितने अधिक बच्चे हो सकें उतने पैदा करो। ये सभी परमात्मा के राज्य के वारिस होंगे। ऐसे ही सांत्वनाएं सभी धर्मों द्वारा अलग-अलग तरह से दी गई हैं। बाइबिल कहती है, कुछ भी मत बदलो, क्योंकि परमात्मा ने ऐसा ही बनाया है और वह तुमसे अधिक बुद्धिमान है। इसलिए समाज के किसी भी ढांचे को मत बदलो, परिवार को मत बदलो। लेकिन परमात्मा ने कभी कोई परिवार नहीं बनाया। सच तो यह है कि परमात्मा दुनिया में सबसे बड़ा झूठ है और एक केंद्रीय झूठ से हजारों झूठ पैदा होते चले जा रहे हैं।

मैं सिर्फ ईसाइयत के खिलाफ नहीं हूं, मैं हिंदुत्व के खिलाफ हूं। मैं बौद्ध के भी खिलाफ हूं। मैं मुसलमानों के खिलाफ हूं। क्योंकि ये सभी एक ही तरह से कार्य करते हैं, सिर्फ उनके नाम अलग अलग हैं। हिंदूवाद कहता है कि तुम गरीब हो अपने पिछले जन्मों के बुरे कर्मों के कारण, और तुम अमीर हो पिछले जन्म के अच्छे कर्मों के कारण। वे असलियत से मन को हटा देते हैं। असलियत यह है कि तुम गरीब हो क्योंकि तुम्हारा खून लगातार शोषण किया जा रहा है। तुम्हें चूसा जा रहा है, तुम्हारा खून लगातार तुमसे बाहर निकलता जा रहा है, तुम्हारा जीवन निम्नतल पर है ताकि तुम गुलामों जैसा काम कर सको।

सारे धर्म अमीरों का पक्ष लेते हैं क्योंकि अमीर चर्च को, मंदिर को, धर्मों को उनके शोषण का एक छोटा सा हिस्सा, जो कि एक प्रतिशत भी नहीं। दान देते हैं। वे पुजारी को अमीर, सुविधापूर्ण बनाए रखते हैं क्योंकि पुजारी यथास्थिति की सुरक्षा करता है।

मैं यथास्थिति के खिलाफ हूं। मैं समाज को, इसके ढांचे को बदल देना चाहता हूं। मैं वर्गविहीन समाज चाहता हूं, एक ऐसी दुनिया जहां किसी तरह की सीमाएं न हों, बिना देश के, दुनिया जो एक हो, न तो काले और न ही सफेद, न तो भारतीय न ही रशियन न ही अमरीकन। यह छोटा सा ग्रह शांति से जी सकता है।

वास्तु अनुरूप बनाएं विजिटिंग कार्ड

सुन्दर और आकर्षक प्रभावी विजिटिंग कार्ड हमारे व्यक्तित्व को प्रदर्शित करता है। विजिटिंग कार्ड से व्यक्ति का स्वभाव,प्रकृति, व्यवहार का परिचय मिलता है। सामान्यत: लोग अनेक रंगों में और अलग-२ आकारों में विजिटिंग कार्ड तो बनवा लेते है। परंतु सही रूप में इनका निर्धारण न होने के कारण यह कार्ड प्रभावीं नहीं हो पाता है। वास्तु अनुरूप कार्ड इस प्रकार से होता है।

सबसे पहले फर्म और संस्था का नाम, या व्यक्ति का नाम तथा मोनो उत्तर पूर्व या ईशान कोण में होना चाहिए। वास्तु के अनुसार ब्रह्म स्थान खाली होना चाहिये। अत: विजिटिंग कार्ड का मध्य भाग खाली होना चाहिए। सबसे नीचे दक्षिण पश्चिम में फर्म या व्यक्ति का नाम व पता एवं टेलीफोन, फैक्स तथा ईमेल होना चाहिए तथा वायव्य कोण में मोबाइल न. होना चाहिये।

ऐसे आती हैं घर में माँ लक्ष्मीजी

धन प्राप्ति का सरलतम उपाय

आडारतंत्र

संसार में धन की जरूरत किसे नहीं है। वैभव विलास से लेकर पूजा-पाठ तक बिना धन के संभव नहीं। व्यक्ति चाहे आस्तिक हो या नास्तिक धनप्राप्ति के यथासंभव साधन अवश्य जुटाता है। बिना धन के वह हमेशा पीड़ित ही रहता है, अपने और पराए सभी उसका अपमान करते हैं।

हमारी परंपरा में धन की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी को माना गया है। वे भगवान विष्णु की पत्नी हैं। हालांकि लक्ष्मी साधना के अनेक उपाय हैं जो तंत्र-मंत्र-यंत्र के माध्यम से किए जा सकते हैं लेकिन इसमें दिक्कत यह है कि ये बड़े कठिन होते हैं और हर कोई इन्हें सफलतापूर्वक कर भी नहीं पाता। लेकिन शास्त्रों में ऐसे भी साधन हैं जिन्हें सरलतापूर्वक किया जा सके। अडारतंत्र ऐसा ही एक साधन है जिसमें न पूजा-पाठ की आवश्यता पड़ती है और न ही अधिक धन की। आप चाहे आस्तिक हों या नास्तिक, हिंदु धर्म को मानने वाले हों या किसी और धर्म के, इसे आसानी से कर सकते हैं।

एक पुरानी कथा के अनुसार समुद्र मंथन के पश्चात जब असुरों को अमृत नहीं मिला तो वे छीना-झपटी पर उतर आए। अमृतकलश को असुरों से बचाने के लिए सूर्य, चंद्र व देवगुरुबृहस्पति इसे छुपाने लगे। अतिपराक्रमी दानव सूर्य और चंद्र के पीछे भागे। इस बीच छलक कर गिरी कुछ अमृत की बूंदें पी लेने के बाद उन्हें मारने का भी प्रयास करने लगे। बाकी देवता यह देखकर परेशान हो गए और राहु को मनाने के लिए उसे एक आशीर्वाद दिया कि हर अमावस को एक खास समय में सूर्य और चंद्र उसके ग्रास बन सकते हैं। बस, यहीं से निकला धन प्राप्ति का वह आसान रास्ता निकला, जिसे हम आडारतंत्र के नाम से जानते हैं। आडार का अर्थ होता है कूड़ा-करकट, फटी पुरानी बेकार की रद्दी वस्तुएं, टूटे-फूटे बर्तन आदि। दरिद्रता इन्हीं में बसी होती है। गंदगी और दरिद्रता के साथ लक्ष्मी की पुरानी दुश्मनी है, इसलिए जिस घर में ये दोनों हों, लक्ष्मी वहां नहीं आतीं।

प्रत्येक शनिवार और हर अमावस के दिन अपने चौके के सभी बर्तन साफ करें। टूटे-फूटे बर्तनों को, घर की रद्दी वस्तुओं को कबाड़ी को दें या फेंक दें। फालतू के कागज पत्र, ऐसे पत्र जिनमें मृत्यु की खबर हो घर से बाहर फेंक दें या जला दें। खाली डिब्बे, फर्नीचर आदि की सफाई करें, गंदे कपड़े धोकर रखें, पूरे घर में झाड़ू लगाएं और फर्श आदि धोएं। आलमारी में रखे खिलौने, सजावट के समान आदि की भी सफाई करें। हर वस्तु को यथासंभव अपनी जगह पर रखें। यदि आपके पास भगवान के चित्र और धार्मिक ग्रंथ आदि हैं तो उन्हें भी सफाई से रखें। सायंकाल पूरे घर में धूप, अगरबत्ती, घी-गुड़ या गूगल-लोबान का सुगंधित धुआं अवश्य करें और अंधेरा होते ही घर के सभी बल्ब जला दें। पूजाघर में दीपक जलाएं, कम से कम दो घंटे तक तो बत्तियां आदि जलती रहनी चाहिए। मान्यता है कि सायंकाल किसी न किसी रूप में लक्ष्मी आपके घर अवश्य आती हैं या आ सकती हैं। घर साफ देखकर ही वे वहां वास करेंगी। जहां लक्ष्मी का वास होता है, धन वहीं आता है। ध्यान रहे कि घर में पूर्ण अंधेरा कभी न करें, कम से कम एक बल्ब या दीपक तो घर में रात भर जलते रहना चाहिए। इस क्रम में नियम से पालन करने के पश्चात आपके घर से दरिद्रता का अंत अवश्य हो जाएगा और लक्ष्मी की कृपा का आपको आभास भी हो जाएगा।

आडार क्रिया का आरंभ जिस दिन से करें उसी दिन एक छोटी-सी झाड़ू लाकर मुख्यद्वार के पीछे टांग दें और इसे वहीं टंगा रहने दें। झाड़ू में शनि का वास माना जाता है, इसलिए जब लक्ष्मी आ जाएगी तो फिर से दरिद्रता की वापसी रोकने में यह झाड़ू सहायक होता है।

पैरों को दें स्टाइलिश आराम

फैशन के साथ कदम से कदम मिलाकर कैसे चलना है, इसे युवा पीढ़ी अच्छी तरह जानती है। तभी तो वह हर मौसम के अनुसार अपने फैशन में बदलाव लाती रहती है। बात चाहे कपड़े की हो या पैरों की शोभा बढ़ाती फुटवीयर की। फैशन को कौन नहीं भुनाना चाहता। सुंदर व आकर्षक फुटवीयर अब जरूरत ही नहीं बल्कि पर्सनैलिटी को निखारने का एक अहम हिस्सा भी बन चुके हैं। इस बात को युवतियां भली-भांति जानने लगी हैं। यही वजह है कि आज बाजार में डिजाइनर फुटवीयर की भरमार है। एफडीआई से फुटवीयर डिजाइनिंग की फाइनल ईयर की गरिमा कहती हैं कि फैशन के इस दौर में डिजाइनर फुटवीयर युवतियों की पहली पसंद बनी हुई है। लेदर के बहुत सारे विकल्पों के आ जाने से रंग व फैब्रिक में बदलाव आए हैं। जरदोजी, कुदंन, ग्लिटर्स, सीक्वेंस अब न सिर्फ आपके लिबास बल्कि फुटवीयर को भी सजाने लगे हैं। पहले जहां ब्लैक व ब्राउन कलर के फुटवीयर ज्यादा फैशन में थे, वहीं आज फ्लोरल प्रिंट वाले लेदर और मेटेलिक लेदर पर तरह-तरह के डिजाइन वाले फुटवीयर लोगों द्वारा पसंद किए जा रहे हैं।

पार्टी फुटवीयर : पार्टी चाहे रात की हो या दिन की- पार्टी का अंदाज तो कुछ जुदा ही होता है। सिर्फ कपड़े ही नहीं बल्कि आपका फुटवीयर भी आपके आउटफिट्स को शानदार बनाते हैं। अगर रात की पार्टी में जा रही हैं, तो कोशिश करें कि आपका फुटवीयर ड्रेस से मैच करता हुआ और ट्रेंडी भी हो। शाम की पार्टी में जाना हो, तो फीते वाली हील की सैंडिल अच्छी लगेगी। अगर हील पहनती हैं, तो पतली स्ट्रिप्स व फीते वाली सैंडिल का चुनाव कर सकती हैं। इसमें स्वारोस्की, बीड्स व स्टोन वर्क वाले फुटवीयर ज्यादा फैशन में हैं। इसके अलावा बूट भी इन दिनों लड़कियों द्वारा पसंद किया जा रहा है। अपनी पर्सनैलिटी को निखारने के लिए आप भी इन्हें पहन सकती हैं। दिन की पार्टी के लिए फ्लोरल प्रिंट वाले लेदर के सैंडिल अपने लिए चुन सकती हैं। इसे आप हर तरह के आउटफिट्स के साथ पहन सकती हैं। स्टोन व मोतियों से सजी इन फुटवीयर को पटियाला सूट, चुड़ीदार सलवार, लहंगा और साड़ी पर भी पहना जा सकता है। आकर्षक डिजाइन व रंगों में मिलने वाली इन फुटवीयर को कॉलेज जाने वाली लड़कियां भी खूब पसंद कर रही हैं।

थाई हाई बूट्स : ठंड के मौसम में फैशनेबल दिखना है, तो थाई हाई बूट्स सिर्फ आपके लिए ही है। ये बूट्स जांघ तक लंबे होते हैं और इन्हें मोड़ने का विकल्प भी मौजूद होता है। ये आपको ठंड से बचाकर रखेंगे और कमाल की बात है कि इसके नीचे आपको स्टॉकिंग्स पहनने की भी जरूरत नहीं होगी। अगर आपको क्लासी लुक की चाहत है तो ये बूट्स आप पर काफी अच्छे दिखेंगे। स्कर्ट से लेकर स्टाइलिश ड्रेस तक, सबपर ये बूट्स अच्छे दिखते हैं। पर, इन्हें डेली यूज के लिए पहनना आसान नहीं होता है। अगर आपमें इसे पहनने का आत्मविश्वास है तभी इन्हें पहनकर घर से बाहर निकलें। ये बूट्स मुख्य रूप से ब्राउन और ब्लैक रंग में मार्केट में उपलब्ध हैं।

> *सुंदर व आकर्षक फुटवीयर अब जरूरत ही नहीं बल्कि पर्सनैलिटी को निखारने का एक अहम हिस्सा भी बन चुके हैं। इस बात को युवतियां भली-भांति जानने लगी हैं। यही वजह है कि आज बाजार में डिजाइनर फुटवीयर की भरमार है। एफडीआई से फुटवीयर डिजाइनिंग की फाइनल ईयर की गरिमा कहती हैं कि फैशन के इस दौर में डिजाइनर फुटवीयर युवतियों की पहली पसंद बनी हुई है। लेदर के बहुत सारे विकल्पों के आ जाने से रंग व फैब्रिक में बदलाव आए हैं। जरदोजी, कुदंन, ग्लिटर्स, सीक्वेंस अब न सिर्फ आपके लिबास बल्कि फुटवीयर को भी सजाने लगे हैं।*

नी हाई बूट्स : ये क्लासिक बूट्स होते हैं। और हमेशा से आकर्षक लुक पाने के लिए युवतियों की पहली पसंद रहे हैं। इस साल इस फुटवीयर में कुछ बदलाव आया है और अब नुकीले और जिपर वाले नी हाई बूट्स ज्यादा पसंद किए जा रहे हैं। ये बूट्स काले, भूरे, रेड और कॉफी ब्राउन कलर में उपलब्ध हैं।

बूटी : अगर आप बूट्स पहनने में सहज नहीं महसूस करती हैं, तो इसके विकल्प के रूप में बूटी आपके लिए अच्छी रहेगी। यह एड़ी तक ऊंची होती है और टाइट फिटिंग वाली जींस या शॉर्ट स्कर्ट के साथ पहनने पर काफी स्टाइलिश दिखती है। इसमें ऊंची हिल और प्वॉइंटेड टो होती है, जो इसे आरामदायक के साथ-साथ फैशनेबल भी बनाती है। पर, ये उन लोगों पर ही अच्छी दिखती हैं, जिनके पैर पतले होते हैं।

बाइक बूट्स : अगर आपको रोमांच पसंद है और आप ठंड के मौसम में भी एडवेंचर से दूर रहना नहीं चाहतीं, तो बाइक बूट्स खुद के लिए चुनिए। ये आपको बहुत ज्यादा स्टाइलिश लुक नहीं देंगे, पर आउटडोर एक्टिविटी और काउ-ब्वॉय लुक के लिए ये बूट्स उचित रहेंगे।

स्वास्थ्य का रखे ख्याल, ये तेल बेमिसाल

अपने औषधिय गुणों के कारण ही तेल भारतीय परिवेश में प्राचीन काल से ही रचा-बसा है। लेकिन आज कॉस्मेटिक्स की दुनिया में तेल का इस्तेमाल करना पिछड़ेपन की निशानी माना जाती है। इसलिए आधुनिकता के शिकार लोग नवजात शिशु को भी तेल की जगह पावडर लगाना पसंद करते हैं। अतः इस परिवेश में तेल के स्वास्थ्यरक्षक गुणों को बताया जा रहा है।

बादाम का तेल

-मस्तिष्क को ताकत देता है।
-शरीर एवं मन की थकान को दूर करता है।
-शरीर में शक्ति का संचार करता है।
-शरीर को पर्याप्त गर्मी प्रदान करता है।
-तनाव, चिड़चिड़ापन, गुस्से से मुक्ति दिलाता है।

सेवन-विधि

मस्तिष्क संबंधी शिकायतों पर-रात को सोते समय पांच से दस मिलीलीटर तक की मात्रा में बादाम तेल को एक कप दूध में घोलकर पिएं।

डेंड्रप पर-सिर पर बादाम का तेल तर्जनी और मध्यमा अंगुली के पोरों से बालों में खूब रमाते हुए मलें।

ऑस्टिओपोरोसिस-दूध में घोलकर सेवन करें।

त्वचा रक्षक-बादाम तेल की नियमित मालिश से त्वचा स्वस्थ, सबल एवं नैसर्गिक चमक से सराबोर रहती है।

आंखों के काले धब्बे-बादाम के तेल में बराबर मात्रा में शहद मिलाकर रात को सोते समय आंखों के चारों तरफ आहिस्ता-आहिस्ता मलने से काले धब्बों से शीघ्र छुटकारा मिलता है।

सरसों का तेल

-नियमित रूप से इसका सेवन करने वालों को दिल को रोग बहुत कम होते हैं।

-यह रक्त के थक्के (क्लाटिंग) बनने की प्रवृत्ति को कम करता है।

-सरसों के तेल में कोलेस्ट्राल को कम करने वाले तत्व भी विद्यमान रहते हैं।

-विविध-चर्म रोगों को नष्ट कर देने की इसमें विशिष्ट क्षमता होती है। जुकाम में फायदेमंद है।

उपयोग विधि-दोनों पैरों के तलवों पर सरसों के तेल की मालिश करने से संचार होने लगता है।

-थकान दूर होती है।

-आंखों की ज्योति बढ़ती है।

-पैरों का सुन्न रहना, पैरों की बिवाई फटना, पैरों का सूखना इत्यादि शिकायतें भी सहज ही दूर हो जाती हैं।

नहाने से ठीक पहले सरसों के तेल से मालिश करने से शरीर में स्फूर्ति आ जाती है।

नारियल का तेल

-बालों का स्वस्थ विकास करता है।
-शरीर की दुर्बलता को दूर करता है।
-जले हुए अंग पर नारियल का तेल लगाने से जलने का निशान नहीं रहता।

तिल का तेल

-सिर पर तिल तेल की मालिश करने एवं तिल से बने हुए खाद्य पदार्थों (गजक, रेवड़ी) का नियमित रूप से सेवन करते रहने से बालों का स्वस्थ विकास होता है तथा कुदरती कालापन आता है।

-मस्तिष्क की दुर्बलता को दूर करने में तिल तेल बेजोड़ है। आयुर्वेद में इसे 'मेधा शक्तिवर्धक' कहा गया है।

जैतून का तेल (ऑलिव ऑइल)

-कब्ज दूर करता है।
-तंत्रिकाओं को सबल बनाता है।
-शरीर को गर्मी प्रदान करता है।
-दूध में घोलकर सेवनीय है।

मछली का तेल

-विटामिन बी समूह का अनूठा स्त्रोत है। साथ ही यह लीवर के लिए फायदेमंद है।

-इसमें पाया जाने वाला 'पेंटोथेनिक एइसड' तनाव से मुक्ति दिलाता है।

-मैनिक-डिप्रेशन, सीजोफ्रेनिया, आत्महत्या की मानसिकता से पीड़ितों के लिए अमृत।

अरंडी-तेल (कैस्टर-ऑइल)

-तन और मन के लिए शक्तिप्रद है।

-शरीर से विषतुल्य हानिप्रद तत्वों को बाहर निकालते हुए, शरीर की रोगों से लड़ने की क्षमता को बढ़ा देता है।

-पेट के कीड़ों, वायु-गोला इत्यादि उदर रोगों से मुक्ति दिलाता है।

लड़कियां अभिशाप नहीं वरदान

हमारा देश अतुल्य है, यहां भले ही कानून, सामाजिक समानता, समान स्वास्थ्य, समान शिक्षा, समान विकास के अधिकार नागरिकों को प्राप्त नहीं है, परन्तु समान अभिव्यक्ति का अधिकार तो है जो भारत को अतुल्य भारत बनाने में सक्षम है। हो सकता है मेरे चिंतन पर भरपूर मतभेद उठे परन्तु मैं अपनी बात विश्व प्रसिद्ध वाल्तेयर के अमृत वचन हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊं फिर भी विचार प्रगट करने के आपके अधिकारों की रक्षा करूंगा। हो सकता है हमारे विचारों की रक्षा के लिए भी दो चार हाथ अवश्य उठे। मुद्दे की बात पर आता हूं-लड़कियां अभिशाप नहीं वरदान हैं, इस हकीकत को स्वीकार करना चाहिए। कन्यादान शब्द का उपयोग वर्तमान में रूढ़िवादिता का द्योतक लगने लगा है। जिस तरह जातीय व्यवस्था अपने शुरुआती दौर में रूढ़िवादी बुराइयों से दूर रही होगी और फिर धीरे-धीरे जातीय दबंगता ने जाति व्यवस्था को चौपट कर जातीय भेदभाव में बदल दिया, यहां तक कि आदमी को अछूत तक बना दिया गया। ऐसी ही बुराई अब कन्यादान मे प्रवेश कर गई है, जिसके परिणाम से हम अनभिज्ञ नहीं हैं। दहेज की बलि पर नित चढ़ती लड़कियां, कन्या भ्रूण हत्या, आत्म हत्या, आत्मदाह, दहेज उत्पीड़न आदि। देखने में तो अब यहां तक आने लगा है कि माँ-बाप आत्महत्या करने लगे हैं, बेटियों के प्रति सामाजिक क्रूरता को बढ़ता देखकर। इसका ज्वलंद उदाहरण हनुमानगढ़ के एक माता-पिता द्वारा अपनी बेटियों के साथ आत्महत्या की घटना है। यह अतिश्योक्ति का विषय नहीं होना चाहिए कि हृदय विदारक घटनाों को बढ़ावा रुढ़िवादी मानसिकता और सरकारी नीतियां दे रही हैं, बल्कि इन मुद्दों पर खुले तौर पर निष्पक्ष भाव से विचार होना चाहिए। दोहरी मानसिकता और नीतियां बेटियों को अभिशाप बना रही है, जबकि सच जो ये है कि लड़कियां अभिशाप नहीं वरदान हैं।

21वीं के इस युग में लड़कियों को बोझ मानना क्या मानव विकास गाथा की आंखों में धूल झोंकना नहीं है? सामाजिक-राजनैतिक पार्टियां और संबंधित लोग स्वहित में सड़क बन्द, हड़ताल, काम-धंधा बंद करवाने के लिए छल-बल-दंड तक का उपयोग कर उल्लू साध लेते हैं। वहीं पार्टियां लड़कियों को दहेज की आग में धू-धू कर जलता हुआ देखकर आंख-कान बंद कर लेते हैं और फिर दोहरे चरित्र के लोग वोट के लिए समर्थन के लिए नारी उत्थान, महिला आरक्षण के मन-भावन सपने दिखाकर कुर्सी हथिया लेते हैं। समाज के ठेकेदार भी ऐसी ही भूमिका निभाते हैं, जगत-जननी जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं आदि ऐसी बातों के चक्रव्यूह में खुद का वर्चस्व बनाए रखते हैं। ऐसी दोहरी मानसिकता के ठेकेदार लड़कियों को अभिशाप निरुपित करने में पहली बड़ी भूमिका निभाते हैं। चाहे सामाजिक अथवा राजनैतिक सत्ता के ठेकेदार हो दोनों ही अपनी सही भूमिका निभाने में अक्षम साबित हुए हैं तभी तो लड़कियां बोझ एवं अभिशाप मानी जाने लगी हैं। लड़कियां दहेज दानव की भेंट चढ़ रही हैं साथ ही इस गम में माँ-बाप तक खुद की जीवन लीला समाप्त कर रहे हैं, पपन्तु समाज के ठेकेदार अपनी रूढ़िवादी नीतियों को दांत से कसकर पकड़े नजर आते हैं और ऐसी राजनैतिक पार्टियां भी हैं जो अपने हित के लिए झंडे-डंडे के साथ अभिव्यक्ति के अधिकार का खुलकर उपयोग करती हैं। वही मान हित में ये झंडे डंडे खो जाते हैं जैसे गदहे के सिर से सिंग। स्वहित में आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली ताकतें भी कम दोषी नहीं हैं। ऐसे सामाजिक और राजनैतिक संगठन क्या लड़कियों के हित में उठ खड़े होंगे। यदि खड़े हुए होते तो कुप्रथाएं रिश्तों से बड़ी कैसे होती। प्रेम विवाह करने पर लड़कियों का कत्ल तक मां-बाप-भाई के हाथों क्यों होता? चिंतन का विषय है। इन ज्वलन्त समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए जाति एवं सत्ता से ऊपर उठकर गहन विचार कर विवाह ऐसे जरूरी फर्ज को सरकार को अपने हाथ में लेकर सामाजिक ठेकेदारों के बीच सामंजस्य बनाकर स्वधर्मी विवाह पर कानूनी मोहर लगाने की जरूरत होगी तभी लड़कियों को दहेज दानव से छुटकारा मिल सकेगा, सही मायने में आदमी होने का सुख भी। यदि ऐसा हो गया तो मां-बाप चिंता मुक्त हो जाएंगे और लड़कियां समाज एवं राष्ट्र हित में नित नया अध्याय जोड़ती नजर आएंगी।

घर की दहलीज से लेकर बाहर तक लड़कियों को कई बंदिशों का सामना करना पड़ता है। इन बंदिशों की वजह से लड़कियां उत्पीड़न की शिकार हो जाती हैं। लाख काबिलियत रखते हुए भी ऐसे रुढ़िवादिता के खूंटे से बांध दी जाती कि जीवन भर आजाद नहीं हो पाती। ऐसा क्यों होता है इसकी भी वजह है, सामाजिक रूढ़िवादी बंदिशें-बेटी के जन्म लेते ही मां-बाप को उसकी परवरिश, शिक्षा-दीक्षा की चिंता उतनी नहीं सताती जितनी बेटी के ब्याह की चिंता सताती है। मां-बाप जल्दी से जल्दी कन्यादान कर गंगा नहाने की चिंता में बूढ़े होने लगते हैं। कन्यादान शब्द ही ऐसा हो गया है जो बुराइयों की जड़ है। जबकि कन्यादान के स्थान पर वरदान कहा जाना चाहिए। वैसे भी कन्या वरदान ही तो है, घर-परिवार, समाज-राष्ट्र और विश्व के लिए भी परन्तु दुनिया की तो मैं नहीं कर सकता पर अपने देश में कथनी और करनी में अंतर तो है। मन में राम बगल में छुरी की सत्यता को हर पल जांचा-परखा जा सकता है। देखा ये जा रहा है कि जो लोग दहेज के खिलाफ शोले उगलते नजर आते हैं वही लोग दहेज दानव को भी पोस रहे हैं। तभी तो नर पिशाच रूपी दहेज का दहन भारतीय परिवेश के 21वीं सदी के युग में भी नहीं हो

रहा है जबकि नर-नारी एक समान के नारे लगाते आजादी के कई दशक बीच चुके हैं और मानव विकास के तो युगों बीत जाने के बाद भी लड़कियां वरदान की जगह अभिशाप कही जा रही हैं।

वर्तमान समय मानव विकास की सबसे बड़े हथियार राजनैतिक सत्ता है, परन्तु दूषित हो चली है। रूढ़िवादी सामाजिक सत्ता से हाथ मिला चुकी है जिसकी वजह से समान विकास और भारतीय परिवेश में मानवीय समानता को आकार नहीं मिल रहा है। इस कुचक्र का शिकार आम हाशिये का आदमी तो है ही लड़कियां भी हो रही हैं। जिसकी वजह से उन्हें कई मुश्किलों का सामना करना पड़ता है और अनगिनत लड़कियां किसी न किसी रूप में किसी न किसी रूढ़िवादी बुराई की बलि चढ़ जाती हैं। कुछ दृढ़ प्रतिज्ञ नारी शख्सियतें तरक्की के आसमान पर विराजित होकर रूढ़िवादिता को सिर झुकाने के लिए बाध्य कर सिद्ध कर रही हैं कि लड़कियां अभिशाप नहीं वरदान हैं। सामाजिक रूढ़िवादिता सभी बुराइयों की जड़ है चाहे वह जातिवाद की बुराई हो, भूमिहीनता, दरिद्रता, बाल मजदूर प्रथा, घरेलू हिंसा, कुदृष्टि-यौनाचार मानवता पर प्रहार कन्याभ्रूण हत्या हो अथवा नर पिशाच दहेज का आतंक। 21वीं सदी के इस युग में सभी बुराइयों से छुटकारा मिल सकता है, परन्तु सामाजिक एवं राजनैतिक सत्ता का सुख भोग रहे लोग ईमानदारी से अपने दायित्वों का निर्वहन भारतीय समाज एवं देश के हितार्थ करें तब परन्तु ऐसा नहीं हो रहा है। सामाजिक एवं राजनैतिक सत्ता के केन्द्र बिन्दुओं को सर्वप्रथम स्वहित से ऊपर उठकर सामंजस्य बिठाकर एकमत होकर बालक के जन्म से लेकर चाहे लड़का हो या लड़की शिक्षा, खुद पैरों पर खड़ा होने लायक बनाने के साथ स्वधर्मी विवाह की व्यवस्था को सरकार को अपने हाथ में लेना होगा और भारतीय समाज को रूढ़िवादी भावनाओं का परित्याग कर अपनी सहमति देना होगी। देश में एक समान कानून लागू हो, दो से अधिक संतानों पर पूरी तरह रोग लगे, इससे जनसंख्या वृद्धि पर भी रोक लगेगी। खैर, देश की अधिक जनसंख्या का फायदा तो उठाया जा सकता है, परन्तु इस बाबद उचित प्रबंधन हो और भी अनेक फायदे होंगे-बहुधर्मी सद्भावना को बल मिलेगा, स्वधर्मी समानता का साम्राज्य स्थापित होगा, सदियों पुराना जातीय भेदभाव खत्म होगा और सभी को समान विकास के मौके मिलेंगे और राष्ट्रधर्म के सद्भाव में अभिवृद्धि होगी। सबसे बड़ा फायदा तो ये होगा कि कन्या बोझ पर विराम लग सकेगा, परन्तु रूढ़िवादिता के चक्रव्यूह में फंसे स्वधर्मी-सामाजिक-मानवीय उत्थान एवं बहुधर्मी सद्भावना को राजनैतिक सत्ता के मुखौटे से बाहर निकल कर अपने पाले में लाना होगा।

अभिव्यक्ति की आजादी है, मैं भी इसका सदुपयोग करते हुए दो विचारणीय मुद्दे समाज एवं राजनैतिक सत्ता के सामने रखता हूं-पहला स्वधर्मी विन को शैक्षणिक योग्यतानुसार क्यों नहीं स्वतंत्रता एवं मान्यता प्रदान करनी चाहिए? दूसरा-शिक्षा एवं विवाह का खर्च सरकार द्वारा क्यों नहीं वहन किया जाना चाहिए। यदि दोनों मुद्दों पर सरकार निष्पक्षता पूर्वक भारतीय समाज के हित में निर्णय ले तो यकीनन यह फैसला क्रान्तिकारी होगा और विश्व समुदाय के लिए अनुकरणीय भी। यदि सरकार इन मुद्दों को अमलीजामा पहना देती है तो मां-बाप की बेटी के जन्म के साथ विवाह की चिंता के बादल छंट जाएंगे। मां-बाप को सबसे अधिक डरावनी चिंता बेटी के ब्याह की होती है, क्योंकि समाज में घुसपैठ कर चुका दहेज दानव फुफकारता रहता है। इस नरपिशाच से सदा के लिए फुर्सत लड़कियों को ऊंची उड़ान भरने में मददगार साबित होगी। लड़कियों के परवरिश में तो लड़के से अधिक खर्च नहीं होते लेकिन बूढ़े समाज में दहेज की दहाड़ लड़की के मां-बाप के पैर तले की जमीन खिसका देती है, जो वास्तव में सरकार के लिए भी चिंता का विषय होना चाहिए तथा आधी आबादी के हितार्थ नीतियों कार्ययोजनाओं एवं कल्याणकारी नीतियों को सुदूर ग्रामीण स्तर तक पहुंचाने के प्रयास सरकार द्वारा किये जाने चाहिए।

आधी आबादी के कल्याणार्थ नीतियां अपने देश में भी लागू हैं, परन्तु उनका प्रचार-प्रसार व्यापक स्तर पर नहीं हुआ है, जिसकी वजह से भ्रूण हत्या, दहेज हत्या, आत्महत्या और बेटी बोझ है, बेटी जन्म पर मातम जैसी स्थितियां आदि सामाजिक बुराइयां अपने यौवनावस्था में 21वीं सदी के इस युग में भी हैं जो सभ्य समाज के और राष्ट्र के लिए चिंता का विषय हैं। मेरे द्वारा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अंतर्गत उठाए गए दोनों मुद्दे कठिन तो लगते हैं परन्तु असंभव नहीं है। शिक्षा एवं विवाह खर्च का भार सरकार उठा ले तो भ्रूण हत्या, दहेज दानव का दहन अवश्य हो जाएगा और विषमतावादी का सदियों पुराना दाग भारतीय समाज के चेहरे से धुल जाएगा, स्वधर्मी सामाजिक समानता के नए युग की शुरुआत के साथ बहुधर्मी सद्भावना भी कुसुमित हो उठेगी। सामाजिक संस्थाओं और सरकार को इन मुद्दो पर अवस्य विचार करना चाहिए। यदि इन मुद्दों पर सकारात्मक पहल की गई तो भारतीय समाज में लड़की के जन्म पर मातम मनाने की परंपरा पर बंदिश लग जाएगी। वंश मोह का घर का चुका जिन्न भी रास्ते से हट जाएगा। दहेज दनव के आतंक से बेमौत लड़कियों को मरने के लिए विवश नहीं होना पड़ेगा। लड़कियों के ब्याह की बहुत बड़ी चिंता का बोझ मां-बाप की छाती से उतर जाएगा जो मौत एवं आत्महत्या का कारण भी साबित हो रहा है। यदि सरकार सामाजिक संस्थाओं से विमर्श कर शिक्षा एवं विवाह की जिम्मेदारी खुद उठाने को तैयार हो जाती है तो लड़कियां मां-बाप के लिए अभिशाप नहीं वरदान लगने लगेंगी और समाज एवं राष्ट्र के विकास की दृष्टि से मील का पत्थर साबित होंगी, बशर्ते सरकार और समाज विचार कर क्रियान्वित करे तब ना।

डीक्लटरिंग

आइए अपनाएँ पसारा प्रबंधन

नेहा का मूड ऑफ था, जब शिखा ने कारण पूछा तो वह बरस पड़ी... मम्मीजी ने ब्लैकेट मांगा, स्टोर रूम में निकालने गई तो किसी में सीलन, किसी का कवर नहीं, कोई बहुच ऊंचे छज्जे पर रखा हुआ.... मतलब यह कि 10 ब्लैकेट होने पर भी समय पर एक भी नहीं मिला और सासू माँ हो गई नाराज। पतिदेव अलग नाराज, क्योंकि गैस-सिलेंडर आ गया, पर गैस की बुकिंग डायरी शादी के कार्ड्स की भीड़ में जाने कहां खो गई। धुले साफ कपड़े मिलते ही नहीं, बिल जगह पर नहीं होता, जब नाखून काटने हों, नेल कटर मिलता ही नहीं, सब सुविधा होने पर भी कोई चीज समय पर नहीं मिलती और दोष आता है नेहा के माथे।

शिखा हंसने लगी और बोली- नेहा, तुझे और तेरे परिवार को **डीक्लटरिंग** की जरूरत है। आजकल देश-विदेश के कई शिक्षा-संस्थानों में इसे एक पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाया जा रहा है। शायद नेहा के ही नहीं, हम सबके परिवारों में इसकी आवश्यकता है। आइए जानें **डीक्लटरिंग** के कुछ सिद्धांत

वन इन-वन आउट- प्रबंधन का यह सिद्धांत हर उस वस्तु पर लागू है जो हम अधिकांश जरूरत से ज्यादा खरीद लेते हैं। जैसे कपड़े, पर्स, फुटवेयर, क्राकरी, नैपकीन, टेबल कवर, कास्मेटिक आदि। एक नया तभी खरीदें, जब एक पुराना निकालना हो, इससे अनावश्यक संग्रह से कम बच पाएंगे।

न्यूनतम भंडारण स्थान- घर में भंडारण अथवा स्टोरेज का स्थान न्यूनतम हो, क्योंकि यह मानव स्वभाव है कि जितनी जगह उपलब्ध होती है, उतनी भरती जाती है। इसलिए न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी। अर्थात न होगी अधिक अलमारियां, ड्रार आदि न हम उन्हें अनावश्यक सामान से भरेंगे।

उपयोग में न लाया गया सामान-यदि कोई सामान आप हर बार सफाई करते समय यही सोच कर रख देते हैं कि शायद बाद में काम आएगा और यही सोचते-सोचते लगभग 3 साल हो चुके हों तो तय मानिए कि वह सामान फिर कभी काम नहीं आएगा। ऐसे सामान से छुटकारा पाने में ही समझदारी है।

पंद्रह मिनट रोज-डीक्लटरिंग एक दिन में संभव नहीं है। यह तो एक आदत है। दिन में पंद्रह मिनट घड़ी देखकर इसे देना जरूरी है। इन पंद्रह मिनटों में आप सामान देखें, उन्हें जरूरत के अनुसार छांटे, अनावश्यक सामान को निकालने की व्यवस्था करें। यह तो एक प्रक्रिया है जो धीरे-धीरे आपके घर को व्यवस्थित कर देगी।

जरूरत के अनुसार दान दीजिए-आपके घर का अनावश्यक सामान, किसी दूसरे घर की जरूरत हो सकता है। आप जब अपना सामान किसी बाई, वृद्धाश्रम अथवा बाल-आश्रम में दान करेंगी तो आपको किसी जरूरतमंद की मदद करने का सुकून भी मिलेगा। साथ ही घर व्यवस्थित होगा, उसकी खुशी अलग होगी।

सब हैं जिम्मेदार-घर में सभी को डीक्लटरिंग की आदत डालना चाहिए। जैसे पुराने अखबार, प्लास्टिक आदि जो अटाले वाले को बेचने हैं, वो जिम्मेदारी पतिदेव ले सकते हैं। पुराने कपड़े, जो बाइयों को देने हों वो सासू माँ को सौंपे। आश्रम में दान करने की जिम्मेदारी ससुरजी ले सकते हैं। पुराने खिलौने, चादरें, चौकीदार के बच्चे को दे सकते हैं। जिम्मेदारी बांटने से न सिर्फ आप रिलेक्स्ड महसूस करेंगी, बल्कि घर को व्यवस्थित करने में और डीक्लटरिंग में सभी स्वयं को भी भागीदार मानेंगे।

अटाला पिगी-बैंक-अटाला पिगी बैंक में आप अटाले को बेचने से मिलने वाली राशि डाल सकती है। साल भर के रुपयों से कोई नई चूज खरीदी जा सकती है। यह घर में सभी को डीक्लटरिंग की आदत डालने का अच्छा तरीका है।

भावनात्मक जुड़ाव-कुछ चीजें हमारे पास ऐसी होती हैं जिनसे हमारा भावनात्मक जुड़ाव होता है, जैसे शादी का जोड़ा, प्यारी सहेलियों के कार्ड्स, बचपन के फोटो एलबम आदि। इन्हें इटाला कतई नहीं माना जा सकता, क्योंकि इन तीजों का स्पर्श भी हमें नई उमंग से भर देता है। अतः इनके ऊपर कोई नियम नहीं, इन्हें सहेजना एक तरह से जीवन सहेजना है।

आदतें बदलें-यदि आपको अनावश्यक सामान खरीदने की आदत है तो उसे बदलें। जिस वक्त किसी चीज को दान करने का विचार आए, उसी समय यह नेक काम कर डालें, क्योंकि वक्त गुजरने के साथ आपका मन भी पलट सकता है।

पुरुषों के रोग और योग

पुरुष प्रधान समाज में पुरुष अपने आपको सर्वोच्च मानता है, यही उसका अहम उसके रोग को बढ़ाता है और दबा कर रखने से लाइलाज हो जाता है. महिलाओं का समाज में द्वितीय स्थान प्राप्त होने से उनके रोगों को बढ़ा-चढ़ाकर शीघ्र ही पुरुष सर्वादित करते हैं। पुरुषों को जन्म से मृत्यु तक अनेक रोगों का प्रतिकार करना होता है।

पुरुषों में जन्म से ही अनेक रोग उनके संपूर्ण जीवन में देखे जाते हैं। जन्म होते ही 'प्राइमरी काम्पलेस' से शुरू होकर हृदय रोग, मधुमेह, घुटनों के दर्द, शीघ्रपतन, प्रोस्टेट का बढ़ना, मूत्र रोग और अंत में कैंसर जैसे रोगों की संभावना बनी रहती है। मनुष्य का रोगी होना प्रकृति का नियम है। प्रकृति को जन्म-मृत्यु का चक्र जो चलाना होता है और हमें बुद्धि भी प्रकृति ने ही प्रदान की है। अतः उसका सदुपयोग करना भी हमारी प्रकृति है। रोगों से बचने का उपाय भी प्राकृतिक ही होने से पुरुष अनेक रोगों से संपूर्ण निरोगी रह सकते हैं।

आज की स्थिति में योग एक प्राकृतिक क्रिया है। जीवन शैली को बदलते या प्राकृतिक करते हैं तो रोगों से जल्दी छुटकारा स्थाई रूप से मिलता है। कृत्रिम जीवन शैली से अनेक असाध्य रोग होते हैं, उन रोगों को पूर्ण रूप से निवारण संभव नहीं है। एक बार रक्तचाप बढ़ने लगा कि नियमित अप्राकृतिक गोलियां, दवाइयां चालू होती हैं वे जीवन भर चलती रहती हैं। डॉक्टरों से पूछें कि कब तक दवाइयां खानी हैं? वे कहते हैं 'जब तक आप को चांद-सूरज दिखता है तब तक' अर्थात रोगों को नियंत्रित किया जाता है परन्तु समाप्त नहीं किया जाता है।

पुरुष समाज का अंग अपनी पढ़ाई पूर्ण करने के बाद बनता है और अपने व्यवसाय, नौकरी या स्वयं का उद्योग स्थापित करते ही उसका विवाह होता है। घर में नई नवेली बहू का पदार्पण, नए काम की शुरुआत एक के बाद एक होती है। घर-गृहस्थी एवं कार्य में सामंजस्य बनाते-बनाते पुरुषों को तनाव घेर लेता है। तनाव नींद कम करता है, व्यायाम करने की इच्छा मूल रूप से भारतीयों में नहीं होती। मित्र-मंडली, टेलीविझन क्लब, रात को पार्टियां भी चैन से सोने नहीं देतीं। आए दिन आयोजन रात्रि भोज, जन्म दिन, विवाह की वर्षगांठ आदि से पुरुषों को अपने लिए समय नहीं मिलता। बच्चे छोटे-छोटे होते हैं तब उनको अच्छे विद्यालय में भर्ती करना, दोस्ती निभाना और रिश्तेदारी निभाते-निभाते पुरुषों को तनाव का सामना करना पड़ता है। तनाव भूख बढ़ाता है, मोटापा उच्च रक्तचाप, हृदय रोग आयु के 35-40 में होने लगता है। अनिद्रा, शीघ्र पतन, अवसाद, पत्नी से अनबन शुरू होते ही पुरुषों के पत्नियों से संबंधों में दरारें पड़ने लगती हैं। तलाक, आत्महत्या, हत्याएं, विवाहेत्तर संबंध आदि पुरुषों के जीवन को जीने से दुष्कर कर देती हैं। अंत में लगभग पचास की आयु में हृदय रोग, मधुमेह, कमर दर्द, घुटने, कूल्हे का दर्द एवं उसका प्रत्यारोपण आदि रोग होने लगते हैं। मूत्र रोग, पुरुषों में प्रोस्टेट ग्रंथि की समस्याएं विकराल रूप धारण करने लगती हैं।

यदि पुरुष जीवन में व्यायाम, विश्राम, संयमित कार्य एवं सामाजिक संबंध निभाते हुए प्रतिदिन निम्न योगाभ्यास करने से पुरुषों के रोग दूर किए जा सकते हैं या पुरुष इन से मुक्त रह सकते हैं। सूर्य नमस्कार, अग्निसर क्रिया, ब्रह्ममुद्रा, कंध संचालन, तड़ासन, त्रिकोणासन, गरुड़ासन, उत्कटासन, मार्जरासन, वज्रासन, धर्मत्स्येन्द्रासन, पद्मासन, शाकासन, भूजंगासन, शलभासन, नौकासन, धनुरासन, विपरीतकरणी मुद्रा उत्तानपादान, पवनमुक्तासन, सेतुबंधासन, अश्विनी मुद्रा 100, शक्तिचालिनी मुद्रा 100 एवं श्वासन, करने के उपरांत प्राणायाम का अभायस 10 मिनट प्रतिदिन करना चाहिए। प्राणायम के बाद 10 मिनट 'सोऽहम' की सामान्य श्वास-प्रवाह पर धारणा एवं ध्यान करने से पुरुषों के उपरोक्त अनेक रोगों का निवारण प्राकृतिक रूप से सहज संभव है।

सांस व शरीर का संबंध-अक्सर रोग सांस और शरीर के रिश्ते को नहीं पहचानते। जिस तरह सांस का शरीर के साथ जीवनभर का नाता होता है उसी तरह मांसपेशियों और हड्डियों के ढांचे का भी संबंध होता है। भावनाओं और मस्तिष्क का भी ऐसा ही संबंध होता है। योग पुरुषों को जरा रुककर अपने अंदर की आवाज सुनने का अवसर देता है। किसी भी प्रतिस्पर्धा में बेहतर प्रदर्शन के लिए योग मददगार साबित होता है। उदाहरण के तौर पर यदि आप एक जिमनास्ट के तौर पर प्रशिक्षित हैं तो शरीर की हर मांसपेशी उसी तरह काम करेगी। यदि आप मलखंब के खिलाड़ी हैं तो शरीर भी खास मौके पर विशेष तरह से प्रतिक्रिया करेगा। शरीर की कुछ मांसपेशियां सिकुड़ जाएंगी तो कुछ लचीली होकर बड़ी हो जाएंगी। शरीर का एक खास न्यूरोलाजिकल और न्यूरोमस्क्यूलर पैटर्न तय हो जाएगा। मलखंब की किसी खास प्रतिस्पर्धा में शरीर आपके इशारे पर नाचेगा। यही वजह है कि आप बार-बार एक ही तरह के करतब दिखा पाते हैं। योग शब्द का अर्थ ही मन मस्तिष्क और शरीर के आपस में जुड़ाव से है।

यज्ञ पिता गायत्री माता

गायत्री और यज्ञ अध्यात्म विद्या के माता-पिता हैं। गायत्री ज्ञान रुपिणी है तो यज्ञ विज्ञान का प्रतीक है। गायत्री और यज्ञ अर्थात् ज्ञान और विज्ञान का युग्म ही साधक को सफलता के शिखर तक पहुंचाता है। जिस प्रकार आग और ईंधन के समन्वय से अग्नि की ज्वाला प्रकट होती है, ठीक उसी प्रकार गाययत्री-साधना के साथ यज्ञ-प्रक्रिया के समन्वय से चमत्कार उत्पन्न होते हैं, जिन्हें ऋद्धि-सिद्धि, स्वर्ग-मुक्ति, शांति-समृद्धि आदि विभूतियों के रूप में जाना जाता है। **'यज्ञो वै सर्व कामधुक'** अर्थात यज्ञ से समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है, वहीं गायत्री रूपी कामधेनु समस्त कामनाओं की पूर्ति करती है।

यज्ञ के द्वारा होम द्रव्य की कारण शक्ति को अग्नि ऊर्जा एवं मंत्र शक्ति के द्वारा सुविस्तृत, व्यापक किया जाता है तथा उसे विश्व कल्याण की भावना से सृष्टि में जो भी आता है, असंख्य गुना लाभ प्राप्त करता है। अतः गायत्री साधना के साथ यज्ञ भी आवश्यक रूप से जोड़ा जाता है। इस प्रकार माता-पिता का पूजन साथ-साथ हो जाता है। जप के साथ दशमांश आहुतियों की अनिवार्यता इसीलिए बताई गई है।

गायत्री मंत्र 'अहम' के स्थान पर 'वयम्' का प्राधान्य है। गायत्री मंत्र का 'नः' शब्द ही यज्ञ का 'संगतिकरण' है। देवतत्व को धारण करने की प्रार्थनो ही यज्ञ में देव पूजन को सार्थक करती है। गायत्री मंत्र में सभी की बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करने की प्रार्थना है। जब बुद्धि सन्मार्ग पर चलने लगती है तो व्यक्ति सत्कर्म (यज्ञ) की ओर प्रेरित होता है। ऋषियों ने देव-संस्कृति के हर अनुयायी को इन दोनों को दैनिक जीवन में प्रत्य अथवा अप्रत्यक्ष रूप से जोड़े रहने का आदेश दिया है।

सद् बुद्धि की देवी महा प्रज्ञा (गायत्री) को सिर रूपी किले पर ध्वजा के रूप में शिखा बनाकर धारण किया जाता है तथा यज्ञ द्वारा पवित्र किया हुआ 'यज्ञोपवित' सूत्र रूप में कंदे पर धारण किया जाता है। ऋषियों ने शरीर को मंदिर समझकर इन दोनों को प्रतीक रूप में धारण किए रहने, इनकी पूजा अभिनंदन करने का निर्देश दिया है। गायत्री के तीन चरण और नौ शब्द ही यज्ञोपवीत की तीन लड़ों और नौ धागों के रूप में हैं। गायत्री को गुरु मंत्र कहा जाता है। यज्ञोपवीत धारण करते समय वेदारंभ गायत्री से ही करया जाता है। उपवीत सूत्र है तो गायत्री उसकी व्याख्या है। यज्ञोपवीत की ब्रह्म ग्रंथि ही गायत्री मंत्र का 'प्रणव' 'ॐ' है। गायत्री के नौ शब्द दिव्य गुणों को धारण करने की प्रार्थना है।

नवरत्न इस प्रकार हैं-(1) तत्ः जीवन विज्ञान, (2) सवितुः : शक्ति-संचय, (3) वरेण्यं : श्रेष्ठता, (4) भर्गोःनिर्मलता, (5) देवस्यः दिव्यता, (6) धीमहि : सद्गुण, (7) धियो : विवेक, (8) यो नः : संयम, (9) प्रचोदयात् : सेवा । यज्ञोपवीत के नौ धागे भी इन्हीं नौ गुणों को धारण करने की प्रेरणा देते हैं।

जन्म से लेकर मृत्यु तक के समस्त सोलह संस्कार यज्ञ द्वारा ही संपन्न होते हैं और ये सभी यज्ञ गायत्री मंत्र द्वारा ही संपन्न होते हैं। नई फसल पकने पर होली का नवान्न वार्षिक यज्ञ किया जाता है। विवाह की वेदी पर भी दो आत्माएं जन्म भर के लिए एक साथ जुड़ती हैं। पर्व-त्यौहारों पर यज्ञ की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। भारतीय मनीषियों ने यज्ञ को इतना अधिक महत्व दिया है कि यजुर्वेद की रचना ही अलग से करनी पड़ी। वातावरण की शद्धि, कठिन रोगों की चिकित्सा, अन्य अनेक सामान्य प्रयोजनों के लिए यज्ञ को सर्वोपरि आश्रय माना गया है। प्रकृति में अनवरत यज्ञीय प्रक्रिया का संचरण हो रहा है।

समुद्र अपना जल सृष्टि के कल्याणार्थ वाष्प के रूप में मेघों को देता है। मेघ ही उसे संचय करके कहां रख पाते हैं? अमृत-वर्षा के समान पृथ्वी को लौटा देते हैं। जिससे अभिसिंचित होकर पृथ्वी अपने हृदय के भंडार को धन-धान्य के रूप में प्राणीमात्र के लिए अर्पित कर देती है। पुनः शेष बचा जल समुद्र की ओर बढ़ता है। यदि ये सभी यज्ञीय भावना को भुला बैठें तो सृष्टि चक्र गड़बड़ा जाए। सूर्य अनवरत तप कर इस चक्र में सहायता करता है। वायु निरंतर बहकर अपना कर्त्तव्य निभाती है। नदियां निरंतर अपना सहयोग देती हैं। यज्ञीय भाव से प्रसन्न होकर देवता अनुदान-वरदान प्रदान करते हैं। गायत्री और यज्ञ एक-दूसरे के पूरक हैं। सद्ज्ञान जब सत्कर्म में परिवर्तित होता है तब इस विश्व ब्रह्मांड में स्वर्गीय वातावरण का निर्माण होता है। इन की आराधना को अध्यात्म के जानकारों ने नित्य कर्म बताया है, किन्तु आज हम इन्हें क्यों भुला बैठे हैं? सद्बुद्धि और सत्कर्म की अवहेलना क्यों हो रही है? आस्था-संकट क्यों पनप रहा है? व्यक्ति अपना शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं सामाजिक संतुलन क्यों गंवा बैठा है? मनुष्य बुद्धि विज्ञान और व्यवसाय में बहुत आगे बढ़ जाने पर भी दुख-दारिद्रय का, शोक-संताप का दारुण कष्ट क्यों सह रहा है? इन सबका कारण स्पष्ट ही है कि हम अपने आध्यात्मिक माता-पिता को भुला बैठे हैं। माता-पिता को तिरस्कृत करके भला कौन सुख पा सकता है?

यदि हम चाहते हैं कि इन संकटों से उबरकर आत्मिक आनंद का अनुभव करें, पृथ्वी पर स्वर्ग का एवं मनुष्य में देवत् का अवतरण हो तो हमें महाप्रज्ञा (गाययत्री) का आश्रय लेना ही होगा। जीवन में यज्ञीय भावना का विस्तार करना ही होगा। इन्हीं दोनों यज्ञ पिता गायत्री माता (माता-पिता) की उंगली पकड़कर ही मानव उज्जवल भविष्य के पथ पर अग्रसर हो सकता है।

ग्यारसी बाई ने ग्यारस उजमी

पैलेस रोड रतलाम पर स्थित अपने किराये के मकान में मंगलवार की दोपहर को सुन्दरलाल तिवारी, उनकी माता ग्यारसीबाई और पत्नी अनुपमा तीनों आराम कर रहे थे। रविवार को दो दिन पूर्व ही संपन्न हुए ग्यारस उजमाने के कार्यक्रम की थकान अभी बाकी थी। गर्मी भी पड़ रही थी। भोजन के बाद वैसे भी ग्रीष्मकाल में आलस्य व पेट का भारीपन सुस्ताने को मजबूर कर देता है। तीनों लेटे हुए रविवार के उत्सव के दिन के साथ अपने विगत जीवन की कई घटनाओं से भी सम्पर्क बना रहे थे।

सुन्दरलाल-शायद यह कार्यक्रम माँ को प्रसन्न कर देवे। वैसे उम्मीद कम ही है। जीवन भर की बनी आदतें और धारणों इस पिच्यासी वर्ष की उम्र में बदलना एक आश्चर्य ही हो सकता है। पता नहीं क्यों वह अपने एकमात्र पुत्र के प्रति ऐसा निर्दय व्यवहार करती हैं। दुनिया की कोई माँ ऐसा नहीं करती। मेरी माँ उनमें से एक अपवाद है। लगता है मेरे स्वर्गीय पिताजी के व्यवहार से रुष्ट मेरी मां ऐसा करती है। शायद वह मुझे उनका प्रतिरूप मानती है और उनसे बदला लेने की भावना से मेरे प्रति ऐसा दुर्व्यवहार करती है। फिर पिताजी का इसमें क्या दोष था? मेरे दादाजी मंदसौर के प्रतिष्ठित ब्राह्मण थे। पिताजी को बचपन में पक्षाघात हुआ था जिसके कारण उनका मुंह बांई ओर तिरछा मुड़ गया था। अन्यथा पिताजी शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ थे। मेरे दादाजी ने उनको उस जमाने के हिसाब से अच्छा पढ़ाया था। वे दसवीं उत्तीर्ण थे। प्रत्येक पिता अपने पुत्र का विवाह करने का उत्तरदायित्व निभाता ही है। मेरे दादाजी ने मेरे पिता की मुखाकृति की विकृति को पुरुष के लिए कोई दोष न मानकर उनका विवाह करा दिया था। मेरे नाना का परिवार गरीब था। उनकी दस संतानों में से छः कन्याएं थीं। मेरे नानाजी का भी दायित्व था कि अपनी कन्याओं को समय पर कन्यादान कर देवें। उन दिनों अल्पायु में ही लड़के-लड़कियों के विवाह होना सामान्य बात थी। जब मेरी मां तेरह की और पिताजी सोलह वर्ष के थे तभी दोनों का विवाह हो गया था। तीन पुत्रियों और एक पुत्र के जन्म के बाद 30 वर्ष की आयु में ही मेरे पिताजी का देहांत हो गया था। उस समय मैं केवल बारह वर्ष का था। माँ जब भी पिताजी का जिक्र करती तो उसमें पिताजी के प्रति सदैव अनादर झलकता था। तीनों पुत्रियों को वे अपना प्रतिरूप और मुझे पिताजी का प्रतिरूप समझती थी। मुखाकृति की विकृति के अतिरिक्त भी कुछ कारण रहे होंगे जो मैं नहीं जानता हूं। उनकी मृत्यु के बाद मेरी माँ अपनी भड़ास मुझ पर निकालती थी। छुटपन में मेरी छोटी-मोटी भूल पर जब माँ का हाथ उठता तो पिताजी को गाली देते हुए वह मेरी धुनाई करती थी।

किन्तु रविवार के कार्यक्रम के दिन तो माँ बहुत अच्छी लग रही थी। उस दिन उसके चेहरे का कठोरपन गायब था। कार्यक्रम के समय पेरावनी में अपने भतीजे के द्वारा लाई गई लाल फूलों वाली सादी सी साड़ी भी उन पर अच्छी लग रही थी। मन से जो प्रसन्न थी।मैं एक-एक कर सूची में से ब्राह्मण जोड़े (पति-पत्नी) का नाम पुकार रहा था। वे लोग जब माँ के पास आकर उसके चरण स्पर्श करते तो वह गद्‌गद् होकर कहती 'बूढ़ो डोकरो होवजो'। आर्शीवाद देती और स्टील का लोटा जिस पर नारियल रखा होता आगन्तुक को सहर्ष भेंट करती। यह अप्रत्याशित ही था कि उस समय उसके चेहरे पर प्रसन्नता विराजित दिखाई दी थी। मुझे भी उस समय अच्छा ही लगा था और सोचता था कि भगवान उसका यह रूप आगे भी बनाए रखे। पंद्रह दिन पहले ही तो जब मैंने उनसे पूछा था-

'माँ कई ग्यारस उजमवा की इच्छा हे?' कैसा तीखा उत्तर था-

'कूण हे म्हारो, जो खर्चो करेगा?'

मैंने कहा था- 'मैं हूं तो तम्हारो बेटो।' जब भी कटु बोलना होता तो वे मालवी में बोलती। इस पर उसका अत्यन्त कचोटता उत्तर था।

'तू करेगो तो थारी लुगई वाते करेगो, म्हारा वाते थोड़ी करोगे' मैंने अत्यंत संयत होकर कहा था-'माँ आपकी और आपकी बहू की दोई की ग्यारस उजमनी है, आप कई दजो एक साथ उजमी दाँऽ! व्यंग्य युक्त उत्तर था-

'यूँ के नी ऽऽ अपनी लुगई की उजमनी हे चलते रस्ते केवाने वई जायगा के माँ की ग्यारस उजमी रिया हाँऽ। म्हूँ जाणू हूँ ऽऽ। मैंने कहा था..

'चलो ऐसोऽज मान लो, पर आप तैयार तो हो' तब कहीं उसने हामी भरी थी।

उस दिन बाईस जोड़ों के अतिरिक्त मैंने अपने रिश्तेदारों और अभिन्न इष्ट मित्रों को भी कार्यक्रम का निमंत्रण दिया

था। उत्सव का माहौल था। तीनों बहिनें भी आई थीं। सब अपने-अपने परिवार से ऐसी जुड़ी हैं कि वे कल ही प्रस्थान कर गई, अन्य मेहमानों के समान।

ग्यारसीबाई- सुन्दर बहुत समझदार है उसने काम कितना अच्छा किया। कितने लोग आए थे। सभी मेरे चरण स्पर्ष कर रहे थे। रानीजी की धर्मशाला ठसाठस भरी थी। पंगत में तीन-तीन मिठाई बनवाई थी। लोग बाग भोजन की तारीफ कर रहे थे। बहुत खर्च हुआ होगा। जोड़े भी बराबरी से न्यौते थे। ग्यारह लाड़ी के और इतने ही मेरे लिए बुलाए थे। दोनों के लिए ग्यारह-ग्यारह चमकते बड़े लोटे भी लाया था। पूजन हवन में कम से कम दो घंटे लगे ही होंगे। सुन्दर आज पैंसठ बरस का हो गया है पर मैंने आज तक कभी उसकी बड़ाई नहीं की। मेरे मन में तो यह बात बैठी हुई है कि यदि सुन्दर को आराम व सुख मिला तो स्वर्ग में उसके बाप की आत्मा को सुख मिलेगा। मैं नहीं चाहती हूं कि वह सुखी होवे। कैसा डांटता और मारता था मुझे। जैसा चेहरे से खराब था वैसा ही अन्दर से भी। मैं भूली नहीं हूं उसको। इसीलिए सुन्दर के पास नहीं रहती हूं। सुन्दर बहुत चाहता है कि मैं उसी के पास रहूं। ऐसा किया तो वह प्रसन्न हो जावेगा और उसके मृत बाप की आत्मा भी। खेती-बाड़ी के अधबटई से जो भी आय होती है उसमें से एक धेला भी इसे नहीं देती हूं। छोरियों की शादी विवाह का खर्चा भी मैंने इसी पर डाला था। इसके लड़के लड़कियों की शादी में भी मैंने कोई मदद नहीं की। इतने पर भी सुन्दर सदा ही मुझसे आदर व प्रेम से बोलता है और बदले में मैं सदा कलह ही घोलती रही। यही सोच कर कि ऐसा करने पर इसके बाप की आत्मा को चैन नहीं मिलेगा। यही मेरे लिए आनंद का कारक था।

कलह करने के लिए कोई कारण थोड़े ही लगता है। जब भी बीते वर्षों में सुन्दर के यहां आई हूं, सदा कोशिश की है कि बहू-बेटे को आपस में लड़ाऊं। जिससे मेरे पति का प्रतिरूप सुन्दर दुखी होवे और साथ में मेरे पति की आत्मा भी। उस दिन सुबह से पोटली बांध कर बैठ गई थी। सुन्दर से बोली थी..

'मुझे गरोठ छोड़ आओ' वह बोला था-

'अभी गाड़ी में बहुत देर है, छोड़ आऊंगा' उसने चाय बनाकर लाकर मुझे दी। मैंने कहा था 'कैसी काली काली चाय है?' वह चाय लेकर गया। उसमें दूध मिलाया, शकर पत्ती डालकर उबाल कर छानकर फिर लाया, तब मैंने पी। ताय पहले वाली भी अच्छी थी पर मुझे को लड़ना था, उसे दुख पहुंचाना। मुझे मालूम था कि गरोठ के लिए देहरादून एक्सप्रेस रतलाम से दोपहर साढ़े बारह बजे के बाद छूटती है, तब भी सुबह से तगादा लगा दिया।

फिर लाड़ी ने जब खाना बना दिया तो ग्यारह बजे खाकर सो गई थी। ऐसी नींद लगी कि दो बजे के बाद खुली। मुझे मालूम था कि गाड़ी अब तक चली गई होगी फिर भी सुन्दर को डांटा और कहा 'तू मुझे छोड़ने नहीं गया'। वह बोला 'आप सोई हुई थीं, गहरी नींद में इसलिए नहीं उठाया।' फिर मैंने गरोठ जाने का विचार छोड़ दिया। पंद्रह दिन और रुकी कलह करने के लिए और बाद में सुन्दर मुझे एक दिन छोड़कर आया था। वह जब भी मुझे गरोठ छोड़ता पांच सौ रुपए अपनी बहन को मेरे लिए देकर आता था।

लाड़ी मुझसे कोई काम करने को कभी नहीं करती है। वह खुद ही कर लेती है। फिर भी जब वह सुबह पानी भर रही होती है तब मैं जानबूझकर बुआरी लेकर फर्श झाड़ने लगती हूं। बैठे-बैठे खिसकते हुए झाड़ने से फर्श की धूल नाक में खुस जाती है और मैं खांसते-खांसते शिकायत करते हुए कहती हूं।

'क्या यह उमर मेरे काम करने की है?' सुन्दर विनम्रता से कहता है

'आपसे कितने कहा था कचरा बुआरने का?' तो मैं कहती हूं

'सात बजने को आ गए, सूरज ऊपर उठ आया, अभी कचरा नहीं निकलेगा तो कब निकलेगा?' बेचारा सुन्दर कहा, 'माँ नल टाइम से आते हैं, पहले पानी भर लेवें, कचरा इसके बाद आपकी बहू निकाल लेगी। आप तो बैठो और राम नाम की माला फेरो।' उसे क्या मालूम कि यह तो मैं उसे व बहू को सताने और लड़ाने को करती हूं।

अनुपमा-सासुजी ग्यारस उजमने के दिन कितनी खुश थीं। ये भी खुश थे। जब भी अपनी माँ को प्रसन्न देखते हैं, इनको अच्छा लगता है। क्या ऐसा हमेशा नहीं हो सकता है। ये तो चाहते हैं कि माँ इनके साथ ही रहे। पर वे मानती ही नहीं हैं। ज्यादातर गरोठ ही रहती हैं। मेरी छोटी नदद के पास। इनका मन दुखी होता है। ये चाहते हैं कि 'अपनी मां की सेवा करूं तो मेरा जन्म सफल होगा। मेरे भाग्य में माता-पिता की सेवा करने का पुण्य लिखा ही नहीं है। पिताजी तो भगवान के प्यारे हो गए और इन्हें समझाना तो मेरे लिए टेढी खीर ही साबित हुआ है।' इनकी इस बात से सहमत होते हुए मैं यह भी सोचती हूं कि यदि भगवान ने हमें इतनी लंबी उम्र दी है और हम अपनी संतान के पास रहने गए तो वे प्रश्न कर सकते हैं कि 'आपने अपनी माँ को अपने पास क्यों नहीं रखा था।' कैसा दुर्भाग्य है कि हम दोनों उनको आदर से अपने पास रखना चाहते हैं और मेरी सास लड़की के पास गरोठ में ही रहना चाहती है। यहां जब भी रहेगी कोई न कोई झगड़ा या बखेड़ा खड़ा करेगी और गरोठ जाने की रट लगाने लगेगी। इन झगड़ों के कारण कई बार मैं अपनी बहन के यहां इंदौर चली जाती हूं। ये अकेले ही उनकी देखभाल करते हैं। तब भी खुश नहीं रहती। शायद पिछले जन्म की बैरी है।

पिछले पखवाड़े इनके मित्र दंपत्ति आए थे। बैठक में इनके

साथ मैं भी बातचीत में बैठ गई थी। हमारा इस प्रकार बैठकर बातें करना सासुजी को अखरा। हम लोग किसी बात पर हंस रहे थे। मेरे पति जब भी हंसने के माहौल में होते हैं, सासुजी को बिलकुल भी नहीं सुहाता। वे चलकर चमल तक आईं और गुस्से में बोली,

'कई, आज चा नी मलेगा?' इन्होंने कहा

'माँ अभी तो ढाई ही बजे हैं, चाय तो आप चार बजे लेते हैं' मुंह बिचकाते हुए उनका प्रतिप्रश्न था

'कई चार का पेला चा पीनो मना हे?

मैं उसी समय उठी, उनके लिए एक कप चाय बनाई और उनको लाकर दी। वे चाय पीने की इच्छा सामान्य तरीके से भी व्यक्त कर सकती थी। दूसरों के सामने कलह उत्पन्न करने का उनका अपना एक तरीका है जिसे वे उपयोग में लाई थी। इसमें उन्हें आनंद मिलता है। ये दुखी होते हैं। शायद सासुजी यही चाहती हैं।

मेरे बेटी और दामाद यहीं रतलाम में दीनदयाल नगर में रहते हैं। एक दिन वे दोनों आए थे। सुषमा ने दादी को अपने साथ ले जाना चाहा। भाग्य से सासुजी तैयार हो गए। कार में बैठकर जाना उन्हें जाना अच्छा लगा। अब्दुल मेरे दामाद का कंपाउंडर है। दामाद के यहां धर्म-जाति का भेद नहीं चलता है। अब्दुल को पानी की आवश्यकता थी शरबत बनाने के लिए। सुषमा ने उसे जग भर कर दिया। सासुजी देख रही थी कि अब्दुल परेण्डी के पास खड़ा था और उसका शर्ट पानी के हण्डे से छू रहा था। उसके जाने के बाद सासुजी ने बिना किसी से कुछ कहे सभी हण्डे, कोठी और मटके का पानी ढोल दिया। मटके को पीछे बाड़े में ले जाकर फोड़ दिया। घर में पीने के पानी की एक बूंद नहीं बची। उसी रात को वे लोग सासुजी को हमारे यहां छोड़ गए। गुस्से में इनसे कहने लगी 'कभी मैंने नहीं देखा होता तो ये लोग मुझे भ्रष्ट कर देते।' इनका दुखी होना स्वाभावित था और वे प्रसन्न थीं।

एक बार होली के दिन घर में लड्डू बाफले बनाए थे। ये कहीं से पंद्रह-बीस कण्डे क्रय करके लाए थे। कण्डों की ठंडी राख को एक मटके में भर कर रख दिया था। दूसरे दिन सुबह मैंने बर्तन मांज धोकर रखे थे। वे सूख रहे थे। तभी सासुजी उठी। मटके में से राख ले आई और उन मंजे-धुले बर्तनों को फिर से मांजने बैठ गई, कण्डे की राख से। इन्होंने सासूजी से कहा-

'माँ बर्तन तो आपकी बहू ने मांज दिए थे।' हम दोनों के मर्म को भेदता उत्तर था-

'कई मांजी लिया। राखोडो? ईऽ पावडर चालीग्या है, चिकणा चिकणा। बाई साब ओऽण का हाथ जो फाटेनीऽ राख से। अणी वाते पावडर से मांजे। पण कण्डा की राख की कई बराबरी करेगा ईऽऽ चिकणा पावडर।' वे नहीं मानी और सभी बर्तनों को उन्होंने राख से मांजा। मुझे उनकी आंख बचाकर राख से मुक्ति दिलाने के लिए एक बार फिर उन बर्तनों को पानी से धोकर सुखाना पड़ा।

उस दिन मंगलवार को लेटे लेटे विगत के घटनाक्रमों में भटकते हुए तीनों प्राणियों को झपकी लग गई। शाम चार बजे के आसपास सबसे पहले अनुपमा उठी। आंखों पर पानी के छींटे देकर नींद की खुमारी को भगाने का यत्न किया। चार बजने वाली थी। उसने चाय बनाई और अपने पति और सास को उठाया। सास जहां बैठी थी वहां पर एक कप चाय और बिस्कुट रके तथा दो कप हमेशा अनुसार बैठक में ले गई। सास ने बहू को पुकारा-

'सुन्दर! वणी दन वालो पंडित म्हने विद्वान लगे रे। कां को हे यो पंडित?' सुपुत्र ने अपनी माता की रुचि का समुचित उत्तर दिया-

'माँ, इसके पिताजी राज्य पंडित थे और उन्होंने अपने सुपुत्र को बनारस पढ़ने के के लिए भेजा था। वहां से यह बालक विद्याध्ययन करके लौटा। कर्मकाण्ड के साथ यह पंडित अपने वेदों, पुराणों और उपनिषदों का भी मर्मज्ञ है। इसीलिये कर्मकाण्ड कराते समय वह ऋषियों के कथनों को भी समय-समय पर कहता जाता है।'

ग्यारसीबाई ने जिज्ञाता से एक प्रश्न किया-

'वह आत्मा के मरने न मरने के बारे में क्या कह रहा था?'

तब सुन्दर ने संदर्भित कतन के अंश और उससे संबंधित अर्थ को अपनी माता को सुनाते हुए कहा

'माँ, पंडित भगवान कृष्ण द्वारा कहे गए आत्मा संबंधी विचारों को सुना रहा था'

जिनके अनुसार-आत्मा को शस्त्र छेद नहीं सकते हैं। अग्नि जला नहीं सकती है, जल गीला नहीं कर सकता और वायु सुखा नहीं सकती है। आत्मा कभी जन्म नहीं लेती और न मरती है, वह नित्य और शाश्वत है। उसे न तो दुख पहुंचता हौ ओर न ही सुख।

यह सुनकर वृद्धा ग्यारसीबाई ने अपने पास ही बैठे हुए अपने पुत्र सुन्दर को बांहों में भरकर उसके सिर को अपनी दाहिनी जांघ पर ले लिया। वह सुन्दर के मुख और शरीर के अन्य भागों पर अपनी हथेली फेरती रही और एकाएक उसे चूम लिया। अनुपमा इस दृश्य को देखकर चकित होकर अत्यंत हर्षित हुई और वह भी अपनी सास की दूसरी जांघ पर लुढ़क गई। ग्यारसीबाई ने दोनों पर स्नेह से हाथ फेरे और कहा-

'बेटा सुन्दर, मेरी धारणा थी कि तुझे कष्ट पहुंचाने पर स्वर्ग में तेरे पिता की आत्मा को दुख पहुंचेगा। पर इस ज्ञान से पता चलता है कि आत्मा तो सुख-दुख के माया जाल से मुक्त है। मैं कितनी गलती पर थी।

'बेटा! अब मैं गरोठ नहीं जाऊंगी। तुम्हारे साथ ही रहूंगी। अन्त समय तक।

बदलता मौसम और बॉडी क्लॉक

मौसम बदलता है और उसके साथ बदलता है, बॉडी क्लॉक और मूड भी। कुछ लोग ठंड के मौसम में सर्दी-खांसी और इस तरह की अन्य समस्याओं से परेशान रहते हैं, तो कुछ इस मौसम में डिप्रेशन के शिकार भी हो जाते हैं। लंबी रातें, छोटा दिन, स्वेटर, गरम कपड़े और ठंडा मौसम अकसर हमें बीमार और अवसाद का शिकार बना देते हैं। इस अवसाद को सीजनल अफेक्टिव डिस्ऑर्डर और आम भाषा में विंटर टाइम ब्लूज कहा जाता है। अभी तक इस डिप्रेशन के प्रमुख कारण का पता नहीं चल पाया है, पर कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि सूरज की रोशनी में कमी इस डिप्रेशन का कारण हो सकती है। वैसे तो हर कोई सर्दियों में कोल्ड और फ्लू आदि का शिकार हो सकता है, पर बुजुर्ग, गर्भवती महिलाएं, डायबिटीज और दिल के मरीज, बच्चे और एचआईवी से संक्रमित लोगों में इस मौसम में बीमार होने का खतरा ज्यादा रहता है। यदि आप हाई रिस्क कैटेगरी में नहीं हैं, फिर भी आप सर्दियों की इन बीमारियों का शिकार हो सकती हैं, इसलिए बेहतर यही है कि समय रहते सावधानी बरती जाए।

सर्दियों की कुछ आम बीमारियां हैं जो हर किसी को अपना शिकार बना लेती हैं, फिर चाहे वे बच्चे हों या बुजुर्ग। आइए जानें, कुछ ऐसी ही बीमारियों और उनसे बचने के तरीकों के बारे में :

कफ ऐंड कोल्ड :

शोध से ये बात सामने आई है कि सामान्यत: एक व्यक्ति को साल में कम-से-कम तीन बार कोल्ड होता है और उसमें भी ठंड के मौसम में इसके होने की आशंका और बढ़ जाती है। वातावरण के तापमान में कमी के कारण कंपकंपी, शरीर के तापमान में अचानक आई कमी और पर्याप्त मात्रा में सूरज की रोशनी न मिल पाना वो कुछ प्रमुख कारण हैं, जिनकी वजह से साल के इस मौसम में वातवारण में घूमने वाले 200 या उससे ज्यादा वाइरस हमें कफ और कोल्ड का शिकार बना लेते हैं।

कैसे बचें इससे

- ⇨ अपने हाथ को दिन भर में ज्यादा-से-ज्यादा साफ करें। संक्रमित व्यक्ति से हाथ मिलाना या फिर दरवाजे का हैंडल या फिर इस तरह की किसी और संक्रमित जगह को छूने के बाद नाक या आंख को छूना कॉमन कोल्ड का एक प्रमुख कारण है।
- ⇨ हर दिन विटामिन सी की टैबलेट खाएं। इससे आपका इम्यून सिस्टम मजबूत होगा और कॉमन कोल्ड से लड़ने की आपकी क्षमता बढ़ेगी।
- ⇨ तनाव से दूर रहने की कोशिश करें, क्योंकि इससे इन्फेक्शन से लड़ने की शरीर की क्षमता घट जाती है।
- ⇨ प्रतिदिन कम-से 30 मिनट तक एक्सरसाइज करें।
- ⇨ संतरे के जूस को गुनगुने पानी के साथ सर्दी के मौसम में नियमित रूप से पिएं, इससे कफ ऐंड कोल्ड की समस्या आपसे दूर रहेगी।
- ⇨ पालक के गुनगुने जूस से गरारे करें, इससे कफ आसानी से निकल जाएगा।

फ्लू :

कफ ऐंड कोल्ड और फ्लू के बीच अंतर कर पाना जरा मुश्किल है, लेकिन फ्लू हमें अपना शिकार तेजी से बनाती है और इससे परेशानी भी ज्यादा होती है। हाथ-पैर में दर्द, तेज बुखार और थकान इस रोग के कुछ प्रमुख लक्षण हैं। फ्लू संक्रामक बीमारी है और एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक तेजी से पहुंचती है।

कैसे बचें इससे

- ⇨ ज्यादा-से-ज्यादा आराम करें और जितना संभव हो तरल पदार्थ पिएं।
- ⇨ चूंकि कोल्ड और फ्लू वायरल बीमारी हैं, इसलिए एंटीबायोटिक आपको इसमें ज्यादा मदद नहीं पहुंचा सकते हैं।
- ⇨ मौसम ठंड का है और आपको पानी छूना कतई पसंद नहीं है, पर यदि आप फ्लू से खुद को बचाना चाहते हैं, तो दिन भर में समय-समय पर हाथ को पानी से धोते रहें। हाथों को अच्छी तरह से धोने के लिए उन्हें गुनगुने पानी से भिगाएं और फिर साबुन या हैंडवॉश लेकर उसे अच्छी तरह हाथों में लगाएं। 30 सेकंड तक उससे निकलने वाले झाग से हाथों का मसाज करने के बाद हाथों को अच्छी तरह साफ पानी से धो लें। हाथों को ठीक से सुखा लें।
- ⇨ छींकते या खांसते समय मुंह को हाथ से न ढंकें। ऐसा करने पर वायरस पहले आपके हाथ और फिर दूसरों तक पहुंचेगा। इसके लिए टिश्यु पेपर का प्रयोग करें और उपयोग में लाने के बाद उसे फेंक दें।
- ⇨ बार-बार हाथ से चेहरे को न छुएं। कोल्ड वायरस आंख, नाक और चेहरे के माध्यम से ही शरीर में प्रवेश करते हैं, इसलिए ऐसा करने से बचें।
- ⇨ ज्यादा-से-ज्यादा मात्रा में पानी पिएं, इससे आप स्वस्थ रहेंगी।

गले और नाक की समस्या

कोल्ड और फ्लू के बाद अकसर गले और नाक की परेशानी हो जाती है। नाक की परेशानी तो कोल्ड खत्म होने के बाद भी लंबे समय तक बनी रहती है।

कैसे बचें इससे

हल्दी, लाल मिर्च पाउडर और अदरक जैसे भारतीय मसाले इस परेशानी को दूर भगाने में रामबाण का काम करते हैं। स्मोकिंग न करें और धुएं भरे वातावरण से दूर रहें। शराब न पिएं और स्टीम लेने की कोशिश करें।

नींद की कमी से भी होते हैं आंखों के गिर्द काले धब्बे

आंखों के आसपास काले धब्बे पड़ जाएं तो चेहरे की सारी खूबसूरती खत्म हो जाती है। इसलिए कोशिश करनी चाहिए कि या तो ये धब्बे नहीं पड़ें या फिर पड़े हुए धब्बे समाप्त हो जाएं। मगर पहली कोशिश तो नहीं पड़ने की ही करनी चाहिए। इसके लिए सबसे जरूरी है कि नींद पूरी लें, रात को जल्दी सोंए ताकि जल्दी उठ सकें। नींद पूरी नहीं लेने से भी आंखों के आसपास काले धब्बे पड़ जाते हैं।

इन धब्बों का कारण यह भी होता है कि महिलाएं आवश्यकता से अधिक दुबली और नाजुक दिखना चाहती हैं। उन्हें इस सच का साहस के साथ सामना करना चाहिए कि लाख कोशिश के बाद भी वे कम उम्र लड़कियों की तरह नहीं दिख सकती हैं। महिला या खासकर मां बनने के बाद शरीर में थोड़ा ढीलापन और चर्बी बढ़ जाती है। महिला अगर बहुत दिन तक लड़की की तरह छरहरी दिखे यही भी अच्छा नहीं। शरीर में थोड़ा भारीपन उनमें गरिमा लाता है।

डाइटिंग करने से शरीर में बहुत सी चीजों की कमी आ जाती है। कुछ महिलाएं सुबह का नाश्ता नहीं करतीं जिसके कारण भी काले धब्बे पड़ जाते हैं। सुबह का नाश्ता चाहे हल्का ही क्यों न हों लेकिन करना जरूर चाहिए क्योंकि रात के खाने के बाद पेट सुबह तक खाली रहता है इसलिए सुबह का नाश्ता न करना हानिकारक हो सकता है। अगर जी कुछ खाने को न चाहे तो भी दूध के साथ एक सेब या जूस का एक ग्लास ले लेना चाहिए इसके अलावा मन में शांति भी रखनी चाहिए, इसके लिए अपने आपको हमेशा खुश रखने की कोशिश करें।

ज्यादा सोचने या दु:ख व चिंता से भी आंखों के आसपास काले धब्बे पड़ जाते हैं और अगर ये धब्बे पड़ गये तो आपकी सुंदरता समाप्त हो जाती है। इसलिए इन्हें दूर करने की तुरंत कोशिश करें। इन धब्बों को दूर करने के लिए कुछ बातों पर ध्यान देना जरूरी है-

- आंखों के आसपास आहिस्ता-आहिस्ता रोगन बादाम से मालिश करें।
- कच्चा खीरा कुचल कर उसकी दो पोटलियां बना लें और फिर सीधा लपेट कर पंद्रह से बीस मिनट तक आंखों पर रखें।
- खीरा काटकर भी आंखों पर रखा जा सकता है। रोजाना सुबह उठकर और रात को सोने से पहले आंखों पर ठंडे पानी से छींटें मारें। नींबू के रस को गर्म पानी में डालकर आंखों के आसपास लगाने से काले धब्बे दूर हो जाते हैं।
- नींबू के रस में रोगन चमेली की कुछ बूंदें मिलाकर रात को सोने से पहले आंखों के पास मसाज करें।
- रात को सोने से पहले आंखों के पास दूध की थोड़ी मात्रा लगाकर सो जाएं। सुबह उठने के बाद दूध की तह को पानी से छुड़ाने के बजाए गुलाब जल से छुड़ाएं। क्योंकि अगर इसे पानी या साबुन से छुड़ाया गया तो इसका प्रभाव जाता रहेगा।
- प्रतिदिन थोड़ी सी मूली कुचलकर दिन में तीन-चार बार रूई की सहायता से लगाएं।
- नींबू का छिलका पीसकर किसी क्रीम में शामिल कर लें और रात को आंखों के पास लगाएं। थोड़े ही दिन में धब्बे दूर हो जाएंगे। उसके साथ-साथ कैल्शियम की गोलियां भी लेती रहें। कच्चे आलू का टुकड़ा पंद्रह मिनट तक आंखों के ऊपर रखें।
- मलमल के टुकड़े को नारंगी के रस में भिगो कर आंखों के आसपास रखना बहुत अधिक लाभदायक है। आंखों के नीचे जैतून के तेल से मालिश करना भी फायदेमंद होता है।
- चाय के हल्के कहुए या बनी हुए चाय की पत्तियों की पोटली बनाकर आंखों पर पंद्रह मिनट के लिए रखें, लाभदायक होगा।
- कच्चे दूध के झाग को आंखों के ऊपर-नीचे लगाकर आधे घंटे के बाद ताजे पानी से धो लें, लाभप्रद होगा। चार-पांच इलायचियां दूध में मिलाकर उबाल लें फिर गर्म या ठंडा जैसा चाहे पी लें। दस-पंद्रह दिन तक ऐसा करने से न सिर्फ आंखों के धब्बे दूर होते है बल्कि चेहरे की रंगत भी साफ होती है। इस तरह आप आंखों के काले धब्बे से छुटकारा पा सकती हैं।

कामकाजी महिलाओं के लिए दोतरफा चुनौती

रेखा को जब नौकरी मिली तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। लेकिन धीरे-धीरे अपनी खुशियां उसे एकदम धूमिल होती नजर आने लगीं। रेखा पहले दिन जब आफिस गई तो वहां का वातावरण उसे बहुत अच्छा लगा। शुरू-शुरू में तो सभी सहकर्मियों का व्यवहार भी अच्छा रहा। लेकिन धीरे-धीरे पुरुष सहकर्मियों के प्रति उसकी धारणा बदलने लगी, हर पुरुष उसे अजीब नजरों से देखता।

पहले जींस और शर्ट पहन कर आफिस जाने वाली रेखा को लगा कि इसका कारण शायद उसके आधुनिक कपड़े ही हैं। अतः उसने अपने कपड़ों पर ध्यान दिया और आफिस जाने के लिए ऐसे वस्त्र पहनने शुरू किये, जिनमें बदन न दिखता हो। वह आफिस में काम करते समय भी सतर्क रहती थी कि कहीं उसका बदन न दिखाई दे। साड़ी के पल्लू और दुपट्टे को वह हमेशा व्यवस्थित रखती थी फिर भी पुरुष सहकर्मियों की निगाहें उसे वस्त्रों के अंदर कुछ तलाशती सी महसूस होतीं। यह स्थिति रेखा के लिए बड़ी अजीब थी।

यही नहीं एक दिन तो हद ही हो गई, जब उसका एक पुरुष सहकर्मी जोकि उसमें बहुत रूचि लेने लगा था और जिसे रेखा ने समझाते हुए कहा भी था कि वह शादीशुदा है और उसका अपने पति पर पूरा विश्वास है तथा दोनों का मजबूत दांपत्य है। लेकिन इन सबके बावजूद वह कुछ समझने को तैयार नहीं था। उसने एक दिन प्रेमपत्र लिखा और रेखा की मेज पर छोड़ दिया। रेखा ने जब पत्र देखा तो वह गुस्से में आ गई और उसने वह पत्र अपनी एक महिला सहकर्मी को दिखाया तो उसने बताया कि आफिस में इसके पहले भी कुछ महिलाओं के साथ ऐसी घटनाएं घटी हैं। महिलाओं ने जब विरोध किया तो उन्हें बदनामी उठानी पड़ी। कुछ महिलाओं को तो इस बदनामी के चलते मजबूर हो कर नौकरी तक छोड़नी पड़ी।

रेखा जैसी एक नहीं अनेकों महिलाएं हैं, जो अपने पुरुष सहकर्मियों के कारण मानसिक और शारीरिक रूप से परेशान रहती हैं लेकिन अब इन महिलाओं को नौकरी छोड़ने या पुरुष सहकर्मियों से दबने की आवश्यकता नहीं है। आज केन्द्र सरकार सहित विभिन्न राज्य सरकारों में एक प्रकार के शिकायत प्रकोष्ठ की व्यवस्था है, जिनमें महिलाएं अपनी शिकायत दर्ज करवा सकती हैं। लेकिन होता यह है कि महिलाएं बदनामी के डर से किसी से शिकायत नहीं करतीं और स्वयं में घुट कर रह जाती हैं।

महिलाओं को यह समझना चाहिए कि बदलते परिदश्य और आधुनिक जीवनशैली की एक आवश्यकता है कि वह घर की जिम्मेदारी संभालने के साथ-साथ आफिस की जिम्मेदारी भी संभालें। अगर कोई महिला कार्यालय के किसी सहयोगी से परामर्श लेती है, किसी बहस में गर्मजोशी से भाग लेती है तो पुरुष उस महिला के प्रति गलत धारणा बना लेता है। उसे लगता है कि वह महिला उसमें रूचि ले रही है।

अतः वह इसका लाभ उठाने के लिए तैयार रहता है। कभी-कभी वह अनुचित प्रयास भी करता है। ऐसे में महिला यदि शिकायत भी करे, तो गलत उसे ही ठहराया जाता है। वैसे यह तथ्य भी उभर कर आया है कि कामकाजी महिलाओं को छेड़ने के मामले में उनके बॉस की भूमिका कम होती है। इस संदर्भ में कई लोगों का कहना है कि महिलाओं से छेड़छाड़ में सहयोगियों का हाथ ही अधिक होता है। कामकाजी महिलाएं ऐसे मामलों में परिवार के सदस्यों की बजाय दोस्तों से सलाह लेना अधिक पसंद करती हैं। खासकर वे इस बात की चर्चा अपने पति से कभी नहीं करतीं। उन्हें इस बात का भय रहता है कि पति उन्हें गलत समझेंगे और उनका दांपत्य टूट जाएगा।

महिलाओं को चाहिए कि वह आफिस में अपने काम से काम रखें और बेफालतू की बातों में न उलझें। वैसे पुरुष कर्मियों का भी यह फर्ज बनता है कि वह हंसी मजाक तो करें लेकिन उसकी एक सीमा हो। दोनों पक्षों को यह ध्यान रखना चाहिए कि वह मर्यादा की सीमा को न लांघें और न ही ऐसी स्थितियां पैदा करें जिससे दूसरा व्यक्ति मानसिक तनाव में आ जाए।

भारत ही नहीं अन्य देशों में भी पूजित हैं गणेशजी

गणेश ऐसे देवता हैं जो सम्पूर्ण भारत में ही नहीं अपितु विश्व के अन्य अनेक देशों में भी किसी न किसी रूप में प्रतिष्ठित हैं। पड़ोसी देश नेपाल में गणेश को सूर्य विनायक, सूर्यगणपति अथवा हेरंब के नाम से जाना जाता है। यहाँ हेरंब गणेश के पाँच सिर और दस हाथ मिलते हैं। यूनान के प्राचीन ग्रंथों में बुद्धि के देवता के रूप में 'जानस' का जिक्र मिलता है वह गणेश का ही एक रूप हैं जिनके सात सिर और एक सूंड है। अन्य पड़ोसी देशों और दूसरे महाद्वीपों में भी गणेश से मिलती-जुलती अनेक प्रतिमाएँ मिलती हैं जिहें गणेश की तरह ही पूजा जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि वैदिक काल से लेकर आज तक संपूर्ण विश्व की संस्कशति में गणेश किसी न किसी रूप में अवश्य ही विद्यमान है।

यदि धर्म की बात करें तो गणेश मात्र हिंदुओं के ही नहीं बल्कि जैन और बौद्धों के भी आराध्य देव हैं। जैन संप्रदाय में ज्ञान का संकलन करने वाले गणाध्यक्ष हैं गणेश। महाभारत के लेखक के रूप तो गणेश जाने ही जाते हैं। वेद व्यास ने महाभारत की रचना की लेकिन उनके सहायक हुए गणेश। वेदव्यास बोलते गए और गणेश अपने हाथों से लिखते गए। गणेश के हस्तिमुख पर स्थित दंतद्वय में से एक टूटा हुआ है। कहा जाता है कि इसी टूटे हुए दांत से गणेश ने महाभारत की कथा को लिपिबद्ध किया था। बौद्ध धर्म की अनेक शाखाओं में मान्यता है कि गणेश वंदना के बिना मंत्रसिद्धि असंभव है। नेपाल एवं तिब्बत के अनेक मंदिरों में बुद्ध की प्रतिमाओं के साथ-साथ गणेश की प्रतिमाएँ भी स्थापित हैं। गणेश किसी धर्म या मत विशेष के नहीं अपितु धर्म का जो मूल तत्त्व है उसके प्रतीक हैं।

गणेश की बाह्य रूपाकशति कुछ विचित्र-सी ही प्रतीत होती है। धड़ मनुष्य का तथा सिर हाथी का। पैर मनुष्य की तरह दो लेकिन हाथ चार या कभी-कभी छः, आठ या दस भी। शरीर के विभिन्न अंगों में भी संतुलन का अभाव तथा अत्यंत स्थूलकाय। स्वयं स्थूलकाय पर वाहन के रूप में मूषक महाशय। ऊपर से देखने पर तो यह विचित्र सा लगता है परन्तु यदि हम गणेश के शरीर के विभिन्न अंगों की प्रतीकात्मकता पर विचार करें तो प्रत्येक अंग एकाधिक आध्यात्मिक संदेश प्रदान करता है। संतुलन बाह्य नहीं आंतरिक होना भी अनिवार्य है। शरीर, मन और बुद्धि में उचित संतुलन और तालमेल होगा तभी व्यक्ति आध्यात्मिक क्षेत्र में पदार्पण कर आत्मज्ञान प्राप्त कर सकेगा। सुकरात अथवा लिंकन की बाह्य कुरुपता उनके विकास और उन्नति में बाधक नहीं बनी। उनके विचार आज भी प्रेरणास्पद है। गणेश अपने संपूर्ण शरीर और परिवेश में प्रेरणादायक हैं।

सबसे पहले गणेश के हस्तिमुख पर विचार करते हैं। शिव द्वारा पहले तो गणेश का सिर काटना और फिर उस पर मानवमुख की बजाय हाथी का सिर आरोपित करना वास्तव में प्रतीकात्मक ही है। मनुष्य सकारात्मक और नकारात्मक भावों अथवा वशत्तियों का समुच्चय ही तो है लेकिन यदि नकारात्मकता बढ़ जाती है तो उसका उन्मूलन अनिवार्य है। सिर या मस्तिष्क अहंकार का प्रतीक है। जब तक सिर रूपी अहंकार को उतार कर नहीं फेंका जाता तब तक आध्यात्मिक उन्नति संभव ही नहीं। आध्यात्मिक उन्नति के अभाव में भौतिक उन्नति भी असंभव है और यदि आध्यात्मिक उन्नति के बिना भौतिक उन्नति प्राप्त कर भी ली जाती है तो जीवन में संतुलन संभव नहीं। शरीर, मन और आत्मा का एक धरातल पर आना ही वास्तविक उन्नति है। जीवन में संतुलन के लिए अहंकार की समाप्ति अथवा शिरोच्छेदन अनिवार्य है। प्रेम भी जीवन का अनिवार्य तत्त्व है। अहंकार के साथ प्रेम भी असंभव है। तभी कबीर भी कहते हैं-

यह तो घर है प्रेम का खाला का घर नाहिं।सीसा उतारे भुईं धरै तब पैठे घर माहिं।।

अहंकार के रहते आपको महत्त्व नहीं मिल सकता। अहंकार का समापन ही किसी को नायक, गणपति अथवा अग्रपूज्य बना सकता है। हाथी बुद्धिमत्ता का प्रतीक है। हाथी का सिर

पुनर्स्थापित होने का अर्थ है ज्ञान की प्राप्ति का प्रारंभ । अहंकार गया तो आत्मज्ञान होते देर नहीं लगती। आत्मज्ञान के प्राप्त होने पर अहंकार का विसर्जन स्वाभाविक है। अहंकार के साथ अन्य नकारात्मक वशत्तियां भी चली जाती है। पुनर्जन्म की स्थिति है ये। एक सिर को काट कर दूसरा सिर लगाना या दूषित रक्त को निकालकर स्वस्थ रक्त चढ़ाना पुनर्जन्म नहीं तो और क्या है? पुनर्जन्म से तात्पर्य शारीरिक मश्त्यु नहीं अपितु दूषित मनोभावों से मुक्ति है। जब व्यक्ति के दूषित मनोभाव तिरोहित हो जाते है तभी वह सही अर्थो में जीना प्रारंभ करता है। गणेश का हस्तिमुख आपको लगातार स्मरण कराता रहता है कि आपको हर हाल में अपनी जड़ता और दूषित मनोभावों अथवा विकारों से मुक्त होना है।

हाथी शक्ति, साहस और धैर्य का प्रतीक है। हाथी में अनुशासन भी है और स्वामिभक्ति भी। हाथी के पैर मजबूत तथा सूंड लचीली होती है। जीवन में स्थायित्व भी हो अर्थात् इरादों में फौलाद-सी मजबूती तथा समय के साथ परिवर्तित होने का गुण भी। जिसके विचारों में जड़ता न हो वही सबको साथ लेकर चल सकता है। लोकतंत्र में राष्ट्रपति का पद सर्वोच्च माना गया है क्योंकि राष्ट्रपति किसी भी प्रकार की दलगत राजनीति से ऊपर उठ कर, पूर्वाग्रह से मुक्त होकर निरपेक्ष भाव से कार्य करता है। वह सबकी भावनाओं को समझकर सही निर्णय लेने में सक्षम है। निर्णय के समय उसमें लचीलापन है लेकिन निर्णय के कार्यान्वयन में दृढ़ता भी। जब तक किसी व्यक्ति में पूर्वाग्रह तथा अहंकार है, दृढ़ता तथा लोच का अभाव है वह सर्वोच्च पद के लायक नहीं है। गणेश के चारों हाथों में से एक में अकुंश है, दूसरे में पाश, तीसरे में मोदक तथा चौथा आशीर्वाद की मुद्रा में। अकुंश प्रतीक है विषय-वासनाओं पर नियंत्रण का तथा पाश प्रतीक है मन तथा इंद्रियों पर नियंत्रण का। इंद्रियों को वश में रख कर मन को नियंत्रित करो उसमें विषय-वासनाओं और विकारों के उत्पन्न होने पर रोक लगाओ। इच्छाओं पर नियंत्रण कर संयमित जीवन जीओ। मनुष्य के जीवन में रूपांतरण तभी संभव है जब भावनाओं को परिष्कश्त किया जा सके। तभी नये मनुष्य का जन्म संभव है। मोदक प्रतीक है आनंद का, सात्त्विक आहार का। मोदक तत्त्वज्ञान का भी प्रतीक है। निष्काम कर्म द्वारा व्यक्ति कर्म के बंधन से मुक्त होकर आनंद की प्राप्ति करने में सक्षम है। अभय मुद्रा जीवन में निडरता के साथ आगे बढ़ने का संदेश देती है। जब तक किसी भी प्रकार का भय है हम आगे नहीं बढ़ सकते। मश्त्यु का भय ठीक से जीने नहीं देता, रोग का भय स्वस्थ नहीं रहने देता, निर्धनता का भय समश्द्धि से दूर ले जाता है।

निर्भय होकर ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति संभव है।

गणेश का वाहन है नन्हा चूहा जो एक अत्यंत क्षुद्र जीव है। गणेश समता के प्रतीक हैं। उनका सिर पश्थ्वी पर सबसे बड़े प्राणी हाथी का तथा वाहन अत्यंत छोटा प्राणी चूहा। समाज के विकास के लिए न केवल सभी वर्गों के लोगों का मिल-जुलकर रहना और कार्य करना अनिवार्य है अपितु धरती पर भी सभी जीवों का अस्तित्व महत्त्वपूर्ण है। इस श्रंखला में यदि एक प्राणी की भी उपेक्षा हुई अथवा उसका लोप हो गया तो मानव जीवन संकट में पड़ जाएगा। सामाजिक विकास के साथ-साथ जीव-जंतुओं और प्रकशति के संरक्षण की भी अत्यंत आवश्यकता है।

गणेश की प्रतीकात्मकता की प्रासंगिकता मात्र धार्मिक और आध्यात्मिक दशष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं अपितु व्यक्ति के स्वयं के विकास, सामाजिक जीवन तथा राष्ट्र की उन्नति के संबंध में भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है। गणेश की प्रतीकात्मकता अत्यंत व्यापक है और इसी व्यापकता के कारण गणेशोत्सव मनाने की परंपरा का शुभारंभ और विकास हुआ।

गणेश चतुर्थी अर्थात् गणेश जन्मोत्सव भारत के प्रसिद्ध पर्वों में से एक है। महाराष्ट्र और देश के दूसरे भागों में जहां महाराष्ट्र के मूल निवासी रहते हैं वहां यह पर्व ग्यारह दिन तक मनाया जाता है। पहले दिन बड़ी धूम-धाम से गणेश की सुंदर-सुंदर प्रतिमाएं स्थापित की जाती हैं और ग्यारह दिन तक पूजा-पाठ करने के उपरान्त अनन्त चतुर्दशी के दिन मूर्तियों को जुलूस के रूप में नाचते-गाते हुए ले जाकर नदी, तालाब या समुद्र के किनारे जल में विसर्जित कर दिया जाता है। गणेश प्रतिमाओं की स्थापना, पूजा-पाठ और विसर्जन घरों में व्यक्तिगत रूप से, गणेश मंडलों अथवा अन्य सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा सामूहिक रूप से दोनों तरह किया जाता है। महाराष्ट्र में सार्वजनिक रूप से गणेशोत्सव मनाने की परंपरा की शुरुआत उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में लोकमान्य तिलक ने पुणे से की।

वैसे सामूहिक गणेशोत्सव की स्थापना का प्रारंभ 1885 में शोलापुर के आजोबा गणपति मंदिर में हो चुका था। जब तिलक यहां आए तो उन्होंने इस सार्वजनिक गणेशोत्सव से प्रेरणा लेकर 1893 में पूरे महाराष्ट्र में सामूहिक गणेशोत्सव मनाने की पंरपरा शुरू की जो आज भी विद्यमान है और जिमसें लगातार नये आयाम जुड़ते जा रहे हैं। लोकमान्य तिलक ने धर्म के माध्यम से राजनीतिक व सामाजिक चेतना के विकास के लिए सामूहिक गणेशोत्सव को एक आन्दोलन के रूप में स्थापित किया। उस समय देश को स्वतंत्र कराना एक अहम मुद्दा था। सामूहिक गणेशोत्सव आयोजन के माध्यम से इसकी चेतना का विकास खूब किया गया। आज भी गणेश की पूजा-अर्चना के साथ-साथ समसामयिक समस्याओं को इन आयोजनों के माध्यम से बख़ूबी प्रस्तुत किया जा रहा है। कई सरकारी और ग़ैर सरकारी संगठन भी इसमें बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं और इसके जरिये अपना संदेश प्रसारित करते हैं। गणेशोत्सव सादगी से मनाने और इसके द्वारा होने वाले प्रदूषण को रोकने के लिए लोगों में जागृति उत्पन्न करने के लिए भी इसी मंच का सहारा लिया जा रहा है। इससे गणेश और गणेशोत्सव दोनों ही आधुनिक संदर्भ में अधिकाधिक प्रासंगिक हो जाते हैं।

महिलाओं की बराबरी सिर्फ कागज पर हकीकत से कोसों दूर

राष्ट्रपति, लोकसभाध्यक्ष और देश की बड़ी पार्टी के शीर्ष पर महिला होने के बावजूद आम महिला की स्थिति में कोई सुधार नहीं है। मध्यप्रदेश की बात करें तो यहां विधानसभा, नगर निगम और पंचायतों में ५० प्रश आरक्षण से विधायक, महापौर, जिला पंचायत, जनपद और ग्राम पंचायतों महिलाएं अध्यक्ष और सरपंच तो कागज पर बन चुकी हैं, लेकिन असल में सत्ता उनके पति के रूप में पुरुष के हाथों में ही है। महिलाओं की पुरुषों पर सामाजिक-आर्थिक निर्भरता भी समानता में बाधक है। सामाजिक सुरक्षा और जीवनयापन का अन्य कोई उपाय न होने से हर सितम सहकर भी पति के घर में उसके साथ रहना महिला की मजबूरी होती है। और पुरुष नारी की इस विवशता का भरपूर दोहन-शोषण करता है।

आज हर कोई भारतीय समाज में महिलाओं को समानता की बात करता है, लेकिन जो बातें की जा रही हैं या जिस बात की वकालत की जा रही है, हकीकत उससे काफी अलग है। पुरुष प्रधान भारतीय समाज में सामाजिक-आर्थिक प्रतिबंधों के चलते महिलों हाशिए पर हैं। भारतीय संदर्भ में लैंगिक समानता की बात केवल कागजों पर दिखाई देती है। भारत में लैंगिक समानता एवं महिला सशक्तिकरण की बातें करने वालों के सामने सबसे बड़ी चुनौती और हतोत्साहित करने वाली बात यह है कि महिलाओं की कानूनी स्थिति व समाज में उनकी वास्तविक स्थिति के बीच की गहरी खाई को पाटा कैसे जाए, यह खाई सिर्फ समाज के अंदर ही देखने को नहीं मिलती है।

सत्ता महिलाओं को ५० प्रश आरक्षण से चुने जाकर भी वास्तविक सत्ता पर पुरुषों का डाका

सरकार और न्यायपालिका में भी कमोबेश यही स्थिति देखने को मिलती है। यही सही है कि देश के शीर्ष पद पर आज एक महिला विराजमान है और लोकसभा अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी भी एक महिला के जिम्मे है। यहां तक कि संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन एवं देश के सबसे बड़े राजनीतिक दल की कमान भी एक महिला के ही लाथ में है। लेकिन इन बातों से आम महिलाओं की स्थिति में कोई मदद नहीं मिल पा रही है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्रशासन में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ रहा है, लेकिन यह आज भी न्यूनतम है। सर्वोच्च न्यायालय की ही उदाहरण लें, पिछले कई वर्षों से वहां कोई महिला न्यायाधीश नहीं रही है।

आज भी न्यायाधीश के पद पर सिर्फ दो महिला न्यायमूर्ति विराजमान हैं। यहां तक कि उच्च न्यायालयों में भी महिला न्यायाधीशों की संख्या नगण्य है। हालांकि सभी लोग समान प्रतिनिधित्व की बात करते हैं, लेकिन हकीकत में इसका कोई प्रभाव नजर नहीं आता है। फैसला लेने के लिहाज से महत्वपूर्ण स्थानों में, जिनमें न्यायपालिका भी शामिल है, महिलाओं की भागीदारी किसी नखलिस्तान की तरह है, जिसमें कोई विस्तार नहीं हो रहा।

दहेज निरोधक कानून 1961 से प्रभावी है और इसमें बाद में कड़े संशोधन भी हुए, फिर भी हालात बुरे हैं। दहेज के कारण होने वाली हत्या के मामलों को देखें तो स्थिति में कोई बड़ा परिवर्तन देखने को नहीं मिल रहा। दहेज प्रतिषेध कानून के साथ ही घरेल हिंसा की घटनाओं पर इसका शायद ही

कोई असर देखने को मिलता है। घरेलू हिंसा से जुड़े मामलों में पुलिस में रिपोर्ट कम ही दर्ज कराई जाती है। महिलाओं की पुरुषों पर सामाजिक-आर्थिक निर्भरता इसकी एक बहुत बड़ी वजह है। सामाजिक सुरक्षा और आजीविका के कोई उपाय न होने से हर सितम सहकर भी पति के घर में रहना उनकी विवशता होती है। ज्यादातर मामलों में महिलाओं की पति पर निर्भरता देखने को मिलती है। पति का साथ छूट जाने की स्थिति में उनके पास जीवनयापन का कोई विकल्प नहीं होता। जीवनयापन के लिए पति से पैसा पाने की कानूनी लड़ाई में काफी वक्त बर्बाद हो जाता है।

पूरा का नाम मामला हमारे सामाजिक ताने-बाने से जुड़ा है। समाज में महिलाओं का दर्जा आज भी पुरुषों के बाद और निम्नतर माना जाता है। समाज की तथाकथित हाई सोसायटी में भी स्थिति कमोबेश ऐसी ही है। हाल के दिनों में एक बड़ा परिवर्तन यह देखने को मिला है कि सामाजिक समारोहों में महिलाएं अब पुरुषों के साथ गलबहियां करते हुए ज्यादा नजर आने लगी हैं। विवाह समारोह आदि में धनबल का फूहड़ प्रदर्शन गौर करने वाली बात है, हालांकि दहेज प्रतिषेध कानून और भारतीय दंड संहिता में कई महत्वपूर्ण बदलाव किए गए हैं। मसलन 1980 में एक बड़ा बदलाव यह हुआ कि दहेज लेना और देना दोनों को दंडनीय अपराध घोषित कर दिया गया, लेकिन इससे दहेज लेने और देने की कुरीति पर कोई असर नहीं हुआ, वास्तविकता यह है कि पिछले कुछ दशकों में दहेज की कुरीति सभी धर्मों, जातियों और संप्रदायों में घर कर चुकी है। दहेज के मामले केवल तभी दर्ज कराए जाते हैं, जब विवाह के बाद तनाव हद की सीमा को लांघ गया हो या इसके अलावा दूसरा कोई उपाय न बचा हो।

बलात्कार के मामले को ही लें, बलात्कार की बढ़ती घटनाओं के बावजूद इसके ज्यादातर मामले दर्ज नहीं कराए जाते, क्योंकि मामला दर्ज कराने से लेकर तहकीकात की पूरी प्रक्रिया महिलाओं की गरिमा को काफी कलंकित करने वाली है। जांच के स्तर पर भी महिलाओं को उत्पीड़ित होना पड़ता है। न्यायिक प्रक्रिया भी महिलाओं के पक्ष में मददगार नजर नहीं आती है।

बावजूद इसके उच्चतर न्यायपालिका, जिसमें सर्वोच्च न्यायालय भी शामिल है, ने इसके लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी कर रखे हैं, विशाखा मामले में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी होने के बाद यौन उत्पीड़न के मामलों में कुछ सकारात्मक प्रगति देखने को मिली, लेकिन इतने सालों के बाद सरकार इस मसले पर कोई कानून बना पाने में नाकाम रही है और सर्वोच्च न्यायालय का फैसला आज भी दिशा-निर्देश का काम कर रहा है। जबकि सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट तौर पर यह कह रखा है कि सरकार इस मसले पर एक कारगर विधेयक लाएगी, लेकिन सरकार इसमें नाकाब रही। ये तो बस कुछ दृष्टांत भर हैं।

कानून को लागू करने वाली एजेंसियों के साथ यह प्रतिबद्धता नहीं दिखाई देती है। हाल ही में चर्चित रहा रुचिका राठौड़ मामला तो बस एक उदाहरण है, जिसमें कानून का पालन कराने वाले तंत्र की कमियां उजागर हुई, इस मामले ने एक बार फिर से यह साबित किया कि महिलाएं हमेशा उत्पीड़न ही झेलती हैं और आरोपी बेखौफ होकर घूमता रहता है। केवल इतना ही नहीं रुचिका मामले में एक बेकसूर-मासूम लड़की को आत्महत्या के लिए बाध्य होना पड़ा। और आरोपी कानून का पालन कराने वाली सबसे सक्षम एजेंसी पुलिस महकमे का आला अधिकारी बना दिया गया और तो और उसे राष्ट्रपति पदवी तक से नवाजा गया। यह बेहद दुखद और शर्मनाक बात थी।

आखिर ऐसी स्थिति क्यों है? हम सभी इसके लिए जिम्मेदार हैं। न्याय दिलाने और कानून का पालन कराने वाली यानी दोनों ही एजेंसियां इसके लिए समान रूप से उत्तरदायी हैं. समाज के कायदे-कानून और सामाजिक व्यवहार के बीच की खाई बढ़ती ही जा रही है। कानून तो लागू कर दिया गया है, लेकिन उसका पालन नहीं किया जा रहा है। विधायिका केवल कागज पर कानून लागू करने के बारे में चिंता करती है। वह इसी बात की फिक्र जरा भी नहीं करती कि कानून का पालन उसकी मूल भावना को ध्यान में रखते हुए सही तरीके से किया गया या नहीं। वह इसके पालन में ढिलाई बरतने का सारा कानून लागू करने वाली एजेंसी के मत्थे मढ़कर अपना पल्ला झाड़ लेती है। राजनेताओं को तो बस अपने वोट बैंक की फिक्र रहती है।

जहां तक विधायी सवाल है तो पंचायत एवं जिला परिषदों में महिलाओं के लिए आरक्षण व्यवस्था लागू कर महिला सशक्तिकरण की दिशा में सही कदम उठाए गए हैं, लेकिन महिला आरक्षण बिल का भविष्य राजनीतिक कारणों से अभी भी अधर लटका हुआ है। कई राजनेता पहले से जारी आरक्षण व्यवस्था में ही महिलाओं को आरक्षण की सुविधा देना चाहते हैं। संविधान महिला और पुरुष दोनों के समान अधिकारों की बात करता है, लेकिन वास्तव में ऐसा शायद ही देखने को मिलता है। हम बड़ी बेसब्री से इस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि महिला आरक्षण विधेयक जल्द ही पारित होगा।

हस्ताक्षर बदलो अभियान

मातृभाषा उन्नयन संस्थान व हिन्दीग्राम द्वारा भारतभर में हस्ताक्षर बदलो अभियान चलाया जा रहा हैं, जिसमे जनमानस को हिन्दी में हस्ताक्षर करने के लिए प्रेरित कर शपथपत्र भरवाएँ जा रहे है। हस्ताक्षर व्यक्ति के जीवन की सबसे छोटी इकाई है, और यदि व्यक्ति हिन्दी में हस्ताक्षर करने की शपथ लेता है तो स्वाभाविक तौर पर धीरे-धीरे उसका हिन्दी से प्रेम होना भी स्वाभाविक है। इसी उद्देश्य को लक्ष्य रखकर वर्ष २०२० तक १ करोड़ भारतीयों को अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करने की प्रेरणा देते हुए शपथ दिलवाई जाएगी। वर्तमान में संस्थान द्वारा देश के ६ राज्यों में इस अभियान को प्रारंभ किया जा चुका है और लगभग ५०००० से ज्यादा लोगों ने शपथपत्र भरकर अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करने की शपथ ली हैं। हस्ताक्षर बदलो अभियान से जुड़ने के लिए देश के राजनैतिक, खेल, रंगकर्मी, चलचित्र अभिनेता-अभिनेत्रियाँ, पत्रकार आदि हस्तियों से भी निवेदन किया जा रहा है। इसी तारतम्य में कई राज्यों में कार्य चल रहा है।

भाषा सारथी बनें

क्या आप 'भाषा सारथी' बनना चाहते हैं? क्योंकि,

- आज हिन्दी को विश्वस्तर पर पहचान दिलाने के लिए हमें हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना होगा।
- हस्ताक्षर बदलो अभियान को अपने क्षेत्र में संचालित एवं प्रचारित करना होगा।
- हिन्दी लेखन करने वाले साथियों को रोजगार दिलवाने में मदद करनी होगी।
- हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए उसे बाजार मूलक भाषा बनानी होगी।
- हिन्दी साहित्य को आमजन तक पहुँचाना होगा।
- हिन्दी के प्रचार हेतु प्रतियोगिताएं, कार्यक्रम आदि का संचालन करना होगा।
- हिन्दी भाषियों की मदद करना होगी।
- हिन्दी ग्राम सभा का आयोजन करना।
- हिन्दी रथ का अपने क्षेत्र में संयोजन करना।
- कार्ययोजना बनाकर लोगो को हिन्दी में हस्ताक्षर करने हेतु प्रेरित करना।

और भी बहुत सी गतिविधियाँ हैं, जो हिन्दी के लिए करनी होगी, यदि आप जुड़कर हिन्दी को आगे लाना चाहते है तो आज ही जुड़े।

सहयोगी इकाईयाँ

मातृभाषा उन्नयन संस्थान — www.matrubhasha.org

मातृभाषा — www.matrubhashaa.com

अन्तरा शब्दशक्ति — www.antrashabdshakti.com

साहित्यकार कोश — www.sahityakarkosh.com

वादीज़ — www.wadieshindi.com

हस्ताक्षर बदलो अभियान

प्रतिज्ञा पत्र

मैं,.....प्रतिज्ञा लेता/लेती हूँ कि आज से राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए, राष्ट्र की एकता और अखंडता के हित में स्वयं को समर्पित करते हुए भारतीय संस्कृति और सभ्यता के सम्मान और सुरक्षा हेतु जीवनपर्यन्त तत्पर रहूंगा/रहूंगी। भारत माता और मातृभाषा हिन्दी के सम्मान को सर्वोपरि रखकर अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करूँगा/करुँगी।

मैं हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा का सम्मान दिलाने हेतु आरम्भ किये गए महायज्ञ 'हस्ताक्षर बदलो अभियान' में सतत सहभागी रहूंगा/रहूंगी।

भवदीय,
हस्ताक्षर : .....
नाम : .....
पिता का नाम :.....
पता:.....
.....
संपर्क:.....
अणुडाक (ईमेल):.....

मातृभाषा उन्नयन संस्थान
www.matrubhasha.org

हिन्दी ग्राम
www.hindigram.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

मातृभाषा.कॉम
www.matrubhashaa.com

कार्यालय -
एस-२०७, इंदौर प्रेस क्लब, म. गां. मार्ग, इंदौर
(मध्यप्रदेश) ४५२००१
संपर्क: (का.) ०७३१-४९७७४५५, (दू.) ७०६७४५५४५५
अणुडाक- hindigramweb@gmail.com
अंतरताना- www.matrubhasha.org

भाषा सारथी बनाने के लिए मिस काल करें व अपना परिचय व्हाट्सअप करें

९६६ ९८ ९६६९३
९६६ ९८ ९६६९३

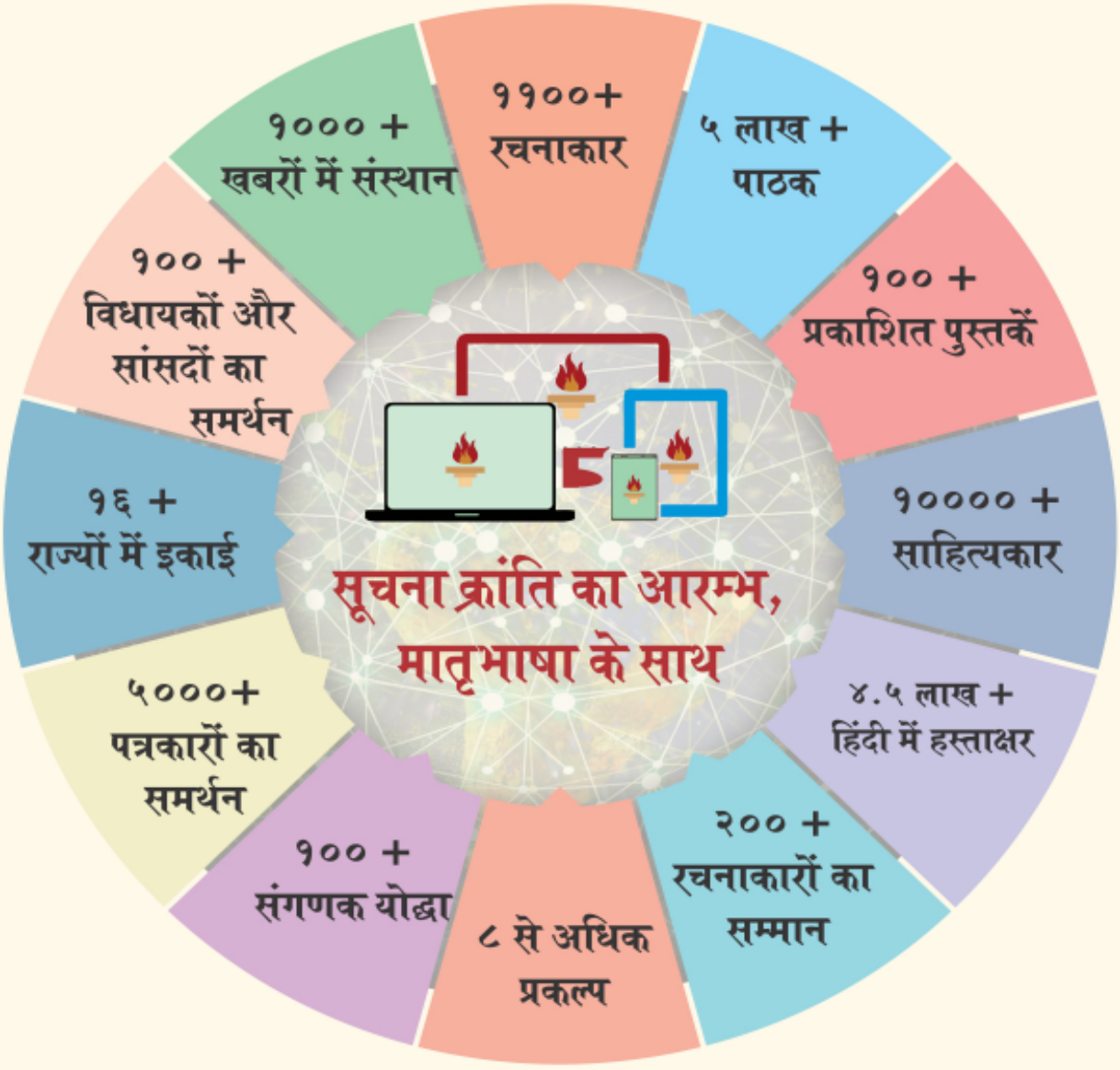

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhasha.org
११००+ रचनाकार
५ लाख + पाठक
१०० + प्रकाशित पुस्तकें
१०००० + साहित्यकार
४.५ लाख + हिंदी में हस्ताक्षर
२०० + रचनाकारों का सम्मान
८ से अधिक प्रकल्प
१०० + संगणक योद्धा
५०००+ पत्रकारों का समर्थन
१६ + राज्यों में इकाई
१०० + विधायकों और सांसदों का समर्थन
१००० + खबरों में संस्थान
सूचना क्रांति का आरम्भ, मातृभाषा के साथ
हिन्दी में हस्ताक्षर करें, राजभाषा से राष्ट्रभाषा की ओर बढ़ें
मातृभाषा.कॉम
www.matrubhashaa.com
हिन्दीग्राम
भाषा समन्वयक
www.hindigram.com
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
साहित्यकार कोश
www.sahityakarkosh.com

खोजें अपने पाठक

१६ पृष्ठ या ३२ पृष्ठ की पुस्तिकाओं से

जी हाँ, वर्तमान दौर में हिंदी के रचनाकारों की समस्या होती है कि उनकी किताबें बिकती नहीं, प्रकाशक भी इसलिए नवांकुरों को प्रकाशित नहीं करते क्योंकि प्रकाशक को भी विक्रय न होने का भय रहता है। ऐसे स्थिति में नवांकुर कैसे खोजे अपने पाठक ?
अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन लाया है अद्भुत विकल्प-मात्र १६ या ३२ पृष्ठ में आपकी रचनाएँ आई एस बी एन (ISBN) क्रमांक के साथ ई-बुक बनवाये, कम प्रतियाँ प्रकाशित करवाएँ और अपने पाठक स्वयं खोजे। जो पाठक की जेब के लिए बोझिल नहीं होगी, और जब आपके पाठकों को आपका लेखन पसंद आएगा तो वे आपकी पुस्तकें भी खरीद कर पढ़ेंगे और इससे आय भी होगी।

- आई एस बी एन
- पाठशोधन
- आवरण अभिकल्प
- ई-बुक
- पुस्तक विमोचन
- प्रचार प्रसार

संपर्क करें
डॉ. प्रीति समकित सुराना
+91- 90094 65259 | +91- 94247 65259
antrashabdshakti@gmail.com
www.antrashabdshakti.com

सेन्स समूह का उपक्रम
अन्तरा शब्दशक्ति